

४१ द्वार हुड़का दियुक्ताकय द्वाश्रीकि

श्री गनसारादि पूर्व मुस्तिकरि उत्तराप्तिव शा
श्रीदडकादिक (४२) द्वारा तथा जावाविचार

नवतत्वादि वोद्धस्तग्रह

लखेली पुराणी प्रेत उपरथी तत्त्वजिज्ञासु सज्जनोत्ता उपयोगार्थ

सशोधक सद्गुणानुरागी मुनिराज श्री श्रीमृश्च००६

श्री कर्पूरविजयजी महाराज साहेब

तपगच्छना पुज्यपाद गुरुणीजी महाराज श्री श्री १००८

श्री केशरथीजीना शिष्या गुरुणीजी महाराज

श्री मगनथ्रीजी मानथ्रीजीना सङ्कुपदेशयी

मारवाड देशना शिरोही इलाकाना चलदूट गामना रहेवाशी

शा. रायचद कृष्णाजीना स्मरणार्थ एमना पुन दिराचद तथा

भूरमल तरफथी साधु सार्वनिते तथा जाहेर सस्याने भेट

छपानी प्रसिद्ध करनार

शा शिवनाथ खुवाजी-जैन पुस्तकालय

(१) चेताल घेठ नवर ४९-पुनासिद्धी

(२) मुकाम जावाल निलहा सीरोही-देश मारवाड

बाटृति पहेली-पत १०००

सवत १९७३-वीर सवत २४८३-सन १९१७ शके १८३९

किं. माचा पुढानी ४ आता. पाळा पुढानी ७ आना

पुस्तक भेट या फिरतथी मगावनरे पृष्ठ २ उपर लखेली सुचना
लखार्दा राखवी

पुस्तक भेट अथवा किमतथी मंगावनारने सुचना-

१ कोइ पण साधु साध्वीने पुस्तकनो खप होय तेने प्रसिद्ध कर्ता पासेथी पोष्ट तथा पेर्किंग खर्च वास्ते वे आनानी टीकीटो कोइ गृहस्थ द्वारा मोकली मंगावी लेबुँ.

२ कोइ साधु साध्वीने भेट तरीके एक नकल मब्से. एकथी वधारे मंगावनारे पुस्तकनी कीमत अने पोष्ट पेर्किंग खर्च मोकली मंगावबुँ.

३ साधु साध्वीए पोताना समुदायबुँ (संघाडानुँ) तेमज पोताना बडेरा गुरुबुँ नाम पुस्तक मंगावती वर्खते अवश्य लखबुँ. अने एक नकलथी वधारे नकल भेट तरीके मंगाववी नही.

४ अमने खात्री पडया वगर भेट तरीके पुस्तक मोकलाशे नही.

५ भेट पुस्तक मंगावनारे पोष्ट पेर्किंग खर्चनी टीकीटो अगाउ मोकलवी. कीमतथी पण आठ आना सुदी मंगावनारे टीकीटो अगाउ मोकलवी. एटलां वास्ते वी० पी० करवामां आवशे नही. वधारे किमतना मंगावनारे पोष्ट विगेरे खर्च वास्ते आठ आना अगाउ मोकलवा ते बाद करी वाकी रहेला किमतनुँ वी. पी. करवामां आवशे.

६ पोतानुँ चोकस सरनामुँ नाम गाम पोस्ट जिल्हा विगेरे शुद्ध शास्त्री अथवा गुजराती लीपीमां लखबुँ.

७ जुवाप मंगावनारे साथे टीकीट अथवा रीपलाय कार्ड मोकलबुँ. ते शिवाय कोइने जुवाप आपवामां आवशे नही.

शिवनाथ लुंबाजी-जैन पुस्तकालय.

(१) वेताल घेट नंबर ४९-पुनासिटी

असदावाद-ढाकवा गेट पासे आवेला शान्तिविजय प्रिन्टिंग प्रेसमां

• डेश्वरलाल केशवलाल वकील अने माणेकलाल माववजीए छाप्युँ.

प्रस्तापना-

जीवविचार, नवतत्व, दड़कादिक प्रकरण ग्रंथो मध्यम गोरखी काहवानी रुढ़ि आपणामा प्रचालित छे गङ्गा वय के जेमा तेना अर्थ ने ग्रहण करता के विचारवानी शक्ति न होय तेमा तेम ऊरवानी पद्धति कोड रीते ठीक लेखी शक्ताय, परतु योग्य वये तो तेना अर्थ-रहस्यने अवधारवायीज तेनी सार्थकता थद शके अत्रापि पर्यत ए रुढ़िने अनुसरीने के गतानुगतिकषणे मोटी उमर के जेमा अर्थ ग्रहण ऊरवानी अने तेनु मनन ऊरवानी शक्ति मास थयेली होय ते तेमा पण पूर्वनी रुढ़िनेज भनुसरी मोटे भागे प्रकरणोने कठाय करीनेज सतोप मानवामा आवे तो ते व्याजरी न लेखाय अर्थग्रहण शक्ति-वाली वयमा पण बाल वय जेवी चेष्टा करी विमाय ते सहन न करी शकाय एवी बीना छे, तेथी तेवी वयमातो खाम करीने उक्त प्रकरणोनु रहस्य सारी रीते (मुस्पष्ट) समजीने अवशारी शकाय एमज थवु जोइये तेम छता आपणी आधुनिक समाज तरफ अलोकन करी जोइये तो तेमानो यहोझो भाग पूर्वनी रुढ़िने अनुसर-वामान, पछी गमे ते शुभ हेतुनेज अबलपीने प्रचलीत यद्य होय ते तरफ ओछी दरवार राखीने, सतोप पङ्कड़तो जणाय ते हे आ

मूचना—आजकाल जीवविचारात्मिक प्रकरण ग्रंथो भगवा पा-उल पुष्कर काळ क्षेप तथा परिश्रम लेता छता तेनु रहस्य सर ज्ञान घेयले ऊरता पूर्ती ऊरजाली खापीयी खेड़सारस परिगम आवेते ते जोइ तेमा निशानामारपे भामा प्रयत्न कर्योछे तेवह

बुद्धिवाद या हेतुवादना जयानामां एवीं गतानुगतिकता मात्रने बळ-
गी रहेवाथी अधिक लाभ मेलवी शकाय तेप नथी।

तेथी जे कंइ प्रनिक्रमण आवश्यकादि सूत्रो तथा प्रकरणादिकनुं
पठन पाठन कराय ते सरहस्य समजी विद्यार्थी वर्गने समजाववा
अने ते सारी रीते तेना गळे उत्तारवा प्रयत्न करवानी खास जहर छे।
एम थाय तोज ते ते आवश्यक सूत्र, प्रकरणादिकनो वोध सरल थाय
अने तेथी तेनो असल हेतु पार पडे; श्रद्धानी शुद्धि-निर्मलता थाय
तेमज हेय उपादेय (तजवा आदरवा योग्य) नुं यथार्थ भान यवाथी
आत्मामां विवेककला जागे अने रुहुं चारित्र बळ प्राप्त करवानुं सुलभ
थाय, एटले सद्वर्तन-सदाचारनुं सेवन करवा सावधान यवाय। जे
पवित्र आशयथी सूत्रकार तेमज प्रकरणादिक ग्रंथकार महाशयोए
उक्तम सूत्र तथा प्रकरणादिक रची आपणा उपर अमाप उपगार क-
रेलो छे ते आशय आपणे सिद्ध करवोज होय तो जेम वने तेम
अधिकाधिक काळजीथी तेनो सामान्य-विषेष अर्थ जाणवा उनेतेनुं
मनन करवा अने तेम करी तेमांथी साररूप तत्त्व आदरवा आपणे
अवश्य प्रयत्न करवोज जोइये; नहि तो पोपट मांहेना रामनी पेटे
आपणे पण शुक्लानी वनवाना; अने आपणे व्यर्थ काळक्षेप कर-
वाना। एम न थवा पामे अने आपणे सम्यग् (यथार्थ तत्त्व) ज्ञान
प्राप्त करी सुश्रद्धाल्ल तथा सदाचार संपन्न वनीये एटला माटे उक्त
मूत्र तथा प्रकरणादिकने तेना रहस्य साथे गुरुगम्य समजवा अपणे
पूर्ण काळजी राखवी जोइये। एवाज शुभ आशयथी दंडकादिक(४१)
द्वार संग्रह सविस्तर तथा जीवविचार तथा नवतत्त्वना वेलनो पण

सक्षेपथी आ ग्रथमा समावेश करवामां आवेल छे। “ शुभे यथाशक्ति यतनीयम् ” ए न्याये आ ग्रथ योजनमा जे उत्तम करवामा आवेल त्ते तेनी सार्थकता कर्वी ए तेना अभ्यासी जीङ्गामु जनोनु काम त्ते परतु जो विनय, गहुमान पूर्वक आत्मार्थीपणे तेनो अभ्यास करवामां आवशे तो आवा शुभवोध दायक ग्रथमार्थी भव्यजनोने घणु जाणवानु(ज्ञान) प्रतीतिरूप करवानु (सम्यकत्व) अने विवेकपूर्वक त्याग-ग्रहण करवानु (चारित्र) ए पञ्चित्र रत्नत्रयी प्राप्त करवानु वनी शक्तिः, अथवा एवा पवित्र आशययीज सहु कोइ, आत्मार्थीं जनोए आवा ग्रथमा प्रवेश करवो जोइए दडकादिमद्वार विषय वहु विस्तारथी लर्चयामा आवेल त्ते अने जीवविचार तथा नवतत्वना लुटा धोल उद्धरिने सक्षेपथी पण मुद्रासर कहेवामां आवेला छे तेनो जो खरा जीङ्गामु भावे अभ्यास करवामां आवशे तो तेथी भ्रान्ति रहित शानादिक अभीष्ट फलनी प्राप्ति यइ शक्तिः. अत्र प्रसगोपात जणावदु उचित त्ते के छती बुद्धिए सदृष्टिग्राथी वचित रहेतु एना जेतु खेदकारक शु ? हसनी पेडे विवेकर्थी तत्त्वात्त्वनो विचार करी तेमार्थी सारतत्त्व मेझ्वी लेबु एज(बुद्धें फल तत्त्वविचारणच, देहस्यसारवत धारणच, वित्तस्य सार किलपात्र दान, वाच, फल प्रीतिकर नरराणाम् ११) बुद्धि पाम्या नु सरस फल छे विषय, कपाय, निद्रा विरुद्धादिक प्रमाण आचरण, तजी आ त्माना एकान्त हित माटे सर्वज्ञोक्त उत्तम प्रत नियमो अगीकारकरीने तेने यथार्थीते पाठ्वा एज आअमृल्य मानवडे धाम्यानु फब्ब छे. जीवनी जहाता दूर थाय बने निर्मल ज्ञान भ्रान्त प्रगट थाय एवा मुद्रर केऽन्वणी खानोमा न्यायोपार्जित द्रव्यनो व्यय करवो

एज लक्ष्यी पाम्यानुं सार्थक छे. तेमज प्राणीओनुं मन प्रसन्न थाय
 अने तेमनुं हित पण थाय एबुं समयोचित सत्य वचन बोलबुं एज
 वाचा पाम्यानुं उत्तम फळ छे. स्वपर कल्याण माटे सतत उद्यम
 कर्या करवो, प्रमाद रिपुने वश न थाबुं, विषय आसक्तिथी दूर रहेबुं
 अने सद्भाग्य योगे प्राप्त थयेली सकळ शुभ सामग्रीने सार्थक करी
 लेखी एज आ दुर्लभ मानव भव पाम्यानुं उत्तमोत्तम फळ समजवानुं छे,
 श्रीमान् हरिभद्र सूरीश्वर कहे छे के (परहित चिन्ता मैत्री, परदुःख
 विनाशिनी तथा कस्णा; परदुःख तुष्टि मुदिता, परदोषो पेक्षण मु-
 पेक्षा ॥ १ ॥ घोडशके.) मैत्री, मुदिता, करुणा अने माध्यस्थ्य ए
 चार उत्तम भावना रूप रसायणनुं निरंतर सेवन करबुं. प्राणी मात्र
 उपर समान भाव राखी तेमनुं हित चिन्तवन करबुं ते मैत्री
 तेमने सुख समृद्धिवंत अथवा सद्गुणशाळी देखी दीलमां प्रमुदित
 थाबुं ते मुदिता या प्रमोद. तेमांनां कोइने दीन दुःखी देखी
 तेमनुं दुःख दूर करवा तन मन धनथी प्रयत्नशील वनबुं ते (करुणा)
 अने अति निर्दय-कठोर परिणामी पापी प्राणी उपर पण रागद्वेष
 तजी, तेने कर्मवश समजी समंभावे रहेबुं ते माध्यस्थ्य भाव अति
 लाभदायक समजवो. उक्त भावना सहितज जे शुभ करणी करवामां
 आवे तेज जीवने कल्याणकारी नीविडे छे. ते वगरनी कराती सधकी
 करणी व्यर्थ क्लेश-कष्टरूप थवा पामे छे. ए मुद्दानी वातने खुब
 लक्षमां राखी सुझ भाइ ब्हेनोए. एक क्षणमात्र पण प्रमाद नहि करतां
 उक्त उत्तम भावना रसायणनुं खास सेवन करबुं के जेथी स्वपरनुं
 अवश्य कल्याण थवा पामे. ज्ञानी कहे छे के छते काने जे हितवचन

न साभके ते वधिर—हेरा छे, छनी जीभे हितवचन न घदे ते मूरु—
मुगा ठे अने उत्ती आखे अमार्य करे ते अथ छे. तत्त्वोध पाम्यानु
एज उत्तम फल छे के दु खनो मार्ग त्यजी मुखनोज मार्ग स्वीं-
कारवो. शतिशम्.

सप्त १९७३] लेसक,

अशाढ सुद १ बुधवार] सदगुणानुगगी कर्पूरविजयजी
तारीख २० माहे जुन सन १९१७] मु० नवसारी. (जिल्हा मुरत)

वे वोल

आ पुस्तक वाहार पाठ्वानो हेतु एवा प्रकारनो छे के जीव
विचार नवतत्त्व दडक विगेरे प्रकरणो आपणा विद्वान पूर्वाचार्योंये
माकृत (मागधी) भाषामा रची तेमा उत्तम प्रकारे द्रायानुयोग
प्रतिपादन करेल छे परतु तेजु यथार्थ ज्ञान माकृत (मागधी) तेमज
सम्कृत भाषाना पठन शिजाय थऱु मुस्तेल छे तेटला वास्ते आपणा
अर्वाचीन महात्माओण गाल जीरोने उक्त प्रकरणोनो भावार्थ सरल
भाषामा गश्रहपे सफलित करी आपणा आधुनिक समाजना उपर
सारो उपगार करेल छे. वकी मारवाड तेमज गुजरात रिभागमां
अने महाराष्ट्र जेवा मातमा आ ग्रथनो सारो उपयोग थशे एम समजी
अमोण आ ग्रथ छपावी वहार पाठ्वा प्रयत्न करेल छे.

आ ग्रथनु काम चालता शात मूर्ति मुनिराजश्री श्री १००८
श्री हृष्णचट्टनीना शिष्य सदगुणानुरागी मुनिराजश्री कर्पूरविजयजी
माझाराज साहेबे पालीताणा (सिद्धुक्षेत्र) पी घलतोवन्वत पत्रव्य

व्याख्याती जे जे योग्य सलाह आपी छे अने फारमो छपाया पछी
तपासी जे जे भुलो बतावीं छे ते वावत उक्त मुनिमाहाराजनो आ
स्थले उपकार मानवामां आवे छे.

आ पुस्तक छपाया पछी एना वधा फारमो वाची सुधारवामां
तेमज वीजी पण योग्य सलाह न्यायांभोनिधि श्री श्री १००८ श्री मद्वि-
जयानंद सूरीश्वरजी (भात्मारामजी) ना प्रशिष्य परमोपकारी मुनि-
राज श्री राजविजयजी माहाराज साहेबे पुनामां आपेली छे एमनो
पण आ स्थले उपकार मानवामां आवे छे.

तपगच्छना पूज्यपाद गुरुणीजी माहाराज श्री श्री १००८ श्री
सौभाग्य श्रीजीना शिष्या श्री केशरश्रीजी थड्गया, तेमना शिष्या
परमोपकारी सद्गुर्म परायण श्री मगनश्रीजी माहाराज लगभग ३५
थी वधारे वर्षना दीक्षीत छें. एमणे दीक्षा लीथा पछी पोताना पावित्र
चारित्र बडे घणा ठेकाणे विचरी जनसमुदाय तेमज विशेषे करी स्त्री
वर्ग उपर महान उपगार करेल छे. हाल एमनी वृद्धावस्था (७० वर्ष)
थवाथी तेमज आंखे अटकी पडवाथी हाल सात आठ वर्ष, थया
मारवाड देशमां शिरोही इलाकाना जावाळ - गाममां वीराजे
छे. अने त्यां पण सदुपदेश आपी घणो सुधारो कर्यो छे.
उक्त गुरुणीजी माहाराज श्री मगनश्रीजी अने तेमना शिष्या
मानश्रीजी, रूपश्रीजी, चतुरश्रीजी विगेरेनो सदहेतु एवा प्रकारनो छें
के आपेणा समाजमां नाहानी वयनी वाळाओ तेमज स्त्रीजनो आवा
प्रकरणोनो भावार्थ समजी तच्चिन्नान संपादन करी पोतानो मनुष्ये
भव सफल करे. एवा प्रकारनो हेतु होवाथी आ ग्रंथमां सामान्यतः

जीवविचार नवतच्चनो अने विशेषत दडकादिनो भावार्थ दाखल करी पुस्तकरपे गाहार पाडवा विचार यो हाल अपारो मारवाड देशमां बलदृष्ट जानाळ गाममा त्रण च्यार वरस थया जता आवता रहेवानो प्रसग होवाथी उक्त गुरणीजी महाराजे अमने ग्रेणा कर्वाथी आ ग्रथ वाहर पाडेलो छे.

आ ग्रथ उपाववाना राममा मारवाड देशमा शिरोही इलाकाना बलदृष्ट गामना रहीश शा. रायचद रुप्णाजीना स्मरणार्थ एमना शुभखते खरचवा रुढेझी रममाथी स्पीया १०० एक सोनी मदत एमना सुपुन हिराचद तथा भुरम्ले आपी छे अने वारीनो तमाम खर्च श्री पुना निवासी शा भगवानजी भीमाजीनी विधवा भार्या भागुवाईना स्मरणार्थ एमना त्रष्णीनी पुत्री चंपागाईए सदर भागुवाईना द्रव्यमाथी आपेलो छे. तेथी आ ठेकाने उक्त उने जणानो आभार मानवामा आवे छे

हालना समयमा पुस्तको प्रसिद्ध करवानो प्रचार दीवसे दीवसे वधतो जाय छे पण घणा भागे पुस्तको गुजराती टाइपमा प्रसिद्ध थाय छे. तेथी मारवाड, मेसाड, पंजाब, गालवा, दक्षिण महाराष्ट्र विगोरे देशोमा जेओ गुजराती लैपीना जाणकार न होय तेवा लोकोने सदर पुस्तको उपयोगी यता नवी ए कारणयी शास्त्री टाइपमा पुस्तको प्रसिद्ध करानो अपारो प्रयास त्रण च्यार वर्षयी चाले छे अने द्रव्य आपनार सदूप्रदस्थोना सहायथी जाज सुरी आड पुस्तको प्रसिद्ध धड आ नवमु पुस्तक छे तेमा एक पुस्तक गुजराती टाइपनु छे. बाकी आड पुस्तको शास्त्री टाइपमा प्रसिद्ध थपा ते

कोई सद्ग्रहस्थने शुभ खाते खरचवा धारेला रूपीयामांथी आवा
कोइ पुस्तकनो उद्धार करवा इच्छा होय अने ते अमारा मारफत
प्रसिद्ध करावशे तो अमो ए काम घणी खुशी साथे करी आपथुं.

अमारा तरफथी प्रसिद्ध यथेला पुस्तको साधु साध्वी तथा
जाहेर संस्थाने पृष्ठ २ मां लखेला नियमो प्रमाणे पोस्ट खर्च लेइ
भेट मोकलाय छे अने अन्य ग्रहस्थने लखेली किमत अने पोस्ट वि-
गेरे खर्च लेइ मोकलाय छे. पुस्तकनी जे किमत राखी छे ते पडतर
जेटली अथवा तेथी पण ओछी राखी छे. अने पुस्तको वेचाणना
रूपीया आवशे ते पाढां वीजां पुस्तको छपावाना काममां वापरवा-
मां आवशे.

आ पुस्तकमां प्रुफ तपासता वृष्टी दोषथी अथवा प्रेसना दो-
पथी जे कोई भुलो रही तेमां हस्व दीर्घ अनुस्वार विगेरे साधारण
भुलोनु शुद्धिपत्रक नही छपावता फक्त मोहोटी भुलोनु शुद्धिपत्रक
छपाव्युँ छे. ते शुद्धिपत्रक प्रमाणे प्रथम पुस्तकमां सुधारी लेइ पछी
वांचवा भणवानो उपयोग करवा नम्र विनंती छे. ए शिवाय जे कोई
भुलो सज्जनोने जाणवामां आवे ते सुधारी वांचवा विनंती छे. अने
ते भुलो अमने जणाववाथी वीजी आट्ठत्तिना बंखते ते प्रमाणे सुधारी
छापवामां आवशे.

संवत् १९७३ अशाह सुद } शिवनाथ दुंबाजी-जैन पुस्तकालय
५ रविवार तारीख २४ } माहे जुन सन् १९१७ } वेताल-पेठ नंबर ४९-पुना सिदी.

अथ दक्षक द्वार ४५ ती विषयानुक्रमणिका

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
अनुक्रम द्वार चोरोंस दृढ़के कहेवाना परकतालीया बोलना नामनी गाया	१-१३	१५ अशान द्वार.	१०३
२ दृढ़क द्वार.	१३-४७	१६ ट्रिशन द्वार.	१०१-१०३
३ असन द्वार.	४८-५३	१७ दाइ द्वार.	२०३-२०४
४ शरीर द्वार.	५१-६२	१८ योग द्वार.	२०४-२०८
५ अचागाहना द्वार	६२-७४	१९ उपयोग द्वार.	२०६-२१०
६ लेदया द्वार	७५-७७	२० गुणस्थानक द्वार.	२११-१२३
७ इन्द्रिय द्वार.	८८-८९	२१ आहार द्वार.	२२३-१२५
८ समुदयात द्वार.	८८-८९	२२ बाहारनी उनजा द्वार.	२२५-१२६
९ सतयषण द्वार	८८-८९	२३ नीमाहार द्वार	२२७-१२८
१० सस्थान द्वार	८७-९०	२४ जीव-भेद द्वार.	२२८-१३३
११ माण द्वार	९०-९२	२५ वेद द्वार.	१२३-१२७
१२ पर्याप्ति द्वार	९२-९५	२६ कपाप द्वार.	१३७-१३९
१३ योनी द्वार.	९५-९७	२७ सप्ता द्वार.	१३९-१४२
१४ कुलमोरी द्वार	९८	२८ स्त्रकाय रियति द्वार	१४२-१४४
१५ यान द्वार.	१११-११०	२९ निरह कल द्वार.	१४५-१४८

गोलनी अनुक्रमणिका

अनुक्रम	नाम	पट्ट	पट्ट
३२ गति द्वारा.	१५०-१५७	३७ जगाउद्वारा.	१८१-१८२
३३ आगति द्वारा.	१५७-१६३	३८ परिश्रेष्ठ द्वारा.	१८२
३४ संषेदा द्वारा.	१६३-१६९	३९ अख्य चहुलद्वारा.	१८२-१८६
३५ देव द्वारा.	१६९-१७१	४० संज्ञी द्वारा.	१८६-१९१
३६ संजाति द्वारा.	१७१-१८१	४१ प्रकर्णि द्वारा.	१९१-१९८

जीव विचारना गोलनी अनुक्रमणिका।

अनुक्रम.

१ जीवविचारना छुटा बोल १ थी ६८

नवतत्वना छुटा बोलनी अनुक्रमणिका,

१ नवतत्वना भेदभूत वर्णन.	२०१ थी २११	६ आश्रवतत्वत्तुं स्वरूप.	२३६ "	२४०
२ जावतत्वत्तुं स्वरूप.	२१२ "	७ संवरतत्वत्तुं स्वरूप.	२४० "	२५१
३ अजीवतत्वत्तुं स्वरूप.	२१५ "	८ निर्जरातत्वत्तुं स्वरूप.	२५१ "	२५२
४ पुण्यतत्वत्तुं स्वरूप.	२१७ "	९ वंयतत्वत्तुं स्वरूप.	२५२ "	२५३
५ पापतत्वत्तुं स्वरूप.	२२४ "	१० मोक्षतत्वत्तुं स्वरूप.	२५३ "	२५६

पृष्ठ
२५

गुण्डि पत्रक

गुण्डि	पृष्ठ	लोटी	अशुद्ध	शुद्ध
गुण्डि	६	११	(रेपा)	(रेपा)
शरीर	७	८	रस	
लेसोंदिअ	११	१५	धीमेलो	
काळओ	१२	२	पचेदिय ते	
सरखा	१२	११२२	फलयाणा के कलयाण रा-	१०
सखा			दिके.	
सखा	१२	१६	सहसरा	
काळओ	१४	६	जोजनना	
व्याख्या	१५	"	धनवान	
दाटि	१५	"	तेवि	नीचे
दारोने	१८	"		रोलओ
यस्मिन्	१५	"		-
व्याख्या	१८	"		रोरक
सिला	१८	"		
मूळ छ भेद	१८	"		
हरभरी	१८	"		
काय ते	१८	"		
कायने	१८	"		

पांडि छे,	समभूतला	हजार	विकिण	ग्रेवेयक	धनुष्य	अचिरति	माँ	तो	द्रेयदिष्य ते	अख्यंतरप	लगे एक लोलगएक	जेपक	श्वसो	हाचार्थी	हेतेतु नाम	पर्यासि कहेहाय छे,
पांडि	संभूतला	जहार	र्दार्णि	ग्रेवयक	धनुष्य	अचिरति	माँ	तो	द्रेयदिष्य ते	अख्यंतरप	लगे एक लोलगएक	जेपक	श्वसो	हाचार्थी	हेतेतु नाम	पर्यासि कहेहाय छे,
३२	१५	३	१२	४०	३१४	३	१६	८	११	१२	११	१४	१४	१२	१३	पर्यासि कहेहाय छे,
३२	३१	४	१२	४१	३१४	४	१६	५२	१५	१६	१६	१६	१४	१४	१३	पर्यासि कहेहाय छे,
सीमता	धनोदाधि	ध	शक्करा	धनोदाधि	अलोक	पूर्वाक	तमः पभा	"	७५	११	१२	१२	१४	१२	१३	पर्यासि कहेहाय छे,
सीमता	धनोदाधि	ध	शक्करा	धनोदाधि	अलोक	पूर्वाक	तमः पभा	"	७५	११	१२	१२	१४	१२	१३	पर्यासि कहेहाय छे,
१६	१२	५	८	१२	१२	२	५	५	१५	१२	१२	१२	१२	१२	१३	पर्यासि कहेहाय छे,
१७	"	"	"	१७	१२	२	५	५	१५	१२	१२	१२	१२	१२	१३	पर्यासि कहेहाय छे,
१८	"	"	"	१९	१२	२	५	५	१५	१२	१२	१२	१२	१२	१३	पर्यासि कहेहाय छे,
१९	"	"	"	२३	२४	२	५	५	१५	१२	१२	१२	१२	१२	१३	पर्यासि कहेहाय छे,
२०	"	"	"	२४	२४	२	५	५	१५	१२	१२	१२	१२	१२	१३	पर्यासि कहेहाय छे,

१२५	१३४	३	११६	२००	२२२	११३	११३	११३	११३	११३	११३	११३	११३	११३	११३	११३	११३	११३	११३	११३
मन	जीवने	जारे	जाणे	चार	देवे	जीवने घर्मनी	सारा	पोगनी	निरपराय	नवकारसी	नवकारसी नमुल	पहे पण	पहे के	तेयी	बाहारकर	केळी	फार्मण	एक	आहार	
१७	१३	३	१६	२	१२	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
१२५	१३०	३	१२६	२	१३०	२	१३०	३	१३३	२	१३६	१३७	१३७	१३८	१३९	१४१	१४२	१४२	१४३	१४५
माटे	वरसयी	कमा	छाये	छाये	नमुसक	चीचारी	लंटी (फाट)	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार
माटे देवोने	वरसयी उपर	कमा	छाये	छाये	नमुसक	चीचारी	लंटी (फाट)	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार	वारनार

क्षपक	दुषित
क्षयक	दुशात
अपकाय	अपकाय
पूत्र	पूत्र
वधते	वधते
	गाडला

१७५	४
१७६	६
१९१	७
२०५	५
२३०	१४

सोल	एकोतेर
वांशु	वांशु
आपे	आपे
उपरना	उपरना
देवनी	देवनी

१५२	६
१६२	१११
१६४	१३
१६४	४
१६७	२७
१७०	५



श्री सर्वज्ञाय नमः

अथ श्री दंडकादिक द्वारा लीख्यते.

—१—

॥ गाथा ॥

दम्भ जुवण शरीर उगाहणा खेसेंदिअ समुच्छाया
मध्यण संघाण पाणा, पञ्जति योनी कुखकोमी ॥१॥
नाणान्नाण दसण, दिठि जोगोवउग गुण गणा
आहार इहाहोरे किमाहाराज जीथ जेया ॥ २ ॥
वेअ कसाय सत्रा, य कायरिइ विरहकावउ चेव
चवणोववाय मरत्ता, गइ आगइ सपया देव ॥३॥
मज्या जराउ परि-गह थप्प वहु सन्निय उचाउ
दाराइ इग चत्ता, सरणथ्यं मंगडे इथ्य ॥ ४ ॥

१ दम्भ २ जुवन ३ शरीर ४ अवगाहना ५ सेव्या

६ इंडिय ७ समुद्घात ८ संघयण ९ संस्थान १० प्राण ११ पर्याप्ति १२ योनी १३ कुल कोकी १४ ज्ञान १५ अज्ञान १६ दर्शन १७ ऊषि १८ जोग १९ उपयोग २० गुणराणा २१ आहार २२ आहारनी इवा २३ किमाहार २४ जीवन्नेद २५ वेद २६ कथाय २७ संज्ञा २८ स्वकाय स्थिति २९ विरहकाळ ३० चवन संख्या ३१ उपजवानी संख्या ३२ गति ३३ आगति ३४ संपदा ३५ देवद्वार ३६ संजति ३७ जराऊ ३८ परिग्रह ३९ अद्वय वहुत्व ४० संज्ञी अने वळी ४१ प्रकीर्ण विगेरे एकतालीस छारोना संज्ञारवाना अर्थे अहीं संग्रह करीएडीए.

अथ पहेंदुं दंमक धार प्रांगः

दंमयते जीवा यस्मिन् स दंमकः—जीवो जेने विषे दंमाय डे तेने दंमक कहीए. ए दंमक चोवीश डे के जेमां सर्व संसारी जीवो परिग्रमण करे डे. ते दंमक ना नाम तथा वाख्या निचे प्रमाणे.

प्रथम नारकीनो एक दंमकः—नारकी एटले अशुन कर्मादयवंत जीवोनुं वसवुं डे जेमां एवुं जे स्था-

नक ते नारकी कहीए, ते नारकी पृथ्वीना ज्ञेटे क
रीने सात रे तेना नाम १ घमा २ वसा ३ सेला० ४
अजणा ५ रिठा ६ मधा ७ माधवति

दश चुवनपतिना दग दमक - चुवन पति - अधो
लोकमा रहेखा जे शास्वता चुवन - घर - तेना पति -
घणी - ते चुवनपति, तेना दगज्ञेदठे, तेनानाम, अमुर
कुमारनिकाय, नागकुमारनिकाय, सुवर्णकुमारनिकाय,
विश्वुतकुमारनिकाय, अग्निकुमारनिकाय, द्वीपकुमार-
निकाय, उदधिकुमारनिकाय, दिशीकुमारनिकाय,
वायुकुमारनिकाय, अने स्तनितकुमारनिकाय एव
अगियार दमक

पृथीकायनो एक दमक - तेना मूळ वे ज्ञेद सू
दम ने वाढर, तेमा सुदम एटले अतिशे जीण - च-
कुयी नहि देखाय एवा सुदमनाम कमोँढयवत
जीवो, के जे आ चौदराजखोकमा सर्व रेकाणे जर्या
रे कोइश्यी रेदाय ज्ञेदाय नहि पर्वतादिमायी - पण
आरपार जाय आवे अग्नियी बळे नहि कोइना उप-
योगमा न आवे एवा अने निरतीशायी जीवो ते मु

क्षम कहेवाय, बादर एटले स्थुल शरीरवाला चक्रुथी
देखी शकाय एवा बादर नाम कर्मोदय वंत, नीयत
स्थानवर्ती अने वीजाथी भेद ज्ञेद आय एवा जीवो
बादर कहेवाय, ते बादर पृथ्वीकायना शुद्ध, बालुका,
मणसिल, शर्करा, सुंहाळी, अने खरपृथ्वी ए मूळ
भे. तथा वीजा स्फटिक रत्न, मणिरत्न, परवासा
हिंगलोक, हक्कताळ, पारो, सोनुं, रुपुं, तांबु, जसत,
शिशु, कथीर, श्वरख, खर्मी, रमची, तूरी माटी,
खारी माटी, सुरमो, सिंधव, संचल, तथा पाषाणनी
सर्व जातीं अने मीठुं विगेरे घणा ज्ञेद बादर पृथ्वी-
कायना भे. ॥ एवं बार दंक ॥

अपकाय--पाणीना जीवो--तेनो एक दंक, तेना
मूळ बे ज्ञेद भे एक सुदम अने वीजो बादर तेमा
सुदम ते पुर्वोक्त रीते जाणवा अने बादर ते ज्ञमीनुं
पाणी,^१ आकाशनुंपाणी,^२ ऊकळनुं,^३ करानुं,^४ ही-
मनु, खोलाघासजपरनुं धुंवरीनुं तथा घनोदंधि अने

१ कुवा अने वावढी वगेरेनुं पाणी. २ नदी तलाव अने सरो-
वरनुं पाणा.

(५)

तनोदधि विगेरेना पर्णी ते सर्व वादर अपकायना
ज्ञेदो जाणवां ॥ एव तेर दंमक ॥

तेऊकाय अग्निना जीवोनो एक दमक तेना सु-
दमने वादर एवा वे ज्ञेद रे, सुदम ते पूर्वोक्त रीते
जाणवा ने वादर ते अगारानोअग्नि ज्वालानो अ-
ग्नि, नरसामयनो अग्नि, उक्तापातनो अग्नि, कणी-
आनो अग्नि, असनी(घसाराथी अग्नि उत्पन थाय
रे ते जेवा के लोडु चकमक अरणी वगेरे घसवाथी
अग्नि पेदा थाय ते), अने विजळी विगेरेवादर अग्नि
कायना ज्ञेदो रे ॥ एवं चौद ॥

वाऊकाय-चायराना जीवोनो एक ढक ते वायु
कायना सुदमने वादर एवा वे ज्ञेद रे तेमा सुदम
ते पूर्वोक्त रीते जाणवा अने वादरते उद्ग्रामक(उचे
चमतो) वायु, उत्कलिक (निचे पमतो) वायु म-
र्खळीक (वटोळीउ) वायु, महा (मोटो-जे आधी
कहेवाय रे ते) वायु, शुद्ध(सुखकारी झीणो) वायु,
गुंज (घुघुवाट करतो) वायु, घनवायु अने तन

वायु वगेरे बादर वायु कायना घणा न्नेदो डे. तेनो
एक दंमक ॥ एवं पंदर ॥

वनस्पतिकाय-ज्ञाड पाखाना जीवोनो एक दंमक
ते वनस्पतिकायना, साधारण अने प्रत्येक एवा वे
न्नेद डे, तेमा साधारणएटखे अनंताजीवोनुं एक श-
रीर होय, ते साधारण वनस्पतिकाय, तेना वे न्नेद,
एक सुहमने बीजो बादर, सुहम वनस्पतिकाय ते
पूर्वोक्त सुहम जीवोना जेवा जाणवा, अने बादर सा-
धारण वनस्पतिकायने जेना सांधा नसो गांगा वगेरे
प्रगट न देखाताहोय ज्ञांगवाथी सरखा ज्ञाग थता
होय, तांतणा (रेशां) विनाना होय अने डेढीने वा-
ववाथी पण उगे एवी सर्व वनस्पति जेवी के सर्व
जातना कुण्णाफळ, कंद, अंकुरा, कुंपळो, पांचवर्णनी
लीब फूल, विलासीना टोप, लीदुं आडु, लीबी हळ-
दर, लीबो कचुरो, मोथ, थेग, थोर, गळो, अने सण
वगेरेना पांदमा तथा कुंवारनुं पातु वगेरे बादर सा-
धारण वनस्पतिकायना घणान्नेदोजाणवा, प्रत्येक
वनस्पतिकाय ते एक शरीरने वीषे एक जीव होय ते

(४)

प्रत्येक वनस्पति काय, तेना फळ, फुल, वाल, काष्ठ,
मूलीआ, पांदका अने बीज ए सर्व प्रत्येक वनस्पति
काय जाणवा ॥ एव १६ दंरुक ॥

विगलेंड्रिय—पांच इडीउंथी उंडी रे इडी जेने
एवा ब्रसजीवो ते विगलेंड्रिय कहेवाय, तेना वेइ-
ड्रीय, तेइड्रीय, अने चौर्हाइड्रीय, एम ब्रएय दंरुक
रे, तेमा वेइड्रीय ते स्पर्श (चामकी) इडी, अने
रश (जीन) इडी ए वे इड्रीय वालाजीव जेवा के
शंख, कोमा, गमोला, जलो, चदनक, अखशिया, ला-
लीया जीवो, मेर (लाककामां थता जीवो) करमी-
आ, पेरा, अने चुमेल विगेरे वेइड्रीय जीव जाणवा
तेनो एक दंरुक, तथा स्पर्श—रस अने घाण (नाक)
ए ब्रएय इडीउंवाला जीवो जेवा के कानखजुरा,
माकण, जुआ, जुलू, लिंखो, कीमीउ, उद्धेहिउ, म-
कोमा, इयलो, धीमेलो, सवा (वालना मूलमा थाय
रे) गींगोमा (कुतरना कान उपर थाय रे ते) इ-
तरमी, गञ्छीआ, चोरकीमा, भाणना कीमा धान्यना
कीमा (धनेरा) कुथुआ, अने गोपालीक वगेरे घणी

जातना तेझंडियजीवो जाणवा, तेनो एक दंरुक, अने स्पर्श-रस-ब्राण अने चक्कु (आँखो) ए चार इंद्रीयवाला जीवो जेवा के विंडी, नमरा, नमरीड़, तीको, मांखीड़, खांस, मछर, कसारी, करोलीआं, ख-मांकडी अने पतंगीआ विगेरे घणीजातना चौ-रींद्रीय जीव डेतेनो एक दंरुक थया ॥

तिर्यच पंचेंड्रिय-तिर्यच-तीर्ड (वांका) चाले, अथवा स्वकर्मोदयथी सर्व दंरुके परित्रमण करे एवा पंचेंड्रिय स्पर्श, रस ब्राण चक्कु अने श्रोत (कान) ए पांचेंड्रियवाला जीवो ते तिर्यच पंचेंड्रिय कहेवाय तेना मूळ पांच नेद डे. ते आ प्रमाणे मांडला-काचबा, ऊँरु, अने सुसुमार विगेरे जखचर, १ गाय, नेश, घोमा, हाथी वगेरे चोपगा, २ नोलीआ, उंदर, खिसकोली वगेरे झुज परी सर्प, ३ सर्प, अजगर वगेरे उर परि सर्प, ४, चकली कागमा कावर पोपट मोर वगेरे रुवांटानी पांखवाला अने चामाचीमीआं वगेरे चामनानी पांखवाला तथा संकोचेली अने वीस्ता-रेली पांखोवाला ते सर्व खेच्चर ५ कहेवाय उपर क-

हेखां जस्तचर, चोपगा, लुजपरि सर्प, उरपरिसर्प अने
खेचर ए पांचे जातना तिर्यच पचेंडिय बल्दी समुर्वीम
अने गर्जज एम वे प्रकारना ठे तेथी पाच ने पाच
दश ज्ञेद तिर्यच पचेंडियना यथा तेनो एक दंकक
॥ एव बीस ॥

मनुष्य—मनुथकी उत्पन्न थयेका ते मनुष्य क-
हीए आ मनुष्य शब्द राज्यादि शब्दनीपेर जाणनो
तेना मुख्य चार ज्ञेद ठे कर्म ज्ञूमिज अकर्म ज्ञूमिज
अतराष्ट्रीपना अने समुर्वीम.

कर्मज्ञूमि—असि(शस्त्र) मसि(मेस) कृपि(खेती)
नो व्यवहार जेमां ठे एवा हेत्रो, ते ५ ज्ञरत, ५ श्वे-
रवृत्त ५ महाविदेह ए पन्नर कर्म ज्ञूमि ठे

अकर्मज्ञूमि—असि मसि अने कृपिनो व्यवहार
जेमा नवी एवा हेत्रो ते ५ हैमवत ५ श्वैरण्यवृत्त
५ हस्तिर्वर्ष ५ रम्यक ५ देवजुहु ५ उत्तरजुहु एम अ-
कर्म ज्ञूमि त्रीस ठे

अनराष्ट्रीप—या जबुष्ट्रीपमा भेल्यी दक्षिण दि-
शाए ज्ञरत हेत्रना ठेने १०० जोजन उचो १०५२ जो-

जेन १७ कला पहोळो अने ४४५३४ जोजन ना आ-
शे लांबो पीळा सोनामय पूर्व पश्चिम लवण समुद्र
पर्यंत चुम्ब हेमवंत नामनो पर्वत ढे, तेना बन्ने ठेका
ने विषे लवण समुद्रमां ७४०० जोजनाथी कांडक अ-
धिक लांबी एवी बब्बे दाढा विदिशीने विषे नीकळी
ढे, ते चारे दाढा उपर सात सात अंतरद्वीपे ते
अंतरद्वीप मांहेला पहेला चार अंतर द्वीप जगती-
थी ३०० जोजन फूर, ३०० जोजनना विस्तारवाळा ढे,
तथा जगतीथी ४०० जोजन फूर, ४०० जोजनना वि-
स्तारवालुं बीजुं अंतरद्वीपनुं चतुष्क ढे, एम सर्वने
विषे १०० जोजननी वृद्धि करतां सातमुं अंतरद्वीपनुं
चतुष्क ५०० जोजन फूर, ५०० जोजनना विस्तारवालुं
ढे एम १७ अंतरद्वीपो थया, तेमजवळी मेरु पर्वतथी
उत्तर दिशाए औरवृत्त केत्रने ठेके हेमवंत सदृश्य
शिखरी पर्वत ढे तेने पण पूर्वोक्त प्रकारे चार दाढाँ
ढे तेमां पूर्वोक्त रीते सात सात अंतरद्वीपो ढे तेथी
ते १७ अंतरद्वीपो अने प्रथमना हेमवंतपर्वतना
१७ अंतरद्वीपो मळी ५६ अंतरद्वीपो थया. तेमां युग

लिया (ज्ञोमखा) वसे रे

उपर कहेला कर्मचूमि अकर्म चूमि अने अंतरम्भीपना मनुष्योना वळी गर्जज अने समुर्विम एवा वद्वे नेद रे गर्जज ते गर्जमां उत्पन्न थायरे, अने समुर्विम ते मनुष्यना (विद्या) मळमूत्र, वरुखा, नाकनोमेल, वमन, पित्त, परु, लोही, वीर्य, शुक्रना सुकायेला पुद्गल, मरुदां, व्रीपुरुपना सयोग, नगरनी खाल, अने सर्व अशुचि छुर्गध मय स्थानोने विषे उत्पन्न थाय रे ॥ एव २१ दंडक ॥

व्यंतर-विविध प्रकारनु अतर ते व्यतर कहिये, व्यतरादिक आश्रय पणाए करीने ठ जेने एट्टेव्यतर, वनांतर अने शैलातरोमां वसे रे, ए स्पष्ट रीते सर्व विज्ञात रे, ते व्यतरो सोळ प्रकारना रे, तेमा पिशाच, चूत, यक्ष, राक्षस, किङ्गर, किंपुरुष, महोरग, अने गधर्व, ए आठ प्रकारना व्यतर रे तथा अणपन्नि, पणपन्नि, एसीवाढी, चूतवाढी, कदीत, महाकदीत, कोहर, अने पतग, ए आठ प्रकारनां वाणव्यतरो रे, ॥ एव २२ दंडक ॥

ज्योतिषि-ज्योतिष्य प्रकाशवाला जे देव ते
ज्योतिषि कहीए. ते चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र अने तारा
ए पांच प्रकारनां रे. तेमां अढीष्ठीप माहेखा पांच
चर रे अने अढीष्ठीप वाहेरना स्थिर रे. एम दश
ज्ञेद यथा तेनो एक दंस्क ॥ एवं ४३ दंस्क ॥

वैमानिक-विशिष्ट पुन्ये करी घणा जीवो यकी
उपज्ञोग आय रे जेनो ते विमान कहीए ते विमा-
नने विषे रहेखा जे देवो ते वैमानिक जाणवा तेना
बे ज्ञेद रे, तेमां एक कद्योत्पन्न अने बीजा कद्या-
तीत. तीहाँ कद्य ते स्थिति, जाति, सामानिकादि
व्यवस्था मर्यादा रे ज्यां अथवा तिर्थंकरना कछ्या-
णादिके मनुष्य लोकने विषे आववानो व्यवहर रे
जेनो तेने कद्योत्पन्न कहीए तेनां नाम सौधर्म देव-
लोक, इशानदेवलोक, सनतकुमारदेवलोक, माहेऽ
देवलोक, ब्रह्मदेवलोक, लांतक देवलोक, महाशुक्र देव-
लोक, सहसारदेवलोक, आणंतदेवलोक, प्राणंत देव-
लोक, आरण्डेवलोक, अने अच्युत देवलोक, एम बार
रे. कद्यातीत-कद्य-स्थिति, जाति, सामानिकादि

व्यवस्थारूप मर्यादाथी अतित-रहीत रे अर्थात् ज्याँ स्वामि, सेवक ज्ञाव नयी ते कट्टपातित कहीए. ते कट्टपातित वळी वे प्रकारे रे १ नव ग्रैवेयक अने श पांच अनुत्तर विमान नवग्रैवेयक-चौंड राज सोकरूप पुरुषाकारना ग्रीवा(गला)ना स्थाने वसवु रे जेनु तेने ग्रैवेयक कहीए ते सुदर्शन, सुप्रतिवद्ध, मनोरम, सर्व जड, विशाल, सुमनस, सोमनस, प्रीयकर, अने आदित्य एम नव प्रकारना रे अनुत्तर-सर्वथो उपर रे विमान जेना ते अनुत्तर कहीए ते विजय, विजयत, जयत, अ-पराजित, अने सर्वार्थसिद्ध, एम पाच प्रकारना अ-नुत्तर विमान रे ॥ एवं २४ दण्ड ॥

अथ श्री वीजो जुवनद्वार.

प्रथम नारकीना जुवननी विविक्षा करवाने माटे साते नारकीना गोष्ठ कहे रे १ रत्नप्रज्ञा २ शर्करा प्रज्ञा ३ वाहुका प्रज्ञा ४ पंक प्रज्ञा ५ धुम प्रज्ञा ६ तम प्रज्ञा ७ तम तम प्रज्ञा

रत्नप्रज्ञा एष्वीने पहेले कांके (वळीये) एटसे पृष्ठीना जाखण्णना अमुक जागे रत्नो घणा रे कहुँ

दे के. ॥ गाथा ॥

तथ्य सहस्रा सोलस, खरकंड पंक वहुल कंडंतु;
चुलसी सहस्राइं, असइ जल वहुल कंडंतु. ॥ १ ॥

अर्थः—ते रत्न प्रज्ञामां पहेलो सोलहजार जो-
जन करण रत्नमय कांक ढे, बीजो चोरासी हजार
जोजनना पंक (कादव) वहुल कांक अने ऐसी ह-
जार जोजननो जल वहुल कांक ढे, एरीते त्रण कांक
ढे, तेमां पहेले कांके रत्न घणा ढे, माटे तेनुं नाम
रत्न प्रज्ञा, बीजी नरक पृथ्वीने विषे कांकरा घणा
होवाथी तेनुं नाम शर्करा प्रज्ञा, त्रीजी नरक पृथ्वीने
विषे वेलु (रेती) घणी होवाथी तेनुं नाम वालुका
प्रज्ञा, चोथी नरक पृथ्वीने विषे कादव घणो होवाथी
तेनुं नाम पंक प्रज्ञा, पांचमी नरक पृथ्वीने विषे धु-
माको घणो होवाथी तेनुं नाम धुम प्रज्ञा, छठी न-
रक पृथ्वीने विषे अंधकार घणो होवाथी तेनुं नाम
तमप्रज्ञा अने सातमी नरक पृथ्वीने विषे घणो घणो
अंधकार होवाथी तेनुं नाम तमनमप्रज्ञा कहेल ढे,
एम साते नरक पृथ्वीनां गुणनिष्पन्न गोत्र जाणवा,

प्रथमनी रत्नप्रज्ञा पृथ्वी—एक लाख एशी हजार
जोजन जामी, असंख्याता हजार जोजन विस्तारवाली
(लांबी पहोळी) अने विस्तारथी त्रण गणीजाझेरी
परिधिए (घेरावे) करीने सहित जालरना आकारे
ठे परिधिने फरता वळीयाकारे ठ जोजन सुधी घ-
नोदधि, सामाचार जोजन सुधी घनवात अने दोढ
जोजन सुधी तनवात ठे, परी अलोक ठे ते नरक
पृथ्वीने नीचे घनवात, तनवात अने आकाशना पींक
अनुक्रमे नीचे नीचे एक वीजाथी असख्यात अस-
रयात जोजनना रहेला ठे एटले घनोदधिथी अस-
ख्यात युणो घनवातनो पींक, घनवातना पींकथो अ-
सख्यात युणो तनवातनो पींक अने तनवातना पींकथी
असख्यात युणो आकाशनो पींक ठे, तेनी नीचे वीजी
नारकी रहेली ठे, हवे ते रत्नप्रज्ञा नरक पृथ्वी एक
लाख एसी हजार जोजननी जे जामी कही ठे तेमाथी
उपर नीचे हजार हजार जोजन काढीए त्यारे वा-
कीनी एक लाख अरथोतेर हजार जोजन पृथ्वी
रही. तेने विषे तेर प्रतर (माल, पारमा) ठे ते नीचे

मुजब डे, १ सीमंतो २ शेरुठे ३ रंज ४ उज्जंत ५
 संचात ६ असंचात ७ विचांत ८ नक्क ए शीत १०
 वक्रान्त ११ अवक्रान्त १२ विकज अने १३ शेरुक
 ते दरेक प्रतर त्रण हजार जोजनना छंचा, असंख्यात
 जोजनना लांबा पहोळा अने अगीयार हजार पांच
 सो ल्यासी जोजन उपर एक जोजनना त्रीजा ज्ञाग
 जेटला अंतरे अंतरे एक बीजाथी नीचे नीचे डे, तेमां
 त्रीस लाख नरकावासा डे, ते वे प्रकारना डे, १ पु-
 ष्पावकीर्ण एटले बुटा फूलनी पेरे ज्यां ल्यां रहेखा डे,
 ते उगणत्रीस लाख पंचाणु हजार पांचसो सक्सर डे,
 २ श्रेणीवंध चार हजार चार सो तेत्रीस डे, एम वंने
 मळी ३००००००० नरकावासा डे, पहेखा सीमता ना-
 मना प्रतरना मध्य ज्ञागमां सीमंत नामनो ईद्धक
 [मूख्य]नरकावासो पीस्ताळीस लाख जोजननो लांबो
 पहोळो डे, अने वाकीना सर्वे नरकावासा संख्याता
 तथा असंख्याता जोजनना लांबा पहोळा डे, तेमां
 नारकीना जीवो रहे डे.

बीजी शर्करा प्रजा नरकपृथ्वी—एक लाख बत्रीस

हजार जोजन जानी, असख्याता हजार जोजन वि-
 स्तारवाली अने विस्तारथी त्रण गणी जाऊरी परि-
 धिए करीने सहित जाखरना आकारे ठे परिधिना
 फरता बळीयाकारे ठे जोजन एक गाउ उपरात गा-
 उना त्रीजाज्ञागसुधी घनोदधि, चार जोजन त्रण
 गाउ सुवी घनबात अने एकजोजन वे गाउ उपरांत
 गाउनात्रीजाज्ञागसुधी तनबात ठे ने ते पठी अ-
 सोक ठे ते नरकपृथ्वी नीचे बीसहजारजोजन घ-
 नोदधिनो पींक ठे तेनी नीचे घनबात, तनबात अने
 आकाशना पींक अनुक्रमे नीचे नीचे एक बीजाथी
 असख्यात असरयात जोजन पूर्वोक्त रीते रहेला ठे
 तेनी नीचे त्रीजी नारकी ठे हवे ते शर्कश प्रज्ञा न-
 रकपृथ्वी एक लाख वत्रीश हजार जोजननी जेजानी
 कही ठे तेमांथी उपर तथा नीचेथी एक एक हजार
 जोजन काढीएत्यारे वाकीनी एक लाख त्रीश हजार
 जोजन पृथ्वी रही तेने विषे अगीयार प्रतर ठे ते
 नीचे मुजब ठे-१ स्तनिक २ स्तनक ३ मणक ४ चणक
 ५ घटू ६ सघटू ७ जीप्ज ८ अवजीप्ज ऐ लोल १०

बोखावत ११ घण्टलोकुक. ते दरेक प्रत्यक्ष त्रिंश हजार जोजनना लंचा असंख्यात जोजनना लांवा पहोळा अने नव हजार सातसो जोजनना अंतरे अंतरे एक बीजाथी नीचे नीचे डे. तेमां पचीसलाखनरकावासा डे, ते बेप्रकारनां डे, १ पुष्पावकीर्ण एटले दुटां फुलनीपेरे ज्यांत्यांरहेलांडे, ते चोवीश लाख सत्ताणुं हजार त्रिंशसो ने पांच ठे अने ४ बीजा श्रेणी-वंध बेहजार बसोपंचाणुंडे, एमवंनेसल्ली ४५००००० नरकावासाडे. तेसर्वनरकावासामां केटलाएक संख्याता अने केटलाक असंख्याता जोजननां लांवापहोळांडे, तेमां नारकीना जीवो रहे डे.

त्रीजीवाबुकाप्रभा—नरकपृथ्वी एकलाख अठावी-सहजार जोजननी जार्दी, असंख्याता जोजननी विस्ता रवाळी अनेविस्तारयी त्रिणगणी ऊझेरी परिधिए करीने सहित ऊबरनां आकारे डे. परिधिनेफरतां बळीयाकारे उजोजनबेगाउउपरांत गाउनात्रणज्ञाग-करीए एवाविज्ञागमुघी धनोदधि पांचजोजनसुधी घ-नवात अने एकजोजनबेगाउउपरांत एकगाउनात्रण

ज्ञागकरीए एवा वेज्ञागसुधीतनवातरे, ने तेपठी अदाके
आवेरे ते नरकपृथ्वीनीनीचे वीशहजार जोजन घनो
दधिनो पींकरे तेनीनीचे घनवात, तनवात अनेआ-
काजनापींक अनुक्रमे नीचेनीचे एक वीजाथी अस-
रयातअसरयातजोजनना पूर्वक्त रीते रहेखारे, अने
तेनीनीचे चोथीनारक पृथ्वी रे, हचे ते बालुकाप्रज्ञा
नरकपृथ्वीएङ्गलासअष्टाधीसहजारजोजननीजे जार्मी
कहीरे तेमा उपरणी तथा नीचेथो एकेकहजारजो-
जनकाटीष त्यार वाकीनी एङ्गलासरभीसहजारजो-
जनपृथ्वी रहो तेने प्रिये नयप्रतररे तेना नाम-तस,
तपिक, तपन, तापन, विदाय, प्रज्ञवित, उज्ज्ञवित सज्ज
वित, अने सप्रज्ञवित, ते दरेकप्रतरत्रणहजार जो
जनना उचा, असरयात जोजनना लवा पहोळा अने
वारहजारत्रणसेपचोतेरजोजनना अतरे अतरे एङ्ग
वीजाथी नीचे नीचे रे तेमा पदरलाख नकापासा
रे ते वेग्रकारनारे, १ पुण्यापकीर्णएट्लेटुटाफुखर्नपिरे
ज्यात्यारहेखा रे, ते चौंड खायश्यष्टाषुहजारपाचसो
ने पदररे अने २ श्रेणीवध एङ्गहजारचारशोनपचाशी

ठे. एम बन्ने मलो १५००००० नरकावासा ठे. ते सर्व नरकावासामां केटलाएक संख्याता तथा केटलाएक असंख्याता जोजननां लांवा पहोळां ठे. तेसां नास-कीना जीवो रहे ठे.

चोथी पंकप्रज्ञा नरकपृथ्वी—एक लाख वीस हजार जोजननी जास्ती, असंख्याता जोजननी विस्तारवाळी अने विस्तारथी त्रण गणी ऊजेरी परिधिएकरीने सहीत ऊबरनां आकारे ठे. परिधिनां फरतां वडी-याकारेसात जोजनसुधीघनोदधि, पांचजोजनने एक गाउघनवात, अनेएकजोजननेत्रणगाउ सुधीतनवात ठे. ने तेपरीअलोकआवेरे. ते नरकपृथ्वीनी नीचे वी-शहजारजोजनघनोदधिनो पाँफ्ठे, तेनीनीचेघनवात, तनवात अनेआकाशनार्पिंक अनुक्रमे नीचेनीचे एक बीजाथी असंख्यात असंख्यात जोजनना पूर्वोक्तरीते रहेलांठे, अने तेनीनीचे पांचमीनरकपृथ्वी ठे. हवे ते पंक प्रज्ञा नरकपृथ्वी जे एक लाख वीश हजार जोजननी जास्ती कही ठे. तेमाथी उपर तथा नीचेयी एकेक हजार जोजन काढीए ल्यारे बाकीनी एक लाख अ-

दार हंजार जोजन पृथ्वी रही, तेने विषे सात प्रतर
 छे तेना नाम,—आर, तार, मार, वर्व, तम, खारुखरु
 अने खरुखरु ते दरेक प्रतर त्रण हंजार जोजनना
 लवा, असख्यातहंजारजोजनना लावा पहोळा, अने
 सोलहंजारएकसोलासठजोजनउपरात एक गाउना
 र ज्ञाग करीए एवा चारज्ञागनाअतरेअतरे एकवी
 जाथी नीचेनीचेठे, तेमा ढगाखाखनरकावासाठे ते
 वेप्रकारनाठे एक पुष्पावकीर्ण एटले दुटाफूखनीपेठे
 ज्यात्यः रहेलाठे, ते नव खाख नवाणुहंजारवसेंत्राणु ठे
 अने बीजा श्रेणीप्रध सातसो नेसात ठे एमए वन्ने
 मल्ही १००००००० नरकावासा ठे ते सर्वनरकावासामा
 केटलाएकसख्याता अने केटलाएक असर गाताजो
 जननां लावापहोळाठे तेमानारकीनाजीबोरहेठे

पाचमी धुमप्रज्ञा नरकपृथ्वी—एकज्ञाखअढार हं-
 जारजोजननीजाकी, असख्याताहंजारजोजननी लावी
 पहोळी (विस्तारवाळी) अने विस्तारथी त्रणगणी
 जाजेरी परिधिएकरीनेसहीतजाखरनाआकारेठे, परि-
 धिनाफरतां वळीयाकारेसात जोजन एकगाऊउपरात

एकगाऊनात्रीजान्नाग सुधी घनोदधि, पांचजोजन अने
वेगाऊसुधी घनवात अने एकजोजनत्रएयगाऊउपरांत
एकगाऊना त्रीजान्नागसुधी तनवात्थे. ने तेपरी अ-
लोकठे. ते नरकपृथ्वीनी नीचे वीशहजारजोजन
घनोदधि नोर्पांकठे, तेनीनीचे घनवात, तनवात अने
आकाशनांर्पांक अनुकमे नीचेनीचे एकवीजाथी असं-
ख्यात असंख्यातजोजनना पूर्वोक्तशीतेरहेखांठे अने
तेनीनीचे ठट्ठीनरकपृथ्वी ठे.

हवे ते धुमश्ना नरकपृथ्वी जे एक लाख अ-
दारहजारजोजननीजास्तीकहीठे. तेमांथी उपर तथा
नीचेद्यी एकक हजार जोजन काढीए त्यारे वा-
कीनी एकलाखसोलहजारजोजन पृथ्वी रही तेने
विषे पांच प्रतर (माल) ठे, तेना नाम—आत, तमस
जस, अंध, अने तिमिस. ते दरेक प्रतरत्रएयहजार
जोजननां उंचा असंख्यात जोजननां लावापहोळां
अने पचीसहजारवसेपचासजोजननां अंतरे अंतरे
एक वीजाथी नीचे नीचे ठे. तेमां त्रएयलाख नरका-
वासाठे, ते वेप्रकारनांठे एकपुष्पावकीर्ण एटले बुटां

फुखनीपेरे ज्यांत्यांरहेलारे ते वे साख नवाणुहजार
 सातसोपात्रीश अने वीजाश्रेणीवध वसेंपांसठरे एम
 चन्नेमली ३००००० नरकावासा रे ते सर्वनरकावासामा
 केटलाएक सरयाता अने केटलाएक असरयाता
 जोजनना सांवा पहोळा रे तेमां नारकीना जीरो रहे रे

रही तमग्ना नरकपृथ्वी-एक साख सोळ हजार
 जोजननीजाकी, असरयाताहजारजोजननी सावी
 पहोळी अने विस्तारथी त्रण्य गणीजाऊरी परिविए
 करीने सहीत जाखरना आकारे रे परिधिनां फरत/
 वळीयाकारे सात जोजन वे गाउ उपरांत एक गा-
 उना त्रण्यज्ञागकरीएएवावेज्ञागसुधी घनोदधि, पाच
 जोजनत्रण्यगाउसुधी घनवात अने एकजोजनत्रण्य
 गाउ उपरांत एकगाउनात्रण ज्ञागकरीएएवा वेज्ञाग
 सुधी तनवातरे ने ते परी अलोकरे ते नरकपृथ्वीनी
 नीचे वीशहजार जोजन घनोदधिनोपीक्के, तेनी नीचे
 घनवात, तन वात, अने आकाशनापीक्क अनुक्रमे नीचे
 नीचे एक वीजाथी असख्यात असख्यात जोजननां
 पूर्वोक्त रीते रहेलां रे ने तेनी नीचे सातमी नरक-

पृथ्वीरे हर्वतै तम प्रज्ञा नरक पृथ्वी जे एक लाख सौ लाख हजार जो जननी जामी कही रे. तेमांथी उपर तथा निचे थी एकेक हजार काढीए त्यारे वाकीनी एक लाख चौदह हजार जो जन पृथ्वी रही तेने विषे त्रण प्रतर रे तेनां नाम-वाही, वादल, अने ललक, ते दरेक प्रतर त्रण हजार जो जननां उंचा, असंख्यात जो जननां लांबा पहोळां अने वावन हजार पांच सौ जो जननां अंतरे एक बीजाथी निचे निचे रे. तेमां नवाणु हजार नवसो पंचाणु नरकावासा रे ते बेप्रकार ननां रे नवाणु हजार नवसो बत्रीस पुष्पावकीर्ण अने त्रेसर श्रेणी बंध एम बन्नेम छली एएएए नरकावासा रे. ते सर्व नरकावासामां केटलाक संख्याता अने केटलाक असंख्यात जो जनना लांबा पहोळा नरकावासा रे. ते सर्व मां नारकीनां जीवो रहे रे.

सातमी तमः तम प्रभा नरक पृथ्वी एक लाख आठ हजार जो जननी जामी, असंख्याता हजार जो जननी विस्तार वाली अने विस्तार थी त्रण गणी ऊजेरी परिधि एकरीने सहीत ऊबरने आकारे रे. परिधि नाफरता वाली

याकारैआरजोजनसुधी घनोदधि, रजोजनसुधी घ-
 नवात अने वेजोजनसुधीतनवातरे नेतेपठी अलोक
 आवेरे ते नरकपृथ्वीनी निचे वीशहजारजोजनघनो-
 दधिनो पींमठे तेनी निचे घनवात, तनवात अने आ-
 काशना पींक अनुकमे निचेनिचे एकमीजाथी असं-
 ख्यात असख्यात जोजननां पूर्वोक्त रीते रहेला रे
 ने तेनीनिचे अलोकरे हवेते तम तमप्रज्ञा नरक-
 पृथ्वी जे एकलासआरहजारजोजननीजामीकहीरे,
 तेमाथी सामीवावनहजारजोजनउपर मुकीए अने
 सामीवावनहजारजोजन नीचे मुकीए, तेनी वचमा
 एक प्रतर रे तेनु नाम अपश्वाणो ते प्रतर त्रणह-
 जारजोजनउचो, असरयात जोजननो लावो पहोळो
 रे अनेतेमां एकजप्रतरहोवाथीअतर नयी ते नरक-
 पृथ्वीमां पांचनरकावासाठे तेश्रेणीपधरे तेपांचनरका-
 वासामां मध्यनोअपडगणो नरकावासो एकलासजो-
 जननोलावोपहोळोरे अने वाकीनाचारे नरकावासा
 असर्यातअसख्यात जोजनना लावापहोळारे, तेमा
 नारकीनाजीत्रो रहे रे.

ऊपर कहा प्रमाणे साते नारकीमां सीमंत प्रत-
 रथी अपश्वराणा प्रतरसुधीसर्वेमल्लीनेउगणपचास प्र-
 तरोडे, तेमां पहेला सीमंत नामना प्रतरने विषे सीमंत
 नामनोनरकावासो जेपीस्ताळीसलाख जोजननो ठे,
 तेनेफरतां चारदिशाए उंगणपचास उंगणपचास तथा
 चारविदिशाए अमृताळीसअमृताळीसनरकावासाडे
 तेश्रेणीबंधठे, तेमांथी तेनी नीचेना बीजा प्रतर वगेरे
 सर्वे प्रतरोमां दिशा तथा विदिशाए थइने आठआठ
 नरकावासा उंगाउंगा श्रेणीबंधठे, ठेवटसर्वथीनीचला
 अपश्वराणा नामनानरकावासानीचारदिशाए एकेको
 नरकावासोडे सर्व श्रेणीबंध नरकावासा नवहजार
 रसो त्रेपन अने पुष्पावकीर्णनरकवासा त्यासीलाख-
 नेउंहजारत्रएयसोसुमृताळीसठे, ते वन्ने मल्लीने चो-
 रासीलाखनरकावासाथया, तेमां पहेलो सीमंतो तथा
 ठेव्हो अपश्वराणो मुकीने बाकीना सर्व नरकावासा
 संख्याता असंख्याता जोजननां लांबा पहोळा उपर
 कहांप्रमाणेरे, तेनुं कांड्क प्रमाण समजाववानेमाटे
 शास्त्रझोकहेरेके, कोइदेवतात्रएवारचपटीवगामतां

जेटलो वखतलागे तेटला वखतमा आजबुद्धीपने एक-
वीसवार प्रदिक्षणादे, एवी शीघ्रगतिए सामाजि अठ आठ
लाख जो जननुं पगद्गु जरतो नरकावासामांचाले, तो
पण कोइकनो एक मासे अने कोइकनो ठ मासे,
सख्याता जो जनवाळान नरकावासानो पारपामे पण अ-
सख्याता जो जनना नरकावासानो पारपामे नहि, एवा
मोटा ते नरकावासाठे सख्याता अने असख्याता
जो जनना नरकावासामां अनुक्रमे सख्याता अने अस-
ख्याता नारकीं रहे ठे, श्रेणीप्रधन नरकावासावाटला,
त्रिखूणां अने चोखूणा आकारे ठे, अने पुष्पावकीर्ण
विविध आकारना ठे रुमप्रज्ञा, शर्कराप्रज्ञा अने वालु-
काप्रज्ञा मांहेनासर्वे, तथा पकप्रज्ञा माहेना घणा,
अने धुमप्रज्ञामांहेनाथोकान नरकावासानी जूमीका
लाल चोळखेरनां अंगराथीपण अति उष्ण ठे अनेथोका
पकप्रज्ञामांहेना, घणां धुमप्रज्ञा मांहेना अने तम-
प्रज्ञातथातम तमप्रज्ञामांहेना सर्वे नरकावासा, जा-
मेलापाणी(वरफ)यी पण अति शीतल जूमीवाळा
ठे, उष्ण जूमीमां रहेला नारकीं ठेने उष्णवेदना, अने

शीतञ्जूमीमां रहेलां नारकीर्जने अति शीत वेदनां थे.
जेम पीत्तज्वर (ताव) वाळो माणस आच्छादन
बीना उनालाना दिवसमां मध्यान काळे चारेवाजुए
अग्निनीवचमांरहेलोहोय अने त्यांतेनेजेटली उष्ण-
वेदनाथाय, तेनाथी अनंतगुणी उष्णवेदना उष्ण-
ञ्जूमीना नरकावासामां रहेलानारकीर्जनेहोय थे, अने
अतिष्ठुर्बिलवृद्ध माणस कांश्पणआच्छादनबीना शिया-
लानीरात्रे, उंचेथी बरफपरतोहोय, चारेवाजुथी शी-
तवायु वातोहोय, अने हीमाचलनाठंकाप्रदेशमां
बरफ उपररहेलोहोयतो त्यां तेने जेटली शीतवेदना
थाय, तेथी अनंतगुणी शीतवेदना शीतञ्जूमीना न-
रकावासामांरहेलां नारकीर्जने होयथे. नरकावासाना
क्षेत्रोनो वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श अति न्यंकर,
विहामणो अने अति दुःखदायी थे.

वात नारकीना नमूना	पुण्यती पीढ़ि प्रतर,	पुण्यतकर्त्ता प्रतर	अधिकारी प्रतर	सर्वं नरका वासा	८
सर्व ग्रन्था	३,५००००	३	४,४३३	१०,०००००	८
शक्ति ग्रन्था	१,३५०००	१	६,६७६	१०,०००००	८
वाल्मीकि ग्रन्था	१,७५०००	१	१४,४४४	१०,०००००	८
पुक ग्रन्था	१,२५०००	१	१०,४३३	१०,०००००	८
तस ग्रन्था	१,३६०००	१	१०,४३३	१०,०००००	८
तस-तस ग्रन्था	१,४००००	१	१०,४३३	१०,०००००	८

दस चुवनपति निकायना चुवनो रत्नप्रज्ञा
 पृथ्वीनो पीम् एक लाख एंशी हजार जोजननो
 जासो डे. तेमांथी एक हजार जोजनउपर अने एक
 हजार जोजन नीचे मुकीए वाकी एकलाख अठयो-
 तेरहजार जोजन पीम् रह्यो ते मांहे यथायोग्यपणे दस
 जातिना चुवनपति निकायना देवोना चुवनोरे, मेरुपर्व-
 तना जेआठ रुचकप्रदेश रे, त्यांथी अधोअर्ध बे खंड
 करीए, एक दक्षिण दिशिनुं अर्ध अने बीजुं उत्तर
 दिशिनुं अर्ध, एवा बे ज्ञागे चुवनपतिना चुवनोनी
 श्रेणीडे रे, तेमां दक्षिण दिशानी श्रेणीमां असुरकुमार
 निकायना चोत्रीस लाख चुवन डे. नागकुमार नि-
 कायना चुंवालीसलाख, सुर्वणकुमार निकायना आठ-
 त्रीसलाख, विद्युतकुमार निकायनां चालीसलाख, अग्नि-
 कुमार निकायनां चालीसलाख, द्वीपकुमार निकाय-
 नां चालीसलाख, उद्धिकुमार निकायनां चालीसलाख,
 दिशिकुमार निकायनां चालीसलाख, पवन-
 कुमार निकायनां पचासलाख, अने स्तनितकुमार
 निकायनां चालीसलाख चुवनो डे, ए सर्व मळी

दक्षिण दिशानी श्रेणीए चार कोरु अने ठ लाख
जुवन ठे, तथा उत्तर दिशिनी श्रेणीमां असुरकुमार
निकायनांत्रीस ,लाख जुवन ठे, वीजानां चालीस
लाख, त्रीजानां चोत्रीसलाख, चोथानां ठब्बीस लाख,
पांचमानां ठत्रीस लाख, ठष्ठानां ठत्रीस लाख, सात-
मानां ठत्रीस लाख, आठमानां ठत्रीसलाख, नवमाना-
ठेतालीस लाख, अने दशमानां ठत्रीस लाख जुनो
ठे, ए सर्व मळी उत्तर दिशानी श्रेणीए त्रण कोरु ठासठ
लाख जुवन ठे, ए घने श्रेणीना मळीने कुल सातकोरु वहो
तेरलाख जुननपतिना जुवनो ठे ए जुवनो नानामा नाना
जघुठीप जेवका मोटा ठे, मध्यम सख्याता जोजनना
अने मोटामा मोटा असरयात जोजन लावा प-
होळा, वहारथी वाटला, अढरथी चोखुणा अने चूमी
तळीए कमळनीकर्णिकानाआकारे, घणासुटर, सानू
कुळ, वर्ण, गध, रस, अने स्पर्शे करीने सहीत ठे
ते दरेकमा मनोहर जीनजुवन ठे एकेका जीन जुवन-
मा एकसोने एसी एसी शाश्वतीजीनप्रतिमाडे ठे स-
रयाता जोजनवाळा जुवनमा सख्याता, अने अस-

ख्याता जोजनवाळा जुवनमां असंख्याता देवो रहे ठे.

व्यंतरना जुवनो—रत्नप्रज्ञा पृथ्वीमां उपर मुकेलो
जे एक हजार जोजननो जाको पृथ्वी पीँड, तेमांथी
एक सो जोजन उपर अने एक सो जोजन निचे
मुकीने बचलो आरसें जोजननो जाको, असंख्यात
जोजननोलांबो पहोलो पृथ्वीपीँकठे. तेमांशारजातिनां
व्यंतर देवोना उत्तर तथा दक्षिण श्रेणीए असंख्याता
जुवनो ठे, ते नानामां नाना ज्ञरतक्षेत्र, जेवकां, म-
ध्यम महाविदेहक्षेत्रजेवकां अने मोटामां मोटा
जंबुद्धीप जेवका लाख जोजननां ठे, ते सर्वे जुवनो
बहारथी वाटला, अंदरथी चोखुणां, अने जूमी तळीए
कमलनी कणीकाने आकारे, अति सुंदर, मनोहर,
सानुकुल, वर्ण, गंध, रस, अने स्पर्शेकरीनेयुक्तठे
तेमां व्यंतरनां देवो रहे ठे. बली रत्नप्रज्ञा पृथ्वीमां
उपर मुकेलो जे एकसोजोजननो जाको पृथ्वी पीँक,
तेमांथी दश जोजन उपर अने दश जोजन नीचे
मुकीने बचलो एंसी जोजननो जाको, असंख्यात
जोजननो लांबो पहोलो पृथ्वी पीँक ठे. तेमां आर

जातिना वाणव्यतर देवना उत्तर तथा दक्षिण श्रेणीए
असरख्याता जुवनो रे, ते नानामा नाना भरतक्षेत्र
जेवका, मध्यम महाविदेह जेवका अने मोटामा
मोटा जबुद्धीप जेवका लाख जोजनना रे उपर कहा
प्रमाणे व्यतरना तथा वाणव्यतरना असरयाता
जुवनो रे, तेमा सर्वे मळीने असरयाता जीन जु-
वनो रे

अनतानतआकाशप्रदेशनांमध्यज्ञागमां, कटीए
(केम्ये) हाथराखीपगपसारीउज्जेलापुरुपनाआकारे
अकुत्रिम, निश्चल, अने पचास्तिकायना समुदाय-
युक्त चौदराज प्रमाण लोकरे ए चौदराजलोकना
मध्यमां एकराज लावो पहोळो अने मेरुसमीपे स-
मजुतलापृष्ठवीथी नवसें जोजन नीचो ने नवसेंजो-
जनउचो तिर्भेलोकरे, ते तिर्भेलोकमां पच्चीस-
कोकाकोस्मी उद्धारपद्योपमना जेटलासमयथाय ते-
टलां द्वीप अने समुद्रो रे अर्थात् असरख्याताद्वीपने
असरख्यातासमुद्रो रे ते सर्वनी अन्यतरमा लाख-
जोजननो लावो पहोळो अने याळीनाआकारे गोल

आ प्रथम जंबुद्धीप रे; तेनां फरतो चुकीनांआकारे वे लाख जोजनना विस्तारे लवण समुद्र रे अने ते पठी धातकीखंड, काळोदधि समुद्र, पुष्करवरद्धीपने पुष्करवरसमुद्रविगेरे एक वीजाथी वमणां वमणां विस्तारे चुकीनाआकारे अने प्रशस्तवस्तुनां नामे असंख्याताद्धीपने असंख्यातासमुद्रो रे. सर्वथीरेहो स्वयंचुरभए नामेसमुद्र रे ते अर्धा राजदोक प्रमाण विस्तारे रे.

जंबुद्धीपमां वे चंद्र ने वे सूर्य, लवण समुद्रमां चार चंद्र ने चारसूर्य, धातकीखंडमां चारचंद्र ने चार सूर्य, काळो दधि समुद्रमां बहेताळीस चंद्र ने बहेताळीस सूर्य अने पुष्करार्धमां बहोतेर चंद्र ने बहोतेर सूर्य रे. ए वधां मली एकसो वत्रीसचंद्र ने एकसो वत्रीससूर्य तथा ग्रहादिक ज्योतिषीर्णनां विमानो आ मनुष्य हेत्रमां रे, ते सर्वे चर रे. मनुष्य हेत्रनी बहार असंख्याता द्धीप तथा समुद्रोमां असंख्याता ज्योतिषीनां विमानो रे, ते सर्वे स्थिर रे. दरेक चंद्रने अठयाती ग्रह अठयावीस नहात्र अने

वासर हजार नवसें पचोतेर कोमाकोमी तारानो
परिवार ठे.

सन्धूतखा पृथ्वीयी सातसें नेउ जोजने तारान।
विमान ठे, आठसें जोजने सर्यनु विमान ठे, आठसे
एसी जोजने चडमानु विमान ठे, आठसेचोरासी
जोजने नक्कत्रना विमानठे, आठसेअरयासी जोजने
बुधनु विमान ठे, आठसेएकाणु जोजने गुञ्छनु वि-
मान ठे, आठसेचोराणु जोजने बृहस्पतिनु विमानठे,
आठसेसत्ताणु जोजने मगलनु विमान ठे अने नवसे
जोजने सर्वथी उपर शनिनु विमान ठे एस समझ-
तखा पृथ्वीयी सातसें नेउ जोजन उपरात एकसो
दश जोजनमाँ ज्योतिप चक ठे ते विजानो मेरु
पर्वतथी अगीयारसे एकवीस जोजन चारे तरफ
झर ठे अने अगीयारसें अगीयार जोजन अटोकथी
माहेलीकोरे ठे, एटटो अलोकनी अवावाए ज्यो-
तिप चक ठे,

मनुप्यकेत्र महेनां चडमान। विमान एक जो-
जनना एकसरज्जाग करीए एवना रापन्न ज्ञागन।

लांबा पहोळां ने अठयावीस ज्ञागनां उंचा डे, सूर्यनां
 विमान एक सठीआ अमुताळीस ज्ञागनां लांबा प-
 होळां ने चोवीस ज्ञागनां उंचा डे, ग्रहनां वे गाउनां
 लांबा पहोळां ने एक गाउनां उंचा डे, नक्षत्रनां एक
 गाउनां लांबा पहोळां ने अर्ध गाउनां उंचा डे, अने
 ताराउनां पांचशेध नुष्यथी एक हजार धनुष्य सुधीनां
 लांबा पहोळांने अटीसेथी पांचसें धनुष्य सुधीनां
 उंचा डे, मनुष्य केत्रनी बहारनां ज्योतिषीनां विमा-
 नोनुं प्रमाण मनुष्य केत्रना विमानोथी अर्धुं अर्धुं डे
 एटले मनुष्य केत्रमां रहेकां चंडनुं विमान एक स-
 ठीयां डप्पन्न ज्ञागनुं डे; तो मनुष्य केत्रनी बहारना
 चंडना विमान एक सठीया अठयावीस ज्ञागनां डे.
 एम पांच ज्योतिषीउनां विमानोनी लंबाइ, पहोळाइ
 अने उंचाइ नुं प्रमाण अर्धुं अर्धुं डे. चंड तथा सूर्यनां
 विमान वाहक देवो सोळ सोळ हजार डे, ग्रहनां
 विमान वाहक देवो आठ हजार डे, नक्षत्रनां विमान
 वाहक देवो चार हजार अने ताराना विमान वाहक
 देवो बब्बे हजार डे. चंड, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र अने

(३७)

तारानी चालवानी गति अनुक्रमे एक वीजाथी शीघ्र शीघ्रतर रहे, ज्योतिषीउनां विमाननु मांहोमांहे अंतर, व्याघाते उल्कृष्ट वारहजार वसें वहेताळीस जोजननु अने जघन्य वसेनेवासठ जोजननु रहे, निर्व्याघाते (व्याघात न होय त्यारे) उल्कृष्ट वे गाऊनु अने जघन्यथी पांचसें धनुष्य एक ताराथी वीजा तारानी वच्चे अतर रहे सूर्य उचो सो जोजन तपे रहे नीचो अढारसे जोजन तपे रहे ने तिच्छर्गेसुखताळीस हजार वसेवेसठ जोजन अने सारीया एकवीस ज्ञाग तपे रहे एटले उपर कहा प्रमाण सूर्यनु ताप होत्र रहे

बवण समुद्रे ज्योतिषीना विमानो रहे ते उदक स्फाटिक रत्ननां अने वीजा सर्वज्योतिषीना विमानो स्फाटिक रत्ननां रहे, ते सर्व विमानो अर्ध कवीरा (कोठफळ) कारे, मनोहर जोनचुवने सहीत, टेढी-प्यमान प्रकाशवाळा अने अति सुंदर ज्योतिषीउना विमानो रहे तेमां असख्याता ज्योतिषी देवो रहे

वैमानिक देवोनां विमानो - ज्योतिषीना विमानोथी असंख्यात कोकाकोमी जोजने अथवा आ-

ठमा राजलोकनां ढेके, घनोदधिना आधारे, पहेलो
 सौधर्मदेवलोक दक्षिण दिशाए अने वीजो इशान-
 देवलोक उत्तर दिशाए ढे ते बन्ने देवलोकेनां ज्ञेगा
 मली वळीयाकारे तेर प्रतर ढे. तेरे प्रतरनी वच्चे
 अर्धोअर्ध वेखंरुकरीए; एक दक्षिण दिशिखंरु अने
 वीजो उत्तर दिशिखंरु, दक्षिण दिशि खंरुनो अधि-
 पति सौधर्मेंड अने उत्तरदिशिखंरुनो अधिपति इ-
 शानेंड ढे. सौधर्मेंडना वत्रीसलाख विमान ढे, तेमां
 चारसें चोराणुं त्रिखूणां, चारसें डयासी चोखूणा, सा-
 तशेंसत्तावीस वाटलां अने एकत्रीस लाख अठाणुं
 हजारबसें त्राणुं विविध आकारनापुष्पावकीर्ण विमानो
 ढे, तथा इशानेंडना अठ्यावीसलाख विमान ढे, तेमां
 चारसें चोराणुं त्रिखूणां, चारसें डयासी चोखूणां. वसें-
 अम्बत्रीस वाटलां अने सत्तावीस लाख अठाणुं हजार
 सातसें व्यासी विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण विमानो
 ढे; ते बन्ने देवलोकना सर्व विमानना ज्ञोंय तळीयानो
 पृथ्वीर्पीरु वे हजार सातसें जोजननो जाको ढे ने ते
 विमानो पांचशें जोजननां उंचा ढे, केटला एक सं-

ख्याता जोजननांने केटलाएक असरयोता जोजन
 नां लांवा पहोळां रे अने काळा, नीला, राता, पी-
 लाने धोळा एम पचवण्णना रे, ते विमानोनी उपर
 असख्यात जोजने अथवा नवमा राजलोकनां ठेणे,
 घनवातना आधारे त्रीजो सनत्कुमार देवलोक दक्षिण
 दिशाए अने चोथो माहेंड्र देवलोक उत्तर दिशाए
 रे ते वन्ने देवलोकनां ज्ञेगा भळी बळीयाकारे वार
 प्रतर रे तेमां पण पूर्वोक्त रीते दक्षिण दिशिखरुनो
 अधिपति सनत्कुमारेंड्र अने उत्तर दिशिखरुनो "अ-
 विपति माहेंड्र रे सनत्कुमारेंड्रना वारलाख विमान
 रे तेमां त्रणसें ठप्पन्न त्रिखूणां, त्रणसें अमताळीस
 चोखूणां, पांचसें वावीश वाटला अने अगियारलाख
 अष्टाषुहजार सातसें चुम्मोतेर विविध आकारनां पु-
 प्पावकीर्ण विमान रे तथा माहेंड्रना आरलाख वि-
 मान रे, तेमा त्रणसें ठप्पन्न त्रिखूणां, त्रणसो अमता-
 ळीस चोखूणां एकसो सीतेर वाटला अने सातलाख
 नवाषु हजार एकसो ठवीस विविध आंकारनां पु-
 प्पावकीर्ण विमान रे. ते वन्ने देवलोकना विमानना

ज्ञांयतळीयानो पृथ्वीपर्िक वे हजारठसेंजोजन जानो
 डे, ते विमानो डशें जोजन उंचा, केटलाएक संख्याता
 जोजननां ने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा
 पहोलां अने काळा वर्ण सिवाय चार वर्णनां डे.
 त्रीजा, चौथा देवलोक उपर असंख्याता जोजने अ-
 थवा दशमा राजलोकमां घनवातना आधारे पांचमो
 ब्रह्म देवलोक डे. ते देवलोकमां ड प्रतर ने चारलाख
 विमानो डे तेमां बशें चोरासी त्रिखूणां, बशें भोतेर
 चोखूणां, बशें चुम्मोतेर वाटलां अने त्रणलाख नवाणुं
 हजार एकसो ठासठ विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण
 विमान डे. ते विमाननां ज्ञांयतळीयानो पृथ्वीपर्िक
 वे जहार पांचसे जोजन जानोडे, ते विमानो सातसे
 जोजनना उंचा, केटलाएक संख्याता अने केटलाएक
 असंख्याता जोजननां लांबा पहोला अने कालाने
 नीलावर्ण सिवाय त्रणवर्णनां डे, पांचमा देवलोकनां
 उपर असंख्याता जोजने अथवा दशमा राजलोकनां
 डेके घनोदधि ने घनवातना आधारे छठोलांतक देव-
 लोक डे. ते देवलोकमां पांच प्रतरने पचाशहजार

विमानो थे तेमां बशे त्रिखूणा, एकसो वाणु चोखुणा,
 एकसो त्राणु वाटला अने उंगणपचाशहजार चारशे
 पन्नर विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण विमान थे ते
 विमानना ज्ञायतलीयानो पृथ्वीर्पीकु वे हजार पाचसे
 जोजन जाको थे, ते विमानो सातसें जोजननां उचा,
 केटलाएक सर्याता अने केटलाएक असर्याता जो-
 जनना लांवा पहोलां अने कालाने नीला वर्ण सिवाय
 त्रृणवर्णनाथे ठठा देवलोकनां उपर असर्याता जो-
 जने अथवा अगियारमां राजलोकमां घनोदधि अने
 घनवातना आधारे सातमो शुक्र देवलोकरे ते देव-
 लोकमा चार प्रतरने चालीशहजार विमानो थे, तेमा
 एकसो ठत्रीस त्रिखूणा, एकसो वत्रीस चोखुणा, एकसो
 अष्टावीस वाटलां अने उंगणचालीश हजार रसेनेचार
 विविध आकारनां पुष्पावकीर्ण विमान थे ते विमानना
 ज्ञायतलीयानो पृथ्वीर्पीकु वे हजार चारशे जोजन
 जाको थे, ते विमानो आरसें जोजननां उचा केटलाएक
 संर्याता अने केटलाएक असंर्याता जोजननां लावा
 पहोलां अने काला, नीलाने राता वर्ण सिवाय वे

वर्णना थे, सातमादेवलोकनां उपर असंख्याता जो जने
 अथवा अगियारमां राजलोकनां थे एवं घनोदधि अने
 घनवातना आधारे आठमो सहस्रार देवलोक थे, ते
 देवलोकमां चार प्रतरने छहजार विमानों थे, तेमां
 एकसोसोल त्रिखूणां, एकसोआठ चौखूणां, एकसो-
 आठ वाटखां अने पांचहजार छसेअक्षसठ विविध
 आकारनां पुष्पावकीर्ण विमान थे, ते विमाननां न्मोय-
 तलीयानो पृथ्वीपीर्फ बेहजार चारसेजोजन जानु थे,
 ते विमानो आठसेजोजननां उंचा केटलाएक संख्याता
 अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोला
 अने काठा, नीलाने रातावर्ण सिवाय बे वर्णनां थे.
 आठमा देवलोकनां उपर असंख्याता जोजने अथवा
 वारमा राजलोकमां आकाशनां आधारे नवमो आ-
 णत अने दशमो प्राणत ए बे देवलोक जोकाजोकुर्हे
 अने ते बन्ने देवलोकनोएकइङ्ग थे, ते बन्ने देव-
 लोकमां यहने चार प्रतरने चारसे विमानों थे, तेमां
 बाण त्रिखूणां, अठयासी चौखूणां, अठयासी वाटखां
 अने एकसोवत्रीसविविध आकारनां पुष्पावकीर्ण-

विमानरे ते विमाननां ज्ञोयतखीयानो पृथ्वीर्पीक वे
हजार त्रणसें जोजन जाकोरे, ते विमानो नवसे जो-
जन उचा, केटलाएक संख्याता अने केटलाएक अ-
सख्याता जोजननां लांवा पहोलां अने एक धोला
वर्णनाज रे नवमा अने दशमा देवलोकनां उपर
असख्याता जोजने अथवा वारमा राजलोकनां ठेने
आकाशनां आधारे अगियारमो आरण अने वारमो
अच्युत देवलोक जोकाजोक रे ते वन्ने देवलोकनो
एक इद्ध रे ते वन्ने देवलोकमां थड्ने चार प्रतरने
त्रणसें विमानो रे, तेमां वहोंतेर त्रिखूणा, अम्भसठ
चोर्खूणा, चोसठ वाटलां अने रन्नु विविध आकार
ना पुष्पावकीर्ण विमान रे ते विमानना ज्ञोयतखी-
यानो पृथ्वीर्पीक वे हजारत्रणसें जोजन जाको रे, ते
विमानो नवसें जोनजनां उचा, केटलाएक संख्याता
अने केटलाएक असख्याता जोजननां लावा पहोलां
अने एक धोला वर्णनाज रे. अगियारमा अने वा-
रमा देवलोकनां उपर असख्यात जोजने अथवा ते-
रमा राजलोकमां आकाशनां आधारे नवग्रैवेयक रे

ते दरेकनो अकेको प्रतर होवाथी नवग्रैवेयकना नव प्रतरो भे. ते नव प्रतरोमां प्रथम नीचेनी त्रीके त्रण प्रतरे एकसो अगियार विमान भे, तेमां चालीश त्रिखुणां, ढत्रीस चोखुणां अने पांत्रीस वाटलां विमान भे. ए हेरली त्रीकमां पुष्पावकीर्ण विमान नथी. तेना उपर असंख्यात जोजने बीजी मध्यनी त्रीके एकसो ने सात विमान भे तेमां अठावीस त्रिखुणां, चोवीस चोखुणां, तेवीस वाटला अने बत्रीस पुष्पावकीर्ण विमान भे तेना उपर असंख्यात जोजने अथवा तेरमाराजलोकने ठेके उपरनुं त्रीजुं त्रीक भे. तेनां एकसो विमान भे तेमां सोळ त्रिखूणां, वार चोखुणां, अगियार वाटलां अने एकसठ पुष्पावकीर्ण विमान भे, एम नवग्रैवेयकनां सर्वे मली त्रणसें अढार विमान भे. तेनां ज्ञायतलीयानो पृष्ठवीर्पिंक बे हजार बसें जोजन जानो भे ते विमानो एक हजार जोजननां उंचा, केटलाएक संख्याता अने केटलाएक असंख्याता जोजननां लांबा पहोळा अने एक धोळा वर्णनांज भे. नवग्रैवेयकनी उपर असंख्यात जोजने अथवा चौदमा

राजस्वोकनां ठेके आकाशनां आधारे पांचअनुक्तरवि-
 म.न ठे तेनोएक प्रतरने पांच विमान ठे तेमां वच्छु
 सर्वार्थसिद्ध विमान लाख जोजननु लाखु पहोळु अने
 वाटछु ठे ते सर्वार्थ सिद्ध विमाननी चारे दिशाए
 अनुकमे विजय, विजयत, जयतने अपराजीत एम
 चार विमान ठे ते त्रिखुणां ठे ते विमाननां न्नोय-
 तलीयानो पृथ्वीपींक वे हजारने एकसो जोजन जानो
 ठे ते विमानो एक हजार ने एकसो जोजन उचा,
 असख्यात जोजनना लांवा पहोळा अने एक धोळा
 वर्णनाज ठे ते पाच अनुक्तर विमाननी उपर वार
 जोजने, पीस्तालीस लाख जोजननी लांवो पहोळी,
 ठत्राकारे, मध्यन्नागे आठ जोजननी जानी, ठेमे मा-
 खीनी पांख जेवी पातली, एककोरु वहेतालीस लाख
 त्रीसहजार वसें उगणपचास जोजन जानेरी परिधि
 अने पाणीनाकणीया, मच्छुदनुफूल, रुपानोपाटो ने मो-
 तीना हारथी पण अधिकउजली एवी सिद्धशिलारे
 ते सिद्धशिलानी उपर एक जोजनने ठेके लोकनो अंत
 ठे तीहा एक गाउनो रठोन्नाग एटखे त्रणसें तेत्रीस धनु-

ष्यनी उपर बत्रीस आंगलमां सर्व सिद्धना अनंताजीवो
रहां ढे.

वार देवलोक, नवगैवेयक अने पांच अनुत्तर
विमानना सर्वेमलीने चोरासीलाख सत्ताणु हजारने
त्रेवीस विमानो ठे. ते विमानो अत्यंत सुगंधीमय, मा-
खण्ना जेवो मृदुस्पर्श, नित्यउद्योतवंत, मनोहर, अने
जीनचुवनो ए सहीत ढे, तथा शब्द, रूप, गंध, रस,
स्पर्श, ऋद्धि, गति, लावण्य, कान्ति, स्थिति, ए दश-
वाना मनोङ्ग ढे जेमां एवा अति सुंदर विमानो ने
विषे आसंख्यात देवो रहे छे.

पृथ्वीकायादि एकेऽङ्गियनां—पांच दंसुकवे इंडि-
यादि विग्वेडियनां त्रण दंसुक तिर्यंच पचेऽङ्गियनो
एक दंसुक अने मनुष्यनो एक दंसुक एम दश दंसुके
चुवनो अनिश्चल अनित्य अने अनियमीत ढे.

चुवनपति निकायमां सातकोरुने वहोंतेरलाख
जीनचुवन ढे, वैमानिकमां चोरासीलाख सत्ताणु ह-
जारने त्रेवीस जीन चुवन ढे अने तिर्छालोकमां त्रण
हजार बुसें उगणसाठ जीनचुवन ढे. एम सर्वे मली

आठकोङ सत्तावनलाख बर्से ने व्यासी तथा व्यंतर
निकाय अने ज्योतिषीमां असख्याता जीनजुवनोठे
ते सर्वेशास्वता ठे

जुवनपति निकायनां दरेकजीनजुवनमां एकसो
एसी एसी जीनप्रतिमाजी ठे नवग्रैवेयकना त्रणसे
अढार अने पांच अनुक्तरनां पांच मळीने त्रणसे त्रे-
वीस जीनजुवनोमा एकसोवीस वीस जीनप्रतिमाजो
अने बीजा सर्व वैमानिकनां जीनजुवनोमा एकसो
एसी एसी जीनप्रतिमाजी ठे तिर्हा लोकना साठ
जीनजुवनोमां एकसो चोवीस चोवीस अने वाकीना
त्रण हजार एकसो नवाणु जीनजुवनमां एकसोवीस
वीस प्रतिमाजी ठे एम गणतां सर्वमळी पदरश्वरज
वेतालीस करोड अठावन लाख ठत्रीस हजारने एसी
जीनप्रतिमाजी ठे, तथा व्यतर निकायमा अने ज्यो-
तिषीमां असख्यात जीनप्रतिमाजी ठे सर्व जीनप्रति-
माजी क्रृपन, चट्ठानन, वारिखेण ने वर्षमान एचार
नामनी अने सदा शास्वती ठे ॥ इति जुवनद्वार ॥

श्वस त्रीजुं शरीरहार.

शरीर—“शीर्यते तष्ठशरीरं” प्रतिक्षणेपुद्गतना उपचयथ्रपचयेकरीने वधे, घटे ते शरीर कहीए; ए शरीर पांच हो. १ औदारिक, २ वैक्रिय, ३ आहारक, ४ तैजस, ५ कार्मण.

औदारिक—उदार—ब्रधान तिर्थकरणधरादिक पदवीनोअपेक्षाएसर्वशरीरोमां उत्तम, स्थुल पुद्गतोनुं बनेलुं, उत्पन्नथयापठीतरतवधे, घटे, परिणमे अने हो-दन ज्ञेदन अहणादिथद्वयकेएवुं; औदारिकनाम क-र्मनांउदये औदारिकशरीरयोग्य पुद्गतउहणकरीजीव पोताना प्रदेशसाथेमेळवी शरीरपणेनिपजावे ते औ-दारिकशरीरकहेवाय हो.

वैक्रिय—विविध प्रकारनी विक्रिया करे जेमके नानानुंमोटुं—मोटानुंनानुं, सुरुपनुंकुरुप—कुरुपनुं सुरुप, दृश्यनुंअदृश्य—अदृश्यनुंदृश्य, एकनुं अनेक—अनेकनुं एक, अप्रतिघातीनुं प्रतिघाती—प्रतिघातीनुं अप्रति-घाती, चूचरनुंखेचर—खेचरनुं चूचर, इत्यादि घणा प्र-कारनुं अद्वयकेएवुं वैक्रिय नामकर्मनांउदयथी वैक्रिय

शरीर योग्य पुद्गल ग्रहण करी जीव पोताना प्रदेशनी साथे मेलवी शरीर पणे निपजावे ते वैक्रिय शरीर कहेवाय छे ते वैक्रिय शरीरना थे ज्ञेद छे. १
जन प्रत्ययिक, २ लघिध प्रत्ययिक

आहारक-अटपकाळने भाटे जे ग्रहण कराय ते आहारक शरीर, चौदपूर्वधर लघिधवत साधु सदेह टाळवानिमिते अथवा तिर्थकरनीरीद्वि जोवाने अर्थे स्फाटिकना जेबु अति उज्ज्वल, मुढा हाथ प्रमाण, अतरमृदुर्तनीस्थितिवालु, आहारकनामकमोदये आहारकशरीख्योग्य गुज विशुद्ध पुद्गल ग्रहण करी जीप्रदेशसाथे मेलवी शरीरपणे निपजावे ते आहारक शरीर कहेवाय रे

तैजस-तेजनो विकार, तेजोमय, तेजपूर्णएबु, करेखा ज्ञोजनने पचावनार अने तेजोलेड्या तथा श्रापके अनुग्रहनां प्रयोजनवालु, तैजस नामकर्मना उदयधी तैजस शरीर योग्य पुद्गल ग्रहण करीजीव पोताना प्रदेशनी साथे मेलवी शरीरपणे निपजावे ते तैजस शरीर कहेवाय रे.

कार्मण-कर्मनोविकार, कर्ममय, कर्मस्वरूप,
सर्व शरीरोनुं बीज एवुं, खीरनीरनीपेरे जीव प्रदे-
शनीसाथे जे कर्मदल्लमळीरह्यांचे ते कार्मण शरीर
कहेवाय ढे.

औदारिकनी अपेक्षाए वैक्रियनां प्रदेश असं-
ख्यातगुणा, वैक्रियनी अपेक्षाए आहारकनां प्रदेश
असंख्यातगुणा, आहारकनी अपेक्षाए तैजसनां प्र-
देश अनंतगुणा अने तैजसनी अपेक्षाए कार्मण श-
रीरनांप्रदेश अनंतगुणा ढे, औदारिकथी वैक्रियनी
अवगाहनां सूदम, वैक्रियथी आहारकनी अवगाह-
नां सूदम अने आहारकथी तैजसने तैजसथी पण
कार्मणनी अवगाहनां सूदम ढे. तैजस अने कार्मण
शरीर अप्रतिघातिष्टवे कोइयी रोकाय नहि अथवा
कोइतेरोकेनहिएवा, जीवने अनादिसंबंधवाळा ढे.

नारकीनो एक दंस्क, चुवनपतिना दशदंस्क,
ज्योतिषीनो एक दंस्क, व्यंतरनो एक दंस्क अने
वैज्ञानिकनो एक दंस्क, ए चौद दंस्के वैक्रिय, तैजस

अने कार्मण, एम त्रण शरीर होय रे वे इङ्गिय, रे
 इङ्गिय, चौरिंग्गिय, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय
 अने वनस्पतिकाय, ए सात दम्के, तथा समुर्धिम
 तिर्यच पचेंडिय अने समुर्धिम मनुष्यने औदारिक
 तैजस ने कार्मण एम त्रण शरीर होय रे, वायुकाय
 अने गर्जज तिर्यच पचेंडियना दम्के औदारिक,
 वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, एम चार शरीर होय
 अने गर्जज मनुष्यना दम्के पाचे शरीर होय रे,

॥ इति शरीरधार ॥

अथ अवगाहना धार

अवगाहना—शरीरनु प्रमाण—जघन्य तथा उ-
 त्कृष्ट चोबीश दम्के कहे रे

प्रथमं नारकीना दम्के सामान्यपणे अवगाहना
 जघन्य अगुखनां असख्यातमां ज्ञाग जेटली अने
 उत्कृष्ट पाचशें धनुष्यनी रे, जुढी जुदी नारकीनी अ
 पेक्खाए पहेली नारकीनी पोणा आर धनुष्य र अगुख,
 बीजी नारकीनी सामापन्नर धनुष्य वार अगुख त्रीजी
 नारकीनी सवाएकत्रिस धनुष्य, चोथी नारकीनी

साक्षीवासठ धनुष्य, पांचमी नारकीनी सवासो ध-
नुष्य, ठठी नारकीनी अढीसें धनुष्य अने सातमी
नारकीनी पांचसें धनुष्यनी वधारेमां वधारे अव-
गाहनां डे.

प्रथम नारकीमां पहेलां प्रतरे नारकीना जी-
वोनुं उत्कृष्ट देहमान त्रण हाथनुं कहुं डे, अने बीजा
प्रतरे पांच हाथ सामाआर अंगुलनुं, त्रीजा प्रतरे
सातहाथ सत्तर अंगुलनुं देहमान डे; एम दरेक प्रतरे
प्रतरे बे हाथ सामाआरआरअंगुल वधारतां डेख्ना
तेरमा प्रतरमां नारकीना जीवोनुं उत्कृष्ट देहमान
पोणाआर धनुष्य ने ठ अंगुलनुं जाणवुं. बीजी नार-
कीमां पहेले प्रतरे नारकीना जीवोनुं उत्कृष्ट देहमान
पोणाआर धनुष्य ने ठ अंगुलनुं कहुं डे, अने बीजा
प्रतरे सामाआर धनुष्य ने नव अंगुलनुं, त्रीजा प्रतरे
सवानव धनुयष्यने बार अंगुलनुं, एम दरेक प्रतरे
त्रण हाथने त्रण अंगुल वधारता डेलां अगियारमां
प्रतरमां नारकीना जीवोनुं उत्कृष्ट देहमान साडा-
पन्नर धनुष्यने बार अंगुलनुं जाणवुं. त्रीजी नारकीमां

पहेला प्रतरे सामाप्न्नर धनुष्यने वार अगुलनु, बीजा
 प्रतरे सामासक्तर धनुष्य सामासात अगुलनु एम
 दरेक प्रतरे सातहाथने सामीठगणीस अगुलनी वृद्धि
 करता करता ठेला नवमा प्रतरे सवाएकत्रीस धनु
 ष्यनुं उत्कृष्ट देहमान जाणबु चोथी नारकीमा पहेले
 प्रतरे सवाएकत्रीस धनुष्यनु देहमान कहु ठे अने
 बीजा प्रतरादि दरेक प्रतरे पांच धनुष्यने वीस अ-
 गुलनी वृद्धि करता करता ठेह्हा सातमा प्रतरे सामी
 वासर धनुष्यनु उत्कृष्ट देहमान जाणबु पाचमी
 नारकीमां पहेले प्रतरे सामीवासर धनुष्यनु अने
 बीजा प्रतरादि दरेक प्रतरे पन्नरधनुष्यने अढीहाथनी
 वृद्धि करता करता ठेला पांचमा प्रतरे एकसो पच्चीस
 वनुष्यनु उत्कृष्ट देहमान जाणबु ठठी नारकीमां
 पहेले प्रतरे एकसोपच्चीस धनुष्यनु अने बीजा प्रत-
 रादि दरेक प्रतरे सामीवासर धनुष्यनी वृद्धि करता
 करता ठेह्हा त्रीजा प्रतरमा नारकीना जीवोनु उत्कृष्ट
 देहमान वसेपच्चास धनुष्यनु जाणबु सातमी नार-
 कीमां एक प्रतर ठे तेमाना नारकीना जीवोनु उत्कृष्ट

देहमान पांचसे धनुष्यनुं जाणवुं; ए प्रमाणे साते नारकीमां दरेक प्रतरोना नारकीनुं नव प्रत्ययिक शरीर मान कहुं; अने ते नारकीना जीवो उत्तरवैक्रिय शरीर करे तो जघन्यथी अंगुलना संख्यातमां ज्ञाग जेटबुं अने उत्कृष्टथी पोताना नव प्रत्ययिक शरीरथी वसुणुं करी शके छे.

जुवनपतिना दशदंसक, व्यंतरनो एक दंसक अने ज्योतिषीनो एक दंसक एम बार दंसके देव-देवीनुं नव प्रत्ययिक शरीर एटले स्वाज्ञाविक शरीर जघन्य अंगुलना असंख्यातमां ज्ञाग जेटबुंने उत्कृष्ट सात हाथनुं होय छे. अने ते देवो उत्तरवैक्रिय शरीर करे तो जघन्य अंगुलना संख्यातमां ज्ञाग जेटबुंने उत्कृष्ट लाखजोजनपर्यंत करी शके छे, जघन्य शरीर उत्पत्ती समयेज होय छे.

पृथ्वीकाय, अष्टकाय, तेजकाय वातकाय अने साधारण वनस्पतिकायना जीवोनुं शरीर जघन्य अने उत्कृष्टथी अंगुलना असंख्यातमा ज्ञाग जेटबुं होय छे. प्रत्येक वनस्पतिकायनुं शरीर जघन्यथी अंगुलना असंख्या-

तमा ज्ञाग जेटबुने उत्कृष्टथी हजार जोजनथी जा-
जेरु जाणबु

सूदम ने साधारण नाम कर्मना उदए करीने
अनता जीवोए ग्रहण करेलु एक शरीर ते सूदम नि-
गोद (सूदम साधारण वनस्पतिकाय) तुं शरीर कहे-
वाय ए शरीर, सर्वजीवोना शरीरथी अतिसूदम अ-
युक्तना असख्यातमा ज्ञाग जेटबु रे सूदम निगो-
दिआना शरीरथी असरयात गणु मोडु सूदम वाउ-
कायनु शरीर जाणबु एटले असंख्याता सूदमनि-
गोदना शरीरे एक सूदम वाउकायनु शरीर होय ठे
सूदम वायुकायना शरीरथी असख्यात गणु मोडु
सूदम तेउकायनु, तेथी असख्यात गणु मोडु सूदम पृ-
थ्वीकायनु शरीर कह्नु ठे हवे सूदम पृथ्वीकायना
एक शरीरथी असख्यात गणु मोडु एक वादर वाउ-
कायनु, तेथी असख्यात गणु मोडु एक वादर अग्नी-
कायनु, तेथी असख्यात गणु मोडु एक वादर अप-
कायनु तेथी असख्यात गणु मोडु एक वादर पृथ्वी-

कायनुं अने तेथी पण असंख्यातगणुं मोटु एक वादर निगोद (साधारण वनस्पति काय) नुं शरीर कहुं ढे. ए प्रमाणे पांच सूद्धमने पांच वादर ए दशेना शरीर मांहोमांहे एक वीजाथी अनुक्रमे असंख्यात गुणा मोटा मोटा कहा ढे, परंतु दशेना शरीरोमांहेनुं मोटामां मोटु शरीर पण अंगुखना असंख्यातमां ज्ञाग जेटलुंज जाणबुं कारण के अंगुखना असंख्यातमां ज्ञागना पण असंख्यात ज्ञेद कहा ढे.

पृथ्वीकायादिक पांचे सूद्धम एकेंद्रिय जीवोना शरीर एवां सूद्धमठेके, एक शरीरतो देखायज नहि पण असंख्याता के अनंता सूद्धम जीवोना शरीरोनो पींझ एकठो होय तो पण ते देखाता नथी अने प्रत्येक वनस्पति काय सिवाय पृथ्वीकायादि पांचे वादर एकेंद्रिय जीवोना शरीर पण एवा जीणा ढे के ते असंख्याता जीवोना शरीरनां पींझ एकठां होयतोज देखाय ढे तेने माटे शाखङ्गो कहैडे के एक पत्थर के मीठोना कक्कजाने कोइ अतिबलवान पुरुष घणी वखत वाटी वाटीने जीणो चुको करे तोपण तेमां

(५७)

रहेखाँ केटवाएक जीवशरोरोने कीतामणा थाय अने
केटवाएक जीवशरीरने कीतामणा पण न थाय, के-
टवाएक मरे ने केटवाएक मरे पण नहि अने केट-
वाएकने तो मालम पण पर्ने नहि जेमके-वार जो-
जननी कावीने नव जोजननी पहोली नगरीने विषे
घणा लोको वसे ढे, तेमा कोइना घेर चोर धारपारे,
खुटे के मारे, तेनी खवर नगरीना लोकमाँ कोइने
पर्ने ने कोइने न पर्ने, तेम अहीं पण जाणी लेबुं

शंख विगेरे वेश्डिय जीबोनु उत्कृष्ट शरीर
प्रमाण वारजोजननु, कानखजुरा विगेरे तेश्डिय
जीबोनु उत्कृष्ट शरोर प्रमाण त्रणगाऊनु अने जमरा
विगेरे चौर्दिय जीबोनु उत्कृष्ट शरीर प्रमाण चार
गाऊनुं कह्यु रे वेश्डिय, तेश्डिय अने चौर्दिय
जीबोनु जघन्य शरीरप्रमाण अगुलना असंख्यातमा
जाग जेटद्यु जाणबु

गर्जजजलचर तथा उरपरिसर्पनी उत्कृष्ट अ-
वगाहना एकहजारजोजननी, गर्जज चुजपरिसर्पनी
पृथक्त्व (वेथी नव) गाऊनी, गर्जज चोपगा (गाय

विगेरे) नी ड गाउनी अने गर्जज खेचरजीवोनी पृथक्त्व धनुष्यनी उत्कृष्ट अवगाहना कही छे. समु-
र्च्छिम जखचरनी उत्कृष्ट अवगाहना हजार जोज-
ननी, समुर्द्धिम उरपरिसर्पनी पृथक्त्व जोजननी, समु-
र्द्धिम चोपगानी पृथक्त्व गाउनी अने समुर्द्धिम चुज-
परिसर्प तथा समुर्द्धिम खेचरजीवोनी पृथक्त्व धनु-
ष्यनी उत्कृष्ट अवगाहना कही छे. तिर्यंच पचेंद्रिय
कोइ जीव लाभिधयोगे वैक्रिय शरीर करे तो जघन्य
अंगुलनो संख्यातमो ज्ञाग अने उत्कृष्ट नवसेंजोजन
सुधी करी शके छे.

समुर्द्धिम मनुष्योनुं उत्कृष्ट अने जघन्य देह-
मान अंगुलना असंख्यातमां ज्ञागनुं कहुं छे. गर्जज
मनुष्यनुं जघन्य देहमान अंगुलना असंख्यातमा ज्ञाग
जेटदुन्ने उत्कृष्ट त्रण गाउनुं कहुं छे. क्षेत्रनी अपे-
क्षाए पांच देवकुरुने पांच उत्तर कुरुक्षेत्रना मनुष्यनुं
उत्कृष्ट देहमान त्रण गाउनुं, पांच हरिवर्षिने पांच
रम्यकक्षेत्रना मनुष्यनुं उत्कृष्ट देहमान बे गाउनुं,
पांच हेमवंतने पांच औरएयवृत्तक्षेत्रना मनुष्योनुं उत्कृष्ट

देहमान एक गाउनु, ठण्ण अतरद्धीपना मनुष्योंनु
 उत्कृष्ट देहमान आरसे धनुष्यनु अने पांच महा-
 विदेना क्षेत्रना मनुष्योंनु उत्कृष्ट देहमान पांचसे धनु-
 ष्यनु कह्यु रे पांच ज्ञरतने पांच औरब्रतक्षेत्रमां पहेले
 आरे, धुरे (आरो वेसतां) त्रण गाउनु ने ठेके (आरो
 उत्तरतां) वे गाउनु, बीजेआरे धुरे वे गाउनु, ने ठेके
 एक गाउनु, त्रीजे आरे, धुरे एकगाउनु, ने ठेके पांचसे
 धनुष्यनु, चोथेआरे, धुरे पाचसे धनुष्यनु, ने ठेके
 सात हाथनु, पांचमे आरे, धुरे सात हाथनु, ने ठेके
 एक हाथनुं अने ठठे आरे, धुरे एक हाथनु, ने ठेके
 एक हाथ मारेख, देहमान आ अवसर्पिणी काळमां
 कह्यु रे कोइ मनुष्य लविधयोगे उत्तर वैक्रिय शरीर
 करेतो जघन्यअंगुलनासरयातमाजागजेटखु ने उत्कृष्ट
 तो लाख जोजनथी जाझेख पण करी शके

वैमानिकना दम्के जघन्य शरीर अगुलना अ-
 संख्यातमां जागनु उत्पत्ती काले होय ठे, अने उत्कृष्ट
 देहमान पहेला सौधर्म ने बीजा इशान देवखोके देव
 (देवी) नु सात हाथनु, त्रीजाने चोथा देवखोके

देवोनुं र हाथनुं, पांचमाने उषा देवलोके पाच हा-
थनुं, सातमाने आठमा देवलोके चार हाथनुं, नवमा,
दशमा, अग्नियारमा ने बारमा देवलोके त्रण हाथनुं,
नवग्रैवेयके बे हाथनुं अने अनुत्तर विमाने एक हा-
थनुं उत्कृष्ट देहमान कर्त्तुं थे.

असुर कुमार निकायना देवोना शरीर स्याम,
बायु कुमारना नीला, सुवर्ण कुमार, दिसिकुमार, ने
स्तनितकुमारना सुवर्ण जेवा पीळां, अग्निकुमार, वि-
द्युतकुमार, ने द्वीपकुमारना राता, अने नागकुमार तथा
उदधिकुमारना गौर वर्णवालां शरीर कहाँ थे. पिशाच,
चूत, यक्ष, महोरग अने गंधर्व निकायना देवोना
शरीरस्याम, किञ्चरना नीला, अने राक्षस तथा किं-
पुरुषना गौर(धोला)वर्णवालां शरीर कहा थे. ज्यो-
तिष देवो माँहे ताराडेना शरीर पंचवर्ण अने बीजा
सर्वेना तपावेला सुवर्ण सरखा वर्णवालां शरीर कहा
थे. सौधर्म अने इशान देवलोकना देवना शरीर राता
सुवर्ण सरखा कान्तिवाला, सनतकुमार, माहेष, अने
ब्रह्मदेवलोकना देवोना शरीर कमलनी केसराना स-

रखा कान्तिवाळा अने सांतकआडि उपरना सर्व देवलोकना देवोनो वर्ण एक चीजाथी उत्तरोत्तर उज्ज्वल, उज्ज्वलतर अने उज्ज्वलतम कह्यो रे

सिद्धना जीवोनी क्षेत्रावगाहना जघन्य एक हाथ ने आठ अगुलनी, मध्यम चार हाथने सोल अगुलनी अने उल्कृष्टी त्रणसे तेत्रीस धनुष्यने चत्रीस अगुलनी जाणवी

आ अवसर्पिणी काळमाँ त्रीजा, चोया आरामा चोबीस तिर्थकर थया तेमनु देहमान—रूपज्ञदेवनु ५०० धनुष्यनु, अजीतनाथनु ४५० धनुष्यनु, सज्जवनाथनु ४०० धनुष्यनु, अन्निनदननु ३५० धनुष्यनु, सुमतिना थनु ३०० धनुष्यनु, पद्मप्रज्ञनु २५० धनुष्यनु, सुपार्श्वनाथनु २०० धनुष्यनु, चडप्रज्ञनु १५० धनुष्यनु, सुविधिनाथनु १०० धनुष्यनु, शीतलनाथनु ८० धनुष्यनु, श्रेयासनाथनु ७० धनुष्यनु, वासुपूज्यनु ७० धनुष्यनु, विमलनाथनु ६० धनुष्यनु, अनन्तनाथनु ५० धनुष्यनु, धर्मनाथनु ४५ धनुष्यनु, शांतिनाथनु ४० धनुष्यनु, कुथुनाथनु ३५ धनुष्यनु, अरनाथनु ३० ध-

नुष्यनुं, मल्लिनाथनुं २५ धनुष्यनुं, मुनिसुवतस्वामिनुं २०
 धनुष्यनुं, नमिनाथनुं १५ धनुष्यनुं, नेमिनाथनुं १०
 धनुष्यनुं, पार्श्वनाथनुं ए हाथनुं अने वर्षमान स्वा-
 मिनुं ७ हाथनुं देहमान जाणेवुं.

॥ इति अवगाहनाद्वार ॥

अथ पांचमुं लेश्याद्वार.

जेणे करी जीव कर्म साथे आश्लेश पामे तेने
 लेश्या कहीए. ते लेश्याना वे ज्ञेद ढे, एक ऊऱ्यलेश्या
 तथा बीजी ज्ञावलेश्या, त्यां आत्माने काळा तथा
 पीछादिक ऊऱ्यरूप कर्म पुद्गल संयोग ते ऊऱ्य लेश्या,
 अने तेथी आत्माना शुज्ञाशुज्ञ परिणाम ते ज्ञावलेश्या,
 अर्थात् उ लेश्यानी कोइ एवी जातनी अनंती वर्गणा
 डे के तेमाथी आत्मानी योग प्रवृत्ति (मन वचन-
 कायनो व्यापार) ना अनुसारे लेश्यानी वर्गणा ग्रहण
 कराय ते ऊऱ्य लेश्या, अने तेथी जीव उपर अती
 असर ते ज्ञाव लेश्या जाणवी.

अशुज्ञ लेश्याथी अती अशुज्ञ असर, आत्माना
 स्वाज्ञाविक शुज्ञ अध्यवशाय उपर अती नथी, त्यां

झटांत कहे रे, जेम लालनु धोळा काचमां प्रतिवींव
 पके खरु, पण तेथी ते धोळो काच रगाय नहि
 अधोलोकमां प्राये (घणु करीने) अशुन्न झव्योजरे
 अने उर्ध्वलोकमां प्राये शुन्नझव्यो रे, माटे अधो-
 लोकमां अशुन्न झव्यलेश्या अने उर्ध्वलोकमा शुन्न
 झव्यलेश्याज ग्रहण थाय रे तेथी उर्ध्व अने अधो-
 लोकमा झव्यलेश्या अवस्थित रहे अने ज्ञावलेश्या
 फर्या करे रे ते लेश्याना नाम परिणाम, लक्षण वर्ण
 रस स्पर्श गध स्थानक स्थिती चवनगति अने दक्का-
 दिक कहे रे नाम कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म
 अने शुभ ए लेश्याना नाम जाणवा

परिणाम—झव्यलेश्याथी जीवना अध्यवशाय जे
 थाय रे ते परिणाम कहेवाय रे ते परिणाम जघन्य
 मध्यम उत्कृष्ट विगेरे घणा प्रकारना रे मूळ ते र
 लेश्याना परिणाम केवा होय ? तेने माटे कह्यु रे के
 ॥ गाथा ॥

पथाऊं परिद्भृष्टा, र पुरिस्सा अमवि मज्जा आरम्भि
 जबु तरुस्स हेठा, परुप्परतेवि चितेति ॥ ३ ॥

निमूल खंध साखा, सालागुहे पक्षेय पमिय सडियाइं,
जह एएहिं जावा, तह लेसाउं विनायवा, ॥ ३ ॥

मार्गथकी परिच्छष्ट थयेला एवा ड पुरुषो व-
नमां आरामलेवाने एक जंबुवृक्षनीहेठ(नीचे,) आवी
बेठा, ने माहोमाहे विचारवा लाग्या के आ वृक्षना
फल ज्ञाण करीने आपणे कुधातृषा समावीए, एम
विचारी एक पुरुष फलने अर्थे ते वृक्षने मूलथी ठे-
दवा लाग्यो, त्यारे बीजो कहे अमर्थी ठेदीए, त्रीजो
कहे मोटी काळाऊ ठेदीए, चौथो कहे नानी काळीऊ
ठेदीए, पांचमो कहे के फलनेज तोनीए त्यारे बढो
कहे के पृष्ठवी उपर खरी पमेला फल मध्येथी वीणी
खइए. जेम ए ड पुरुषना परिणाम जुदा जुदा तेम
कृष्णादीकथी मांकी यावत् शुक्ल लेश्याना परिणाम
पण जुदा जुदा जाणवा.

लक्षण—पांचे आश्रव, त्रण अगुस्ति, ड जीवनि
कायनी अब्रति, आरंजने विषे तिव्र परिणाम, ऊहि,
पापने विषे साहसिक, सुग (झुगंडा) सहित, निधवंश

परिणाम अने अजीतेंद्रिय वगेरेना व्यापारेसहित
जीवनापरिणाम ते कृष्णकेश्यानुंलक्षण जाणबु छर्पा,
अमर्पत अतपस्त्रि, मायावि, पापथकी वीहेनहि,
गृह (आशक्त), प्रमादी, रसनोखोलुपी, मायाग-
वेषी, आरंजी अवति अने पापनेविषेसाहसिक वि-
गेरेव्यापारेसहितजीवनापरिणाम ते नीलखेश्यानु
लक्षणजाणबु वाङु वाङु समाचरे, नीवरु माया
करे, सरल पणाथी रहित, सोढे जुदो अने पुरे जुदो,
मिथ्यात्वि, अनार्य, डुष्टवचनवोखे, चोर अने म-
ष्ठरी विगेरेना व्यापारेसहितजीवनापरिणाम ते
कापोतखेश्यानुंलक्षणजाणबु. अमाझ, अचपळ, अ-
कुतुहळी, विनित, दमितेंद्रिय योगवत, उपधानवत,
झडधर्मी, प्रियधर्मी अने पापथकी वीहे, ए विगेरे
व्यापारेसहित जीवनापरिणाम ते तेजोखेश्यानु ल-
क्षणजाणबु क्रोधमानमाया अने लोन्न ए चारे कपाय
पातळा, प्रशांत चित्त, (इंद्रियोने दमनार), योगवत,
उपधानवत, योकुवोखे उपशात अने जीतेंद्रिय वि-
गेरे व्यापारे सहित जीवनापरिणाम ते पद्मखेश्यानु

लक्षणजाणुं. आर्त रौद्र ध्यान वर्जी धर्मशुक्र ध्यान ध्यावे, प्रशांत चित्त, आत्म रमणता, पांच समितिए समित, त्रण शुस्तिए गुप्त, सरागी तथा वितरागी उपशांत चित्त अने जीतेक्रिय विग्रहेव्यापारे सहित जीवनापरिणामे ते शुक्रं लेश्यानुं लक्षण जाणुं.

वर्ण—स्त्रिघ्न मेघनीघटासरखो, ज्ञेसना शिगमानीगोळी, अंजण, खेंजण, अरिष्टरत्न, नेत्रकी कीको अने काळा सुरसाथी अनंत गुणो कृष्ण लेश्यामनो वर्ण महा न्ययकर जाणवो. अशोक वृक्षना अंकुर, नीबुचाशपक्षी अने वैरुर्यरत्नथी अनंत गुणो नीबु लेश्यानोवर्ण जाणवो. अलशीनाफूल, कोकीलानी पांख अने पारेवानाकंठना वर्णथी अनंतगुणो कापोत लेश्यानोवर्ण जाणवो. हिंगलोक, उगतो सूर्य, दिपकनी शीखा, पोपटनीचांच अने तपावेला लाल सोनानावर्णथी अनंतगुणो तेजो लेश्यानो वर्ण जाणवो. हरियालनो सध्यवर्ण, हुलदर अने सेणानाफूलना वर्णथी अनंतगुणो पञ्चलेश्यानो वर्णजाणवो. शंख, मचुंदनाफूल, इध, मूर्णचंदमा, सोतीनो हार अने

रुपाना वर्णथी अनतयुणो शुक्र, लेद्यानोवर्णं जाणवो
 — गध—गाय, श्वान अने सापर्नाशव (मुरुठा)ना
 गंधथी अनंतयुणो खराव गध कृष्ण, नीङ अने का-
 पोतलेद्यानोठे वासपीस, कपुर, कस्तुरी अने उ
 त्तम अत्तरोथी पण अनतयुणो प्रशस्त (स्पर्शो) गध
 तेजो, पंद्राअनेशुक्र-लेड्यानो जाणवो

रस—कर्कां तुबका, इडवारुणी, दीवसो अने
 रोहणना रसथी अनतयुणो कर्कोरेस कृष्णलेड्या
 नो जीणवो सूरु, मरी, पीपर अने गजपीपरना र-
 सथी अनतयुणोतीखोरस नीङलेड्यानोजाणवो काची
 केरी अने काचाकोठनारसथी अनतयुणो तुरोरस
 कापोतलेड्यानोजाणवो पाकाआवा, पाका कोठ अने
 पाकादीजोरानारसथी अनत युणो मीठोरस तेजो
 लेड्यानोजाणवो प्रधानवारुणी, (मटीरा)विविधप्रकार-
 ना आसवअने मधकरता अनतयुणोमीठोरस पंद्रालेड्या
 नोजाणवो. सजुर, ऊळ, छुध, साकर, खांन अने गोळथी
 अनतयुणो गळयो रस शुक्र लेड्यानो जाणवो
 स्पर्श—काकचीनीपाठका, गाँयनीजीन, -सागना

पत्र अने करवतनीधारथी अनंतगुणो करकश स्पर्श कृष्ण, नील अने कापोत लेश्यानो जाणवो, द्वरो नामनीवनस्पति, सरसवनाफुल अने मांखणथी अनंतगुणो सुकुमाळस्पर्श तेजो, पद्म अने शुक्रलेश्यानो जाणवो.

स्थानक-असंख्याती उत्सर्पीणी, अवसर्पीणीना जेटबासमयथाय, अथवा लोकनाजेटबाप्रदेश थाय तेटबा लेश्याना स्थानक ठे ते जाणवा.

स्थिति-लेश्याजीवनेकेटबोवखत रहे एम कहेबुं तेनुनामस्थितिकहेदाय. ठए लेश्यामांथी दरेकलेश्या लंबामांडरी(जघन्य) अंतरमुहुर्तरहेठे अने वधारेमां वधारे (उत्कृष्ट) कृष्णलेश्यानीस्थिति. तेव्रीससागरो-पमजपरअंतरमुहुर्तनीठे. नीललेश्यानी उत्कृष्टीस्थिति दशसागरोपमजपर पद्मोपमनोअसंख्यातमो ज्ञाग, कापोत लेश्यानी उत्कृष्टीस्थिति त्रणसागरोपमजपर पद्मोपमनोअसंख्यातमो ज्ञाग, तेजोलेश्यानी उत्कृष्टी स्थिति वेसागरोपमजपर पद्मोपमनोअसंख्यातमो ज्ञाग, पद्मलेश्यानी उत्कृष्टीस्थिति दशसागरोपमजपर अंतरमुहुर्त अने शुक्र लेश्यानी उत्कृष्टी स्थिति तेव्रीस

सागरोपमउपरथ्यतरंमुहुर्तं रे

च्यवन-कइ लेश्याएजीप कइ गतिमांजाय एम
जे कहेबुं तेनुनाम अहीं च्यवन कहेबुरे कृष्ण, नीब
अने कापोत एत्रणलेश्यावाळाजीवो च्यवी (मरी-)
ने झुरगति(नारकी तथा तिर्यच)मा जाय, अने तेजो
पद्म अने शुक्र एत्रणलेश्यावाळाजीवो च्यवीने सद्-
गति [मनुष्य अने देवगति]मा जाय

गाथा

अंतमुहुत्तमिगए ॥ अतमुहुत्तमि सेस ए चेव ॥
लेसाहि परिणयाहि ॥ जीवा वच्चति परखोय ॥

श्वर्ध-मनुष्य तथा तिर्यच ले परज्जवनी लेश्या
आव्यापठी, अतरमुहुर्तेमरणपामे, अने देवता तथा
नारकी पोतानी मुलगी (नवरथ) लेश्यानुमुहुर्ते
याकतु रहे [वाकी रहे] तेवरे मरणपामीने पर-
ज्जव जाय.

श्वपवहुत्व-कइलेश्याए जीवथोका अने कइ
लेश्याए जीवधणाहोय एमकहेबु ते श्वपवहुत्व रए
लेश्यामाहे सर्वथीथोकाजीवो शुभललेश्याए होय,

शुक्लेश्यावंतकरतां पद्मलेश्याए जीव असंख्य गुणा
होय, पद्मलेश्याथी तेजोलेश्याएवर्तता जीवो असंख्य
गुणाजाणवा, तेजोलेश्याएवर्तता जीवोथी कापोत-
लेश्याएवर्तताजीवो अनन्तगुणाजाणवा. कापोतलेश्या-
वंतजीवोकरतां नीललेश्याएवर्तताजीवो विशेषाधिक
अने नीललेश्यावंत जीवोथीपण विशेषाधिक कृष्ण-
लेश्यावंतजीवोकहाँ ठे, एटले सर्वलेश्यालंमां सर्वथी
अधिकजीवो कृष्णलेश्याएहोयठे.

गति—नरकगति, तिर्थचगति, मनुष्यगति अने
देवगति, एचारगतिठे तेनेविषे लेश्यानीस्थिति कहे
डे—पहेलीनरकगतिमां कृष्णलेश्यानी दससागरोपमा-
धिकपद्योपमनोअसंख्यातमोन्नाग जघन्य, अनेतेत्रीशः
सागरोपमनीउक्कुष्टीस्थिति डे, तथा नीललेश्यानीत्रण
सागरोपमाधिकपद्योपमनोअसंख्यातमोन्नागजघन्य
अने दससागरोपमाधिक पद्योपमनोअसंख्यातमो-
न्नाग उत्कृष्टीस्थितिठे. अने कापोतलेश्यानीदशहंजार
वरसनीजघन्यने त्रणसागरोपमाधिक पद्योपमनो-
असंख्यातमोन्नाग उक्कुष्टीस्थितिजाणवी. बीजी तिर्थ-

चंगति अने ब्रीजी मनुप्यगतिनेविषे उपेक्षेश्यानी
 जघन्यतथा उक्तुष्टीस्थिति अतरमुहुर्तनीरे, पण तेमा
 एट्डु विशेष जाणवुके मनुष्यगतिए शुक्लेश्यानी
 उक्तुष्टस्थिति केवलीमनुप्यनी अपेक्षाएनववरसउणी
 पूर्व क्रोमवरसनीहोयरे एट्डुविशेषजाणवु हवे चोथी
 देवगतिए समुदाये उपेक्षेश्याहोयरे तेमां कृष्ण
 लेश्यानीजघन्यस्थिति दशहजारवरसनी अने उ
 त्कुष्टीस्थितिएकपद्धोपमनाअसख्यातमान्नाग जेटली
 जाणवी, जेटली कृष्णलेश्यानीउक्तुष्टीस्थिति कः
 हीरे तेथी एकसमयअधिक नीललेश्यानी जघन्य
 स्थितिरे अने उक्तुष्टीस्थितिपद्धोपमना असख्यातमां
 न्नागजेटलीजाणवी, जेटली नीललेश्यानी उक्तुष्टी-
 स्थितिकहीरे तेथी एकसमयअधिक कापोतेश्यानी
 जघन्यस्थितिरे अने उक्तुष्टीस्थिति पद्धोपमनाअस-
 ख्यातमान्नाग जेटली जाणवी, हवे तेजोलेश्यानी
 जघन्यस्थिति दशहजारवरसनीरे अने उक्तुष्टीस्थिति
 वेसागरोपमउपर पद्धोपमना असख्यातमान्नागजेटली
 जाणवी, जेटली तेजोलेश्यानी उक्तुष्टीस्थितिकहीरे

तेथी एकसमयअधिक पद्मलेश्यानी जघन्यस्थितिर्हे अने उक्तषट्टीस्थिति दशसागरोपमअधिक अंतरमुहुर्तनीजाणवी, जेटली पद्मलेश्यानी उक्तषट्टीस्थितिकही ठे तेथी एक समयअधिक शुक्रलेश्यानीजघन्य स्थिति ठे अने उक्तषट्टीस्थिति तेब्रीससागरोपम उपर अंतर मुहुर्तनीजाणवी.

जेम लोटामां, नाना घनामां अने मोटाघकामांधी पाणीन्नरेखुंहोय तेमां ते दरेकमां असंख्याता जीवठे अने ते एकवीजानीअपेक्षाए थोक्का ऊक्का जीवकहेवाय ठे, तेम कृष्ण, नीब अने कापोत लेश्यानी उपर कह्या प्रमाणे पञ्चोपमनाअसंख्यातमान्नागनीउक्तषट्टी स्थितिकहीठे ते दरेक एक वीजाथी अधिक अधिकतर जाणवी केमके असंख्यातानाअसंख्यातान्नेदर्हे एम सर्वत्रजाणवुं.

चोवीश दंमके लेश्या.

नरक गतिमां कृष्ण, नीब अने कापोत ए त्रणलेश्या होय ठे, तेमां पहेलीअनेवीजीनरके एक कापोत लेश्या त्रीजी नरके कापोत थोक्की अने नीब

घणी, चौथी नरके एकनीखलेश्या पाचमीनरके नीखयो-
 मी अने कृष्णघणी, ठठीनरके एककृष्णखेश्या अने सात
 मीनरके महाकृष्णखेश्याहोयठे दशजुवनपतिनाढ़के
 प्रथमनी चारखेश्याहोयठे वादर अपर्याप्ता पृथ्वीकाय,
 अपकाय अने वनस्पतिकायनेविषे प्रथमनीचारखेश्या
 होय अने तेउए पर्याप्तिपुरीकर्यापर्ती तेजोसिवाय वाकी
 नीत्रणखेश्याहोयठे पृथ्वीकायादिकपांचे सुद्धम पर्याप्ता
 तथा अपर्याप्ता, वादर तेउकाय अने वाउकाय पर्याप्ता
 तथा अपर्याप्ता, विगलेंड्रिय पर्याप्तातथा अपर्याप्ता अने
 समुर्गीम तिर्यच पचेंड्रिय पर्याप्तातथा अपर्याप्तानेविषे
 प्रथमनीत्रणखेश्याहोयठे समुर्गीमसनुष्यने एककृष्ण-
 खेश्याहोय अने गर्जजतिर्यच तथा गर्जजसनुष्यने कृष्णा
 दिकठएखेश्याहोयठे व्यतर अने वाणव्यंतरने प्रथमनी
 चार खेश्याहोयठे ज्योतिषीए तथा पहेलेदेवलोके अने
 बीजेदेवलोके एक तेजोखेश्या त्रीजे, चोथे अने पांचमेदेव
 लोके एक पद्मखेश्या, ठठादेवलोकर्यीवारमा देवलोकसु-
 धी अने नवग्रैवेयके शुक्र खेश्यातथा पांच अनुज्ञर विमाने
 परमशुक्रखेश्याहोयठे सिद्धनाजीवो अखेश्यावतजाणवा

चोरीस दंडके

छ लेश्याना नाम.

लेश्याद्वार	१ कुण्डा	२ नीलं	३ काषाणं	४ तेजीं	५ पद्मं	६ शुक्लं	७ कुलं
नारकी १	१	१	१	०	०	०	०
दश भुवनपति १०	१	१	१	१	०	०	०
पृथ्वीकाय १	१	१	१	०	०	०	०
अपकाय १	१	१	१	०	०	०	०
तेजकाय १	१	१	१	०	०	०	०
वाऽकाय १	१	१	१	०	०	०	०
वनस्पतिकाय १	१	१	१	०	०	०	०
विगलेंद्रिय ३	१	१	१	०	०	०	०
गर्भजातिर्यंच १	१	१	१	१	१	१	१
गर्भजमनुष्य १	१	१	१	१	१	१	१
व्यंतर १	१	१	१	०	०	०	०
ज्योतिष १	०	०	०	०	०	०	०
वैमानिक १	०	०	०	१	१	१	१

॥ एवं लेश्या द्वार ॥

अंयर्थतु इङ्गियहार

इङ्गिय-इङ्ग एटले परमैश्वर्यवान् -आत्मा तेनु
 चिन्ह अथवाजीवेरचेल, सेवेद अने जीवाधिन ते
 इङ्गियजाणवी ते इङ्गियोपांचरे, १ स्पृशेडिय
 (चामकी), २ रसेंडिय (जीज्ञ), ३ प्राणेंडिय, (नाक),
 ४ चक्षुरिङ्गिय (नेत्र) अने ५ श्रोतेंडिय (कान),
 दरेकेइङ्गियो वेप्रकारेरे, एक इवेंडिय अने वीजी
 ज्ञावेंडिय

इवेंडिय ते निर्माणनामकर्म अने अगोपांग
 नामकर्मनाउदयथी प्राप्तथायरे, तेनां वेज्जेदरे, १
 निर्वृत्तिइवेंडिय अने २ उपकरण इवेंडिय, निर्वृत्ति
 इवेंडियनो वाह्य अने अन्यतर आकार रे, तेमां
 वाह्याकार जातिनी अपेक्षाए घणां प्रकारनो रे,
 जेमर्के-मनुष्यनांकान सुटरनेत्रनीवज्ज्ञेवाजुएरे, अश्व-
 नांकान उपखाज्जागमांनेअणीदारले अने हाथीनां-
 कान मोटाविशाळनेविजणा (पखा) ना आकारेरे
 अथवा कोइनां नाकचपटां, कोइना अणीदारहोयरे
 एवीरीते पांचेइङ्गियोनां वाह्याकार - घणांप्रकारनां रे-

अने अन्यतर आकारमां स्पैशेंड्रियनोआकार घण्ठ-
प्रकारनो एटले पोतपोतानां शरीरसरखो, रसेंड्रि-
यनोखुरपा (अस्त्रा) सरखो, ब्राणेंड्रियनो अतिमुक्त-
कपुष्पसरखो, चक्कुरिंड्रियनो मसुरनीदाळसरखो अने
ओतेंड्रियनो कदंव वृक्षनां फुलसरखो आकार भे, ए
प्रमाणे निर्वृत्ति अने स्वविषय ग्रहणकरवानी शक्तिरूप-
उपकरण ऊर्वेंड्रिय जाणवी.

ज्ञावेंड्रिय—मतिज्ञानावर्णादिकर्मोनां क्षयोप-
शमप्रमाणे स्वविषयजाणवानी के समजवानी शक्ति
ते ज्ञावेंड्रिय, तेनां वेजेदभे. एकलबिधज्ञावेंड्रिय
अनेबीजी उपयोगज्ञावेंड्रिय, लबिध ज्ञावेंड्रिय—जाति
अने गत्यादिकर्माथी अने जातिगत्यादिनेआव-
रणकरवावाळा एवा कर्मनां क्षयोपशमाथी जे शक्ति
उत्पन्नथायते लबिधज्ञावेंड्रिय कहेवाय भे. उपयोग
ज्ञावेंड्रिय—इंड्रियोने पोतपोतानां विषयोमांसावधानता
एटले जेझाननो व्यापारते उपयोग ज्ञावेंड्रिय कही भे.

स्पैशेंड्रियनो विषय उनो, टाढो, जारे, हळवो,
स्निग्ध, रुक्ष, मृदु अने बरसट भे, रसेंड्रियनो विषय

मीठो, खाटो, कपायेलो, तीखो अने करवो रे ग्रा-
णेंड्रियनो विषय सुगध अने ऊर्गध रे चकुरिड्रियनो
विषय धोळो, रातो, पीळो, नीलो अने काळो रे श्रो-
तेंड्रियनो विषय सचित, अचित अने मिश्र शब्द रे
वधारेमांवधारे (वैक्रिय शरीरनी अपेक्षाए) स्पर्श-
द्रिय, रसेंड्रिय अने ग्राणेंड्रियनी ग्रहण शक्ति नवजो-
जनसुधीनीरे, चकुरिड्रियनी ग्रहण शक्ति एक लाख
जोजनथी जाझेरी अने श्रोतेंड्रियनी ग्रहण शक्ति वार
जोजनसुधीनीरे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेलकाय, वाजकाय अने
वनस्पतिकाय ए पांच एकेंद्रियना दम्के एक स्पर्श-
द्रिय, शखविगेरे वेझद्रियना दम्के स्पर्श अने रस,
मांकण विगेरे तेझद्रियनां दम्के स्पर्श, रस अने ग्राण,
विंढी विगेरे चौरिंद्रियना दम्के स्पर्श, रस, ग्राण अने
चक्कु, नारकी, दश ज्ञवनपति, घ्यंतर, ज्योतिषी, वैमा-
निक, तिर्यच अने मनुष्यनां दम्के स्पर्श, रस, ग्राण,
चक्कु अने श्रोत ए पांच इद्रियो रे.

॥ एवं इंद्रियघातः ॥

अथ सातमुं समुद्घात धार.

समुद्घात—सम—एकीज्ञाव, उत्—प्रबलता,

धात् द्वय एकीज्ञाववरेकरी घणांजकर्मनोद्दयजेनी
अंदर तेनुनाम समुद्घात अथवा वेदनादिना प्रा-
वच्छयतावरेकरी एकीज्ञावना योगे घणांज कर्मद्वय
ठे जेक्षियानोअंदर तेनुनाम समुद्घात, ते समु-
द्घातसातठे, १ वेदनासमुद्घात, २ कषाय समु-
द्घात, ३ मरणसमुद्घात, ४ वैक्षियसमुद्घात, ५
तैजससमुद्घात, ६ आहारकसमुद्घात अन्ते ७ के-
वलीसमुद्घात.

वेदना समुद्घान—अत्यंत वेदनाऽत्पन्नथवा-
शी तेज्जीश्चांदरआत्मानु तन्मयपण्थद्वज्वुं अने तेमां
घणांजकर्मनोद्दयघवो तेनुनाम वेदनासमुद्घात.
ज्युरेजीवने अत्यंतवेदनाशायठे त्यारे पोतानाआत्म-
प्रदेशोवहारनीकले, ते नीकलेखा आत्मप्रदेशयी पो-
लाणनोज्ञाग पुरीदेने लांबाकाले ज्ञोगव्रतालायककर्मने
उदीरणाकरणावरेखेच्ची वर्तमानकालेज्ञोगवीले, जोके-

तेवखते कर्मोनोक्तय थाय, पण फरी अशातावेदनी-
यकर्मदल घणाज वधायरे अशाता वेदनीयनोज-समु-
द्धात थाय, पण शातावेदनीयनो समुद्धात नथाय
कारणके जेनी शांती नथाय तेनेमाटे समुद्धातहोय,
पण शांती थाय तेनेमाटे समुद्धात नहोय जेमके -
पोताने क्रोधादिउदयआव्यारता तेने विषे तन्मय न
थाय ने दवावीराखेतो समुद्धातथायनहि, पण क्रो-
धादिथयेठते तेने न दवावे [शांती धारणन करे]
ने तेने विषे तन्मय एटले एकी ज्ञाव थळ जाय, तो
समुद्धात थाय रे, वेदना-समुद्धातनो काळ अ-
तर मुहुर्तनो रे

कपायस्समुद्धात-ज्यारे जीघने तिव्रक्षयाय
थाय त्यारे, कपायनीप्रबलतावर्केकरीने एकीज्ञाव
[तन्मय] ना योगे पोताना आत्मप्रदेशो वहार
नीकले रे, नीकलेलाजीवप्रदेशथी पोलाणनोज्ञाग
पुरीदेहे - अने लावाकाळे ज्ञोगववालायक कपायने
उटीरणा करणवर्के खेंची वर्तमानकाळे ज्ञोगवी लेरे,
तेथी ते कर्मोनो तो क्षय थाय पण अच्युत परिणामु

वर्के वीजा नवा कर्म घणां वंधाय ढे. ते कथाय समुद्-
घातनो काळ अंतरमुहुर्तनो ढे ने पठीथी आत्म-
प्रदेशो शांत थइ जाय ढे.

मरण समुद्घात—ज्यारे जीवने अंतरमुहुर्त आ-
युष्य वाकीहोयत्यारे आत्मानाप्रदेशोने जे गतिमां
जवानुंहोयत्यांसुधीलंवाकेडे अने अंतरमुहुर्तनुं आयु-
ष्य ज्ञोगवीलेडे आव्रखते ते भवसवंधीना वाकीरहेसाँ
कर्मनोक्षयकरेडे पण ते समुद्घातथी नवांकर्मो बं-
धातानथी. मरणसमुद्घात असमाधीवालो जीवकरेडे.

वैक्रिय समुद्घात—ज्यारे जीवने वैक्रिय समुद्-
घात करवीहोय त्यारे वैक्रियनामकर्मवर्के वैक्रिययो-
ग्यपुज्जलग्रहणकरीने आत्मप्रदेशो बहार काढी अ-
नेकरूप करे ने वैक्रिय समुद्घात ज्ञोगवी लेडे. तेनो
काळ उत्तर वैक्रियशरीरनी विष्णुर्वणानाप्रमाणेजाणवो.

तैजस समुद्घात—ज्यारे जीवने तैजस समुद्घात
करवी होय, त्यारे तैजस नामकर्मवर्के पुज्जलोग्रहण
करी जेना उपर तेजो लेश्या मुकवी होय, त्यांसुधी
आत्मप्रदेशो खंबावे, जेनाउपर तेजो लेश्या मूकी होय

अने ते खेश्या जो शीतल होय तो तेने शांत करे ने
उष्ण खेश्याहोयतो बाली नाखेठे तैजस समुद्घात
नो काळ अतरमुहुर्तनो रे ।

आहारक समुद्घात-ज्यारे जीवने आहारक
समुद्घातकरवीहोयत्यारे आहारक शरीर नामकर्म-
चके करी आहारकनांपुङ्गलोखइने मुढाहाथ प्रमाण
शरीरकरे ने तेनीअदरआत्मानाप्रदेशो खेपवी महा-
विदेह केवने विषे तिर्थंकरनीक्षिजोवा अथवा कोइ
सूदगशकानुसमाधानकरवा मोक्षे रे ते आहारक
शरीरत्या जइ अतरमुहुर्तमां पातुआवी विसराळथइ
जाय रे

केवळी समुद्घात-ज्यारे केवळीने समुद्घात
करवीहोयत्यारे पोतानाआत्मप्रदेशोने बहार काळी
चौडराजलोकप्रमाण दम्करे, वीजेसमये ते प्रदेशोने
उत्तरदक्षिण लबावे, त्रीजे समये पूर्व, पश्चिम लबावे,
चोथेसमये आंतरापुरे अने पाचमेसमये ते आतरा-
सहरे, ठेसमये उत्तरदक्षिणना आत्मप्रदेश सहरे,
सातमे समये पूर्वपश्चिमना आत्मप्रदेश सहरे अने-

आठमेसमये दंस्तंहरे रे, केवलीसमुद्धातवके घण्ठा
कर्मनो झयकरे रे.

नारकी अने वाउकायना दंस्के वेदनी, कपाय,
मरण, अने वैक्रिय ए चार समुद्धात होयरे, पृष्ठी
काय, अप्पकाय, तेउकाय, वनस्पतिकाय, वेइंड्रिय,
तेइंड्रिय अने चौरिंड्रिय ए सातदंस्के, एक वेदना
बीजी कपाय अने त्रीजी मरण समूद्धात रे, दश-
जुवनपतिना दशदंस्क, व्यंतरनो एकदंस्क, ज्योति-
पीनो एकदंस्क, वैमानिकनो एकदंस्कने गर्जजतिर्य-
चनो एकदंस्क एम चौद दंस्के, वेदना, कपाय,
मरण, वैक्रिय अने तैजस एम पांच समुद्धात होयरे
अने गर्जज मनुष्यना दंस्के वेदना, कधाय, मरण,
वैक्रिय, आहारक, तैजस अने केवली एम साते
समुद्धात कही रे.

॥ इति समुद्धात छार ॥

अथ आठमुँ संघयण छार.

संघयण—सहनन एटखे हामना संधि विशेष
आप्त आय रे शरीरावस्थाना अवयवो जेणे करीने ते-

सहनन अर्थात् शरीरना हासनो दृढ़ दृढतरदृढतमवध
तेने सघयणकहीए, ते सघयण रे १ वज्ररुपज्ञ
नाराच, २ रुपज्ञनाराच, ३ नाराच, ४ अर्धनाराच, ५ की-
लिका, ६ सेवार्त्त

-वज्ररुपज्ञनाराचसघयण-वज्र-खीजी, रुपज्ञ-
पाटो, अने नाराच एटटो मर्कटवध वाढरीने तेनु
बच्चु वे हाथे आकमा जीमावे रे तेन साग्राना हा-
मना माहोमाहे आकमेआकमाजोमेजाहोय तेने
मर्कटवधकहेरे, एटखेहामने वेपासे मर्कटवध तेना
उपर वीजु पाटानीपेरे फरतु हाम्हु अने तेना उपर
त्रणे हामने आरपार खीजीरुप हाम्हु एओ अति
दृढहाढ सविकध ते वज्र रुपज्ञनाराच सघयण
कहेवाय रे वज्ररुपज्ञनाराचसघयणवालो कडि उ
चेथी पत्थरउपरपमेतो ते पत्थरना चुरेचूरा यऽ जाय
पण तेनी हामसधि त्रुटेके बरुटे नहि ए प्रथम
सघयणनो धणी अतिउल्कुष्ठमिशुष्ठ अध्यवसाये चढतो
पदवीना देवतामाहे उपजे अने कोइक कर्न खपान
केवलझानपानी मोद्देपणजाय, अत्यन्दृढतमसभि

वंधरुपपहेक्षासंघयणविना वीजासंघयणथी मोक्ष
साधीशकायनहि. अति अशुन्न अध्यवशाए करी
सातमी नारकीए पण वज्ररुषनाराच संघयण
वाळोज जाय ढे.

रुषननाराचसंघयण—वे पासेमर्कटवंध अने उपर
पाटो होय ते रुषननाराचसंघयणकहेवाय. ए
रुषननाराचसंघयणनोधणी अति उत्कृष्ट विशुद्ध
अध्यवसाये बारमा अच्युत देवलोक सुधी अने अति
संक्लिष्ट अध्यवसाये ठुर्फी नारकी सुधी जाय ढे.

नाराचसंघयण—वे पासे मर्कटवंध होय पण
उपरपाटोकेखीलिनहोय ते नाराचसंघयण क्रहेवाय.
ए नाराच संघयणनो धणी अतिउत्कृष्ट विशुद्ध
अध्यवसाये दशमाप्राणतदेवलोकसुधी अने अति
संक्लिष्ट अध्यवसाये पांचमी धुमप्रज्ञानारकी सुधी
जाय ढे.

अर्ध नाराच संघयण—हारुसंधिना एक पासाए
मर्कटवंध अने वीजा पासाए कीलिका होय पण बन्ने
पासाए मर्कटवंध, पाटोकेखीलिनहोय ते अर्ध नाराच

कहेवाय, ए अर्धनाराच सघयणनो धणी अति विशुद्ध अध्यवसाए करी ठेवट आरमा सहस्रार देवलोक सुधी अने अतिसम्प्रिष्ट अध्यवसाए चोथी पक्षप्रज्ञा नारकी सुधी जाय रे.

कीलिकासंघयण—हामसधिवध फक्त एक खी-
लिएज होय पण मर्कटवधके पाटोन होयते कीलिका
सघयण कहेवाय ए कीलिका सघयणनो धणी अति
विशुद्ध अध्यवसाए करी ठेवट रठालातक देवलोक
सुधी अने सम्प्रिष्ट अध्यवसाए त्रीजीवाळुका प्रज्ञा
नारकी सुधी जाय रे

सेवार्त्त—हामकाना ठेका लगे एक एक वीजानी
जौने लागेला होय एटले अमेलां होय पण खीलि
पाटो के मर्कट वध न होय ते सेवार्त्त सघयण कहे-
वाय. ए सेवार्त्त संघयणनो धणी अति विशुद्ध अध्य-
वसाएकरी ठेवट वहुमां वहु चोथा माहेंड देवलोक
सुधीजाय अने अति सक्रिष्ट अध्यवसाए ठेवट बीजी
शर्करा प्रज्ञा नारकी सुधी जाय ठे.

गर्जज—मनुष्य तथा गर्जज तिर्यंचना दंसके ठए संघयण होय, वेश्टिय, तेश्टिय अने चौरिंडिय एत्रण दंसकने विषे एक सेवार्त्त संघयण होय अनेनारकी, चुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषीने वैमानिक ए चौदंसक तथा पांच एकेंडियना पांच दंसकमळी उंगणीश दंसकना जीव ठए संघयणरहीत एटले असंघयणी कह्या डे, कारणके ए उंगणीशदंसकना जीवो ने हाड मांस होय नहि अने हारु मांस विना संघयण होतु नथी. केटलाएक आचार्यों तिर्यंच पंचेंडिय संमूर्धिम अने मनुष्य संमूर्धिमने ठए संघयण, पांचे एकेंडियने सेवार्त्त संघयण अने तेरदेवतानादंसके वज्ररुषन नारांच संघयण कह्ये पण ते कथन औपचारीक जाणदुं. तिर्थंकर, चक्रवर्ती, वल्लदेव, वासुदेव, तद्भव मोहगामी मनुष्य अने असंख्याता वरसना आयुषवाळा तिर्यंच तथा मनुष्योने पहेलुंज संघयण कहुं डे.

અથ નવમું સસ્થાન દ્વાર

સસ્થાન—જે આકૃતિયે પ્રાણીઊ રૂકી રીતે રહેવે
 એવો શરીરનો આકાર વિશેપ તેને સસ્થાન કહીએ તે
 સંસ્થાન વે પ્રકારે રે એક જીવસવધીને બીજુ અજીવ
 સવધી, તેમા જીવસવધી સસ્થાન ર પ્રકારના રે તેના
 નામ એક સમચતુરખ બીજુ ન્યાગ્રોધ, ત્રીજુ સાદિ, ચોયુ
 વામન પાચમુ કુદ્જ અને રઠુ હુંક બીજુ અજીવ
 સવધી સસ્થાન તે પાચ પ્રકારના રે તેના નામ, એક
 ચોખુણું, બીજુ ત્રીખુણું ત્રીજુ વાટલુ એટલે ચુરીના
 આકારે ચોયુ ગોલ એટલે યાલીના આકારે, અને પાચમું
 ખાબુ, એમ જીવ સવંધી અને અજીવ સવધી સંસ્થાન
 કદ્યા તેમા દ્વારે જીવસંવધી સસ્થાનનું અહિં પ્રયોજન
 રે, માટે તેનું વર્ણન નિચે પ્રમાણે જાણવુ.

સમચતુરખ સંસ્થાન—સમચોરસ આકાર જેમકે
 પર્યંકાસને વેરા રત્તા ચારેવાજુએ સરહુ માપ થાય તે
 આવી રીતે, જમણા ઢોંચણથી કાવા ઢોંચણ સુધીની
 જેટલી દોરી થાય તેટલીજ કાવા ઢોંચણથી જમણા

खन्ने ने जमणा ढींचणथी कावा खन्ने तथा पर्यंकाशन
नामध्यन्नागथी माथा सुधी एम चारे दोरी सरखी
थाय ते समचतुरख संस्थान अथवा पोताना एकसो
आठअंगुळ प्रमाण देहन्नराय एवुं सर्वांगसुंदर नखा
खद्धणवालुं ते समचतुरख संस्थान जाणवुं.

न्यग्रोध परिमंकल संस्थान-वक्षुक्षनीपेरे नानि
उपरनो नाग सुंदर प्रमाणोपेत सुखक्षणवान् अने
नान्निनी निचेनो नाग असुंदर अदक्षणोपेत होय ते
न्यग्रोध परिमंकल संस्थान जाणवुं.

सादि संस्थान-आदिनुं एटखे नान्निनी निचेनुं
सुखक्षण प्रमाणोपेत अने नान्निना उपरनुं असुंदर
अलक्षणोपेत होय ते सादि संस्थान जाणवुं.

वामन संस्थान-पीर, उदर अने हृदय ए हीन
खद्धणो होय अने मस्तक, कोट (कंठ), हाथ अने
पंग एटखां अवयवो सुखक्षणा प्रमाणोपेत होय ते
वामन संस्थान जाणवुं.

कुब्ज संस्थान-कुवरुं ते वामन करतां वीपरीत
एटखे पीर, उदर अने हृदय ए सुखक्षणा प्रमाणोपेत होय

वनस्पतिकाय ए पांच एकेऽङ्गियने, स्पर्शोद्रिय, कायवल
 ३ श्वसोश्वास अने ४ आयुष्य एम चार प्राण होयठे
 शख विगेरे वेष्टियने उपर कहेखा चार प्राणनी साथे
 रसेऽङ्गिय अने वचनबल सहित र प्राण होयठे कीमी,
 माकण, कानखजूरा विगेरे तेष्टियजीवोने उपर कहेखां
 र प्राणनी साथे घाणेऽङ्गिय सहित सात प्राण होयठे
 माखी, जमरा, जंमरीडु विगेरे चौरिद्रियजीवोने उपर
 कहेखा सात प्राणनी साथे चच्छारेऽङ्गिय सहित आठ
 प्राण होय ठे असझी तिर्यच पचेऽङ्गियने उपर कहेखा
 आठ प्राणनी साथे ओतेऽङ्गिय सहित नव प्राण होय
 ठे अने असझी (समूर्धिम) मनुष्यने वचनबल नहि
 होवाथी अने श्वासोश्वास पर्याप्ति पुरी न करे माटे
 ने सात के आठ प्राण होय ठे नारकी, दशलुवन
 ति, व्यतर, ज्योतिषी, वैमानिक, गर्जज तिर्यच पचें
 य अने मनुष्य ए सर्वसझीपचेऽङ्गियने पाच इद्रिय,
 वल, श्वासोश्वास अने आयुष्य एम दशे प्राण
 प्राणनी साथे जीवनेजे वियोग थार्य नाम
 नाय ठे, सिंग जीवोने शरीर नहि

मनुष्य तथा वारमा देवताके सुधीना देवो उत्तरवै-
क्रियशरीरकरेतो ते घणां प्रकारनां संस्थाने(आकारे)
करी शके छे. नवयैवैयक तथा पांच अनुत्तर विमान-
वासीदेवोने उत्तरवैक्रियशरीरकरवानीशक्ति ठे पण तेवा
शरीरनुं तेमनेप्रयोजननहिवोवार्थी कदीए उत्तरवैक्रिय
शरीरकरतांनथी. नारकीउत्तरवैक्रिय शरीर करे तो ते
पण शरीरहुंरुक संस्थानेज जाणवुं.

॥ इति संस्थान धार ॥

श्वथ दशमुं प्राणधार.

आणने धारण करे ते प्राणी-जीव कहेवाय छे.
प्राण बेप्रकारे छे एकऊव्यप्राण अने वीजुं ज्ञावप्राण,
तेमां शरीर संबंधीन्नवोपग्राही आत्मसंबंध ते ऊव्यप्राण
अने आत्मानाज्ञानादिगुणते ज्ञावप्राण जाणवां. स्प-
शेंड्रिय, रसेंड्रिय, प्राणेंड्रिय, चक्रुर्दियने श्रोतंड्रिय
तथा मनबल, वचनबल, ने कायबल अने आयुष्य
तथा श्वासोश्वास ए दश ऊव्यप्राण जाणवां, ज्ञान,
दर्शन, चारित्र अने वीर्य एचार ज्ञावप्राण कहां छे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय अने

वनस्पतिकाय ए पांच एकेंद्रियने, स्पर्शेंद्रिय, कायवल
 द श्वसोश्वास अने भ आयुष्य एम चार प्राण होयठे
 शख विगेरे वेझंड्रियने उपर कहेला चार प्राणनी साथे
 रसेंड्रिय अने वचनवल सहित ठ प्राण होयठे कीमी,
 माकण, कानखजूरा विगेरे तेझंड्रियजीवोने उपर कहेलां
 ठ प्राणनी साथे घाणेंड्रिय सहित सात प्राण होयठे
 माखी, ज्ञमरा, ज्ञमरीठ विगेरे चौरिंद्रियजीवोने उपर
 कहेलां सात प्राणनी साथे चछारेंड्रिय सहित आठ
 प्राण होय ठे असङ्गी तिर्यच पचेंड्रियने उपर कहेला
 आठ प्राणनी साथे थ्रोतेंड्रिय सहित नव प्राण होय
 ठे अने असंझी (समूर्धिम) मनुष्यने वचनवल नहि
 होवाथी अने श्वासोश्वास पर्याप्ति पुरी न करे माटे
 तेने सात के आठ प्राण होय ठे नारकी, दशजुवन
 पति, व्यतर, ज्योतिषी, वैमानिक, गर्जज तिर्यच पचें
 ड्रिय अने मनुष्य ए सर्वसङ्गीपचेंड्रियने पांच इंद्रिय,
 त्रणवल, श्वासोश्वास अने आयुष्य एम दशे प्राण
 होयठे. प्राणनी साथे जीवनेजे वियोग थाय तेनु नाम
 मरण कहेवाय ठे, सिद्धना जीवोने शरीर विगेरे नहि

होवाथी द्रव्य प्राणतो नथी पण निजआत्मगुण अनंत
ज्ञानादि चारे ज्ञावप्राण होय ढे.

॥ इति प्राण धार ॥

अथ श्रिगियारम्यं पर्याप्ति धार.

पर्याप्ति—पुज्जलोपचयजः पुज्जल ग्रहणपरिणमन
हेतुः शक्ति विशेषः—पुज्जलना उपचयथी थयो (जे)
पुज्जल ग्रहण परिणमन हेतुरूप शक्ति विशेष, तेने
पर्याप्ति कहे ढे.

जीवने एक गतिथी बीजी गतिए जातां साथे
तैजस अने कार्मणशरीर होयडे. ते शरीरवदे करीने जीव
यथायोग्य आहारने ग्रहण करे ढे ने पढी ए आ-
हारधाराए चार, पांचके ठ विज्ञागे जीववीर्य प्रवृत्ति
एट्टले शक्ति फोरवे ढे, केमके स्वयोग्य सर्वं पर्याप्ति
जीव साथेज आरंजे ने पुरी अनुक्रमे करे ढे. पर्याप्ति
डे ढे. १ आहारपर्याप्ति, २ शरीरपर्याप्ति, ३ इंद्रिय
पर्याप्ति, ४ श्वासोश्वासपर्याप्ति, ५ ज्ञाषापर्याप्ति, अने
६ मनपर्याप्ति.

प्रथम आहारने ग्रहणकरी परिणमावी रसस्व-

सादि जुदा करवानी शक्तिविशेष तेने आहारपर्याप्ति कहे ठे रसपणे परिणामने पामेल आहारने रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि (हास्कां) मज्जा तथा वीर्य एसातधातु पणे परिणामावीने शरीरनिपजाववानी शक्ति विशेष तेनेबीजी शरीरपार्याप्तिकहे ठे. सातधातु पणे परिणामने पामेल जे रस ते जेने जेटली इव्यंडियोजो-इप. तेने तेटली इंडियपणे परिणामाववानी जेशक्तिविशेष तेने इंडियपर्याप्ति कहे ठे, जे वने श्वासो श्वासयोग्य पुङ्गल ग्रहण करीने श्वासो श्वास पणे परिणामावी श्वासो-श्वासलेवा मुकवानी शक्तिविशेष ने श्वासो श्वास पर्याप्ति कहे ठे ज्ञापा वर्गणा योग्य पुङ्गल इव्यंडिय ग्रही वचनपणे परिणामावी अवलवी मुकवानी जे शक्तिविशेष तेने ज्ञापापर्याप्तिकहे ठे मनोवर्गणा योग्य पुङ्गल ग्रहण करी तेने मनपणे परिणामावी अवलवी लेवा मुकवानी शक्ति विशेष तेने मनपर्याप्ति कहे ठे

ओदारिक शरीरवाळो पहेली आहार पर्याप्ति एक समयमां अने धाकीनीबीजी सर्वेपर्याप्तितुं अनु-कमे अतर मुहुर्तमा एक पठी एक पुरण करे ठे, वै-

कियशरीरवालो एक शरीरपर्याप्ति अंतर मुहुर्तमां अने बाकीनीपांचेपर्याप्तिउ एक एक समयमां अनु-क्रमे एकपडी एकपुरीकरेबे.

आहार, शरीर अने इंद्रिय पर्याप्ति पुरी कर्या सिवाय कोइ जीव मरण पामे नहि. स्वयोग्य सर्व पर्याप्तिपुरीकरे तेने पर्याप्तो अने स्वयोग्य सर्वपर्याप्ति पुरीकरीनथी त्यांसुधीतेने अपर्याप्तो कहेवायठे. पर्याप्तिनां वे ज्ञेद ठे, एक लब्धिपर्याप्तिने बीजी करण पर्याप्ति स्वयोग्य सर्वपर्याप्ति पुरीकरी नथी पण करशे ते लब्धिपर्याप्ति अने स्वयोग्य सर्व पर्याप्तिपुरीकरी लीधी ठे तेने करणपर्याप्ति कहेठे. अपर्याप्ति पण वे प्रकारनी ठे एक लब्धि अपर्याप्ति ने बीजी करण अपर्याप्ति, स्वयोग्य सर्वपर्याप्ति पुरीकरशेजनहि तेने लब्धिअपर्याप्ति अने स्वयोग्य सर्व पर्याप्ति पुरीकरी नथी पण करशे तेने करण अपर्याप्ति कहेवाय ठे.

पर्याप्ति नाम कर्मना उदयथी लब्धिपर्याप्ति अने अपर्याप्ति नाम कर्मना उदयथी लब्धि अपर्याप्ति आप्त थाय ठे, पण करणपर्याप्ति अने करण

अपर्याप्ति नाम मात्रे, एकमना उदयथी अतीनथी
जेम देवतापर्याप्तिपुरीकरेज पणज्यासुधीपुरीकरीनथी
त्यां सुधी तेनु काढक नाम आपबु जोइए माटे तेने
करण अपर्याप्ति कहेरे, अने सर्वे पर्याप्तिरुपुरीकरी
खीधीरे एम जणाववानेमाटे तेने करण पर्याप्ति कहेरे

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय अने
वनस्पतिकाए एकेडिय जीनोने आहार, शरीर, डिय
अने श्वासोश्वास एम चार पर्याप्तिरु कही रे वेड-
डिय, तेडिय अने चौरिडिय तथा असज्जीपचेडियने
उपरनी चार पर्याप्ति साथे ज्ञापा पर्याप्तिसहित पाच
पर्याप्ति कही रे नारकी, दशञ्जुवनपति, व्यतर, ज्यो-
तिपी अने वैमानिक तथा गर्जजतिर्यच पचेडिय अने
मनुष्य ए सर्वे सङ्गी पचेडियने उपर कहेली पाच-
पर्याप्तिसाथे मनपर्याप्तिसहित रए पर्याप्ति होयरे-

॥ इतिपर्याप्तिद्वार ॥

... - श्रय नारमु योनीद्वार

योनी-उत्पत्ति-स्थानक-सामान्ये जेजे जीवना
उत्पत्ति स्थानक वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शे करा सरसा

होय, ते सर्वे एकजाती योनीमांहे गणीष्, जेम गो-
बरना गणमांहे जुदा जुदा कीमा, क्रमीआ, वीरी
विगेरे घणां जीव उपजे ढे, ते सर्वना जुदा जुदा
कुळ ढे, पण योनीतो एकज गणाय, एवी रीते गणतां
सर्व संसारी जीवोनी चोरासी लाख योनो ढे.

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजकाय, वाउकायनी सात
लाख अने साधारण वनस्पतिकायनी चौदखाख तथा
प्रत्येक वनस्पतिकायनी दशखाख योनी कही ढे, वे
झंडिय, तेझंडिय, चौरिंडियनी बब्बे लाख, गर्जज
तिर्यंचषंचेंडियनीचारखाख, नारकीनी चारखाख तथा
चारनिकायनादेवतानी चारखाख अने मनुष्यनी चौद-
खाख एम सर्वेमळी संसारीजीवोनी चोरासी लाख
योनीकहीडे अने सिद्धना जीवोनं शरीर नहि होवाथी
योनी पण नथी.

देवता तथा नारकीनी अचित्त योनी होयडे,
गर्जज तिर्यंच पंचेंडिय तथा गर्जज मनुष्यनी कांइक
सचित्तने कांइक अचित्तरूप मिश्र योनीडे अने एके-
डिय तथा विगलेंडियनीमांहे कोइकनी सचित्त, कोइ-

(एष)

कनी अचित्तने कोइकनी सचित अचित्तरूप मिश्रयोनी
 कहीरे देवता, नारकी अने एकेन्ड्रियनी योनी ढा-
 केक्षी होयरे विगलेंड्रियनी प्रगट (उघासी) अने
 गर्जज तिर्थंच पचेंड्रिय तथा गर्जज मनुष्यनी कांशक
 ढांकेक्षी ने कांशक प्रगट एटले गर्ज होवाथी वाहेर
 पेट मोटु देखाय अने माहे देखाय नहि तेमाटे एने
 काइक ढाकेली अने कांशक प्रगट एमवेप्रकारे योनी
 कहीरे साते नारकीमाहे केटलाएकनी उष्ण योनी
 ने केटलाएकनी शीतयोनी होयरे गर्जजतिर्थंचपचे-
 ड्रिय, गर्जजमनुष्य अने चारेनिकायनादेवतानो
 कांशकशीत अने कांशकउष्णरूप मिश्रयोनी होय ठे,
 तेउकायनी उष्णयोनी अने पृथ्वीकाय, अपकाय, वा
 उफाय ने वस्पतिकाय तथा वेडड्रिय, तेडड्रिय अने
 चौरिंड्रिय माहे कोइकनीउष्ण, कोइकनी शीतने को-
 इकनी शीतउष्णरूप मिश्रयोनीकहीरे

॥ इति योनी छार ॥

—३३५—

ଆଥ ତେମୁ କୁଳକୋଟି ଧାର.

॥ इति कुलकोटी धार ॥

श्रय चौदमु ज्ञानमार

ज्ञान—जेने करी वस्तुनु स्वरूप जाणीए, गुणपर्याये करी वस्तुनो निर्णय करीए तेनु नाम ज्ञान, अथवा सामान्य विशेषात्मक वस्तुने विषे विशेष ग्रहणात्मक जे घोध तेनु नाम ज्ञान कडेवायत्रे १ मनि ज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मन पर्यवज्ञान, अने ५ केवलज्ञान एम ज्ञान पांच प्रकारनुं रे पाच इंडिय तथा मनमने नियत वस्तुनु जीवने जे ज्ञान, तेनु नाम भतिज्ञान साज़लवे करी जाणीए एटले सम्यक प्रकारे शाल्व जाणवा, वाचवा तथा साज़लवाथी मननपूर्वक वस्तुनु जीवने जे ज्ञान थाय तेनुं नाम श्रुतज्ञान इंडियादिकनी अपेक्षा विना भर्यादा प्रमाणे रूपी वस्तुनु जीवने जे ज्ञान थाय तेनु नाम अवधिज्ञान, सङ्की पञ्चेडिय जीवना मनोगत ज्ञावनु अर्थात् मनचिंतित अर्थनु जीवने जे ज्ञान थाय तेनु नाम मन पर्यवज्ञान सूर्यो खोकाखोकनु तथा जीवअजीवना सर्व गुण पर्यायोनु तथा रूपी अरुपी सर्व वस्तुर्हनु जीवने जे ज्ञान थाय तेनु नाम केवलज्ञान

सर्व ज्ञानावरणी कर्मनोक्तय अवाशी, आवरणरूप उ-
 पाधी रहीत, केवलज्ञान सर्वथा एकज प्रकारतुं भे-
 अने वाकीना चारे ज्ञान ज्ञानावरणीय कर्मना क्यो
 पशम प्रभाणे होवाशी घणां प्रकारनां थे. मतिज्ञान
 ने श्रुतज्ञान परोक्त भे अने अवधिज्ञान, मनः पर्यव-
 ज्ञान तथा केवलज्ञान प्रत्यक्त कह्यां थे.

दश ज्ञुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक
 ए देवताना तेर दंसके तथा नारकी अने गर्जजे ति-
 थेंचपंचेंद्रियना दंसके सम्यकदृष्टि जीवने मतिज्ञान,
 श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान एम त्रण ज्ञान होय थे,
 बेंद्रिय, तेंद्रिय, अने चौर्दिय ए त्रण विकलेंद्रि-
 यना दंसके अपर्याप्तावस्थाए केटलाएक जीवोने म-
 तिज्ञान अने श्रुतज्ञान एम वे ज्ञान सिद्धांतने विषे
 कह्यां थे. गर्जज मनुष्यना दंसके पांचे ज्ञान कह्याबे.
 पांच एकेंद्रियना दंसके एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं हो-
 वाशी ते जीवोने ज्ञान होतुं नथी. सिद्धना जीवोने
 केवलज्ञान होय थे.

(१०१)

श्रथ पदसु श्रज्ञानद्वार

अह्नान—अनंत धर्मात्मक वस्तुने मोहनीकर्म
 ना उठयथी एकरूप पुण्यकरीजाणे, ससार हेतु तेने
 मोक्ष हेतु जाणे, एकाते ग्रहण करवारूप अथवा त्याग
 करवारूप एम एकातेज वस्तु स्वरूप माने पण उन्नय
 रूप नजाणे, माटे मिथ्यात्वना उडये करीने मिथ्या-
 त्वीनु जाणपणु ते अजाणरूपज होय तेनु नाम अ-
 ज्ञान कह्या रे १ मतिअज्ञान, २ श्रुतअज्ञान, ३ वि-
 ज्ञगज्ञान एम त्रण प्रकारना अज्ञान कह्या रे

तेर देवताना दमक एक गर्जज मनुष्यनो तथा,
 एक गर्जज तिर्यचनो अने एक नारकीनो दमक एम
 सर्व मळीने सोळदमकने खिपे त्रण अज्ञान लाजे अने
 पाच एकेंड्रियना तथा त्रण विग्लेंड्रियना दमके एम
 आठदमके एक विज्ञगज्ञान विना वाकीना वे अज्ञान
 कह्या रे.

॥ ५५ श्रज्ञान द्वार ॥

श्रथ सोब्बमु दर्शन द्वार

दर्शन—सामान्यपणे निराकारोपयोगरूप वस्तु

नो जे अवबोध तेनुंनाम दर्शन १ चक्रुदर्शन, २ अचक्रुदर्शन, ३ अवधिदर्शन, ४ केवलदर्शन एम चार प्रकारे दर्शन थे.

चक्रुदर्शन-घटादि पदार्थोंने आंखोवके सामान्य पणे देखवुं ते. अचक्रुदर्शन एटले चक्रु सिवाय वाकीनी इंडियो जे स्पर्शन, रसन, ग्रागन, श्रोतन अने नोइंड्रिय जे मन एणे करी शब्दादिक अर्थनो जे सामान्यावबोध थाय ते अचक्रुदर्शन, ऊव्य, केत्र, काळने ज्ञाव ए चार मर्यादा मांहे रह्यां जे रुपी ऊव्य तेनो सामान्यावबोध ते ब्रीजुं अवधिदर्शन, सर्वऊव्यनो सामान्यावबोध ते निरावरण अप्रतिपातीएवुं चोथुं केवल दर्शन जाणवुं. ए चारं दर्शन अनाकार डे, कारणके जाति, गुण, क्रियादिक विशेषण रहित तथा वस्तुना आकारं रहित केवल आकांइकडे पवुं देखीए तेनुं नाम दर्शन कहुं डे.

पृथ्वीकायादि पांच एकेंड्रियना पांच दंरुक, वे इंड्रियनो एकदंरुकअने तेइंड्रियनो एक दंरुक एम सात दंरुकने विषे एक अचक्रु दर्शन होय, चौर्हिंड्रि-

यनादंके चकुदर्शन तथा अचकुदर्शनकहुँ थे
 तेर देवताना दर्क, एक नारकीनो दर्क अने एक
 तिर्यंच पचेंडियनो दर्क एम पदर दंकने विषेच-
 कुदर्शन, अचकुदर्शन अने अवधिदर्शन एम ब्रण द-
 र्शन होय अने मनुष्यना दर्के केवलदर्शन सहीत
 चारे दर्शन होय थे, सिज्जना जीवोने एक केवलद-
 र्शन होय थे

॥ इति दर्शन द्वार ॥

अथ सत्तरमु दृष्टि द्वार

दृष्टि-जे अवस्थोकनकरबु तेने दृष्टिकहीए
 ते दृष्टि ब्रण प्रकारे थे १ सम्यग् दृष्टि, १ मिथ्या-
 त्वदृष्टि अने ३ मिश्रदृष्टि तेमां श्री वितरागे कहेलां
 चस्तुतत्वनु ज्ञानयाय ते प्रथम सम्यग् दृष्टिजाणवी
 सम्यग्दृष्टिना खक्षणयी जे विपरीतते बीजी मिथ्या
 त्वदृष्टि तथा सारु अथवा मात्रु ज्ञान वेहुने विषे
 जे खरापणानु याय ते ब्रीजी मिश्रदृष्टि जाणवी.

पृथ्वीकायादिकपांच एकेंद्रियनादंके एक
 मिथ्यात्वदृष्टिथे, विगलेंद्रियनाभ्रणदर्कके एक मिथ्या-

त्वद्दिष्टि अने वीजी सम्यक्त्वद्दिष्टि एम वे द्दिष्टि कहीरे कारणके जे जीव परन्नवशी सास्वादन सम्यक्त्व सहीत आवे ठेतेने अपर्याप्तावस्थाए सम्यक्त्व द्दिष्टि होय रे ते अपेक्षाए विगलेंद्रियना दंकके वे द्दिष्टि जाणवी, तेर देवताना दंकके गर्भज सनुष्य अने तिर्थचना दंकके तथा नारकीना दंकके एम सोळ दंकके ब्रण द्दिष्टि कही रे. पण एमाँ नव ग्रेवे यके एक सम्यक्त्व अने वीजी मिद्यात्व ए वे द्दिष्टि लान्ने तथा पांच अनुक्तर विज्ञाने एक सम्यक्त्व द्दिष्टिज लान्ने तथा समुर्च्छिम तिर्थचने सम्यक्त्व अने मिद्यात्व ए वे द्दिष्टि लान्ने अने समुर्च्छिम सनुष्यने एक मिद्यात्व द्दिष्टि कही रे.

॥ इति द्दिष्टि द्वार ॥

छाई अदारमुं योगद्वार-

योग-युक्तयुं तेने योगकहीए अथवा जीवना वलवीर्य, शक्ति, प्रराक्रमने योग कहीए, अथवा योग एटले व्यापार त्रयोग त्रणप्रकारनारे मन १ योग २ वचन योग अने ३ काययोग,

मनयोग एट्ले मननोव्यापार ते चारप्रकारे
रे १ सत्यमनोयोग, २ असत्यमनोयोग, ३ सत्यासत्य-
मनोयोग अने ४ असत्याअमृपा मनोयोग वचन-
योग एट्ले ज्ञापानो व्यापार ते चारप्रकारे रे १ सत्य
वचनयोग २ असत्य वचनयोग ३ सत्यासत्य (मिश्र)
वचनयोग अने ४ असत्याअमृपा वचनयोग, काय-
योग एट्ले कायानोव्यापार ते सातप्रकारे रे
१ औदारिक काययोग २ औदारिक मिश्र काययोग
३ वैक्रिय काययोग ४ वैक्रिय मिश्र काययोग ५ आ-
हारक काययोग ६ आहारकमिश्रकाययोग अने
७ कार्मणकाययोग ए प्रमाणे घधामळीने पठर-
योग कहा रे

सत्य मनयोग एट्ले वस्तुने वस्तुरूपे चितव्ववी
जेमके जीवादिक पदार्थ उद्द्यरूपे नित्य, पर्यायरूपे
अनित्य एम अनेकांतपणे चितव्ववु ते सत्य मनयोग
अने तेथी विपरीत ते असत्य मनयोग जेम जीवा-
दिक पदार्थ एकांतपणे नित्य विश्वव्यापी इत्यादिक
चितव्ववु तेनुं नाम असत्यमनयोग सत्यासत्य मनो-

योग एटले कांइक साचुं कांइक जुरुं एम मिश्र नावेचिं-
तवबुं जेमके आजे गाममां दश जनस्या दश मुआ
एम अनुमाने कांइक साचुं जुरुं चिंतवबुं. असत्या
अमृषामनोयोग एटले आनुं अमुक नाम ढे, आ
अमुक जात ढे, आ वस्तु लाव. आ वस्तु खे इत्या-
दिक चिंतवबुं तेथी जीनवचन विराधाय नहि माटे
जुर पण नहि अने साच पण नहीं एबुं व्यवहारिक
चिंतवबुं. साचा वचननुं आत्मानीसाथेजोरुं ते सत्य
वचनयोग, असत्यवचननी साथे आत्माने जोरुं
ते असत्यवचनयोग, कांइक सत्य अने कांइक अ-
सत्य एम मिश्रनाषा बोले ते सत्यासत्य वचनयोग,
हे देवदत्त चोपर्मी लाव ब्रह्मदत्त अमुक गाम गयो
एम बोलबुं अर्थात् आमंत्रण, याचना विगेरे करतु
ते सत्याअमृषावचनयोगजाणवो. औदारिक श-
रीरने योगे जे जीवनो व्यापार ते औदारिक काय-
योग, अने अपर्याप्तवस्था ए मनुष्य अने तिर्यंचने
कार्मण साथे मिश्र जे औदारिक पुज्जलजन्य व्या-
पारने औदारिक मिश्रयोग जाणवो. वैक्रिय शरीरने

(१०७)

योगे जे जीवनो व्यापार ते वैक्रिययोग अने देवता
तथा नारकीने अपर्यासावस्थाए कार्मण साथे मिश्र
जे वैक्रिय पुङ्गल अथवा मनुष्यादिकने उत्तर वैक्रिय
करतां ज्या सुधी तेनीपर्यासिपुरीयइनधी त्या
सुधी औदारिक पुङ्गल साथे वैक्रिय पुङ्गल मिश्र होय
तेनाथी थतो जीवनोव्यापार ते वैक्रियमिश्रयोग
जाण्वो आहारक शरीरनेयोगे जे जीवनो व्यापार
ते आहारक काययोग अने आहारकशरीर करतां
ज्यां सुधी तेनीपर्यासिपुरीकरीनधी त्यां सुधी
औदारिक शरीर साथे आहारक मिश्र होय तेनाथी
यतो जे जीवनो व्यापार ते आहारकमिश्रयोग
जाण्वो. सातमुं कार्मण काययोग एटले कर्मदळ
साथे आत्मप्रदेशनु भळवुं ते कार्मण शरीर कहीए
तेणे करी परज्ञवादिकथी आगमन शक्ति तेनु नाम
कार्मणकाययोग जाण्वो, तैजस शरीर अने कार्मण
शरीर सर्वदा होय तेथी तैजस काययोग मांहेज
गण्यो दे एम जाणवुं

देवताना तेर द्रुक, नारकीनो एक दंडक एम

चौद दंरुके मनना चार, वचनना चार तथा वैक्रिय-
 काययोग, वेक्रियमिश्रकाययोग अने कार्मणकाय-
 योग ए त्रण योग कायाना मळीने अगियार योग
 कहां भे. तिर्यंचना दंडके एक आहारककाययोग
 अने बीजो आहारक मिश्रकाययोग वर्जीने वाकीना
 तेर योग कहां भे, गर्जजमनुष्यना दंरुकनेविषे
 पंदर योग होय भे. वेइंडिय, तेइंडिय अने चौ-
 रिंडियना दंरुके एक औदारिककाययोग, बीजो औ-
 दारिक मिश्रकाययोग, त्रीजो कार्मणकाययोग अने
 चोथो असत्यासृष्टावचनयोग एम चार योगकहां भे.
 वाजकायना एकदंरुकनेविषे एक औदारिककाययोग,
 बीजो औदारीकमिश्र काययोग, त्रीजो वैक्रियकाय-
 योग, चोथोवैक्रिय मिश्र काययोग, अने पांचमो कार्म-
 णकाययोग एम पांचयोग कहां भे. पृष्ठवीकाय, अप-
 काय, तेलकाय अने वनस्पतिकायना दंरुके एक औदा-
 रिक काययोग, बीजो औदारिकमिश्रकाययोग अने
 त्रीजो कार्मण काययोग एम त्रणयोगकहां भे, सिद्धना-
 जीवो अंयोगी भे. . . ॥ इति योगद्वार ॥

अथ उपयोग द्वारा

उपयोग—वस्तुस्वरूपने उल्लखिता, जाणवा, प्रकाशवाने विषे जेउपयोगीहोय तेनुनाम उपयोग पृजीवनुलक्षण जीवस्वज्ञावचेतनारूपजाणबु, ते उपयोग साकार अने निराकार एम वे प्रकारनो ते तेमां दरेकवस्तुने नियमेकरीप्रहणकरवी एज तेनो परिणामरूपआकार तेजेनेकरीनेयाय ते पांचज्ञान अने त्रणञ्चज्ञानरूप आठ प्रकारे साकार उपयोग जाणवो अने ए लक्षणोयीजीन्न उपयोग ते निराकारचार प्रकारना दर्शनरूपजाणवो साकारने निराकार घने मलीने वार प्रकारना उपयोग कहां ठे.

मनुष्यना दम्के वारउपयोगहोयठे नार-
कीनो एकदम्क, तिर्यचपचेडियनो एकदम्क
तथा देवताना तेरदम्क ए पदरदम्कनेविषे के-
वलज्ञान, केवलदर्शन अने मन, पर्यव ज्ञानविना-
वाकीना नवउपयोगहोयठे वेझडिय तथा तेझ-
डियना दम्के एक मतिज्ञान वीजु श्रुतज्ञान त्रीजु

मतिअङ्गान चोशुं श्रुत अङ्गान अने पांचमुं अचक्षु
दर्शन ए पांच उपयोग होय, अने चौरिंद्रियना दंसके
ए पांच उपयोगनीसाथे एक चक्षुदर्शनसहीत ड
उपयोग होय ठे, पृथ्वीकायादि पांच थावरना दंसके
एक मतिअङ्गान बीजुं श्रुतअङ्गान अने त्रीजुं अ-
चक्षुदर्शन एम त्रणउपयोगहोय. समुर्द्धिम तिर्थंचने
मतिङ्गान, श्रुतङ्गान, मतिअङ्गान, श्रुतअङ्गान, चक्षु-
दर्शन अने अचक्षुदर्शन ए ड उपयोग कह्या ठे. स-
मुर्द्धिम मनुष्यने मतिअङ्गान, श्रुतअङ्गान, चक्षुदर्शन
अने अचक्षुदर्शन एम चार उपयोग कह्या ठे. सिद्ध-
ना जीवने एक केवळदर्शन अने बीजुं केवळङ्गान
ए बे उपयोग जाणवा. एक समये जीवने एक उप-
योग होय. डदमस्थ जीवने पहेले समये दर्शन अने
बीजे समये ङ्गान तथा केवळीन्नगवानने तो पहेले
समये ङ्गान (विशेषावबोध) अने बीजे समये दर्शन
(सामान्याव बोध) होय ठे.

अथ वीशमु गुणस्थानकद्वार

गुणस्थान—गुण जे जीवना ज्ञान, दर्शन, चारि-
त्रादि गुण तेनुं स्थान अशुद्ध, शुद्ध, शुद्धतर, शुद्धतम
विंगेरे अध्यवसायने गुणस्थानक कहेरे, जो पण जी-
वना असंख्याता अध्यवसाय स्थानक ज्ञेदे असरय
गुणस्थानक होयरे तो पण स्थुल व्यवहारे चौद गुण
स्थानक कहां रे तेनां नाम १ मिश्याद्विषि गुणस्था-
नक, २ सास्वादन गुणस्थानक, ३ मिश्रद्विषि गुणस्थानक,
४ अविरति सम्यक् द्विषि गुणस्थानक, ५ देशविरति
गुणस्थानक, ६ प्रमत्त सयत गुणस्थानक, ७ अप्रमत्तस-
यत गुणस्थानक, ८ निवृत्ति अथवा अपूर्व करण गुण
स्थानक, ९ अनिवृत्ति—वादर सपराय गुणस्थानक,
१० सूदम सपराय गुणस्थानक, ११ उपशातमोहवी-
तराग गुणस्थानक, १२ क्षीणमोहवी वीतराग गुणस्था-
नक, १३ सजोगी गुणस्थानक, १४ अयोगी केवळी
गुणस्थानक एम चौद गुणस्थानक जाणवा.

मिश्यात्व एटले जीन वचनथी विपरीत दृष्टी,
जेम धतुराना वीज खाधे थके श्रेत वस्तुने पण पी-

लीवस्तु जाणे रे तेम मिथ्यात्व मोहनीयना जोरथी
 रागद्वेष मोहादिक अढार दोषे सहीत अथवा सं-
 सारना हेतु एवा स्त्री हथियार वगेरे चिन्हे करीने
 सहीत होय तेने पण देवकरी माने धनधान्य स्त्री
 वगेरेमां आसक्त परिह्रादिक गुरुना लक्षणे हीनने
 गुरु करी माने हिंसादिक अधर्मने धर्म करी माने
 एने मिथ्यात्व कहीए. एवा मिथ्यात्व उद्यवंत जीव
 पण कोइक देखादेखीए, कोइ सुगतिनी अन्निकाषे
 तथा कोइ नम्बकजीव मोक्षहेतु क्रिया करे माटे तेने
 मिथ्यात्व गुणस्थानक कहीए अथवा एकांशे घटादि-
 कनी मान्यता अविरुद्ध पण होय ते कारणे अने अ-
 क्षरनो अनंतसो ज्ञान जीवने सदा सर्वदा उघानो
 रहे अवराय नहि ते गुणने लीधे पण मिथ्यात्व उ-
 द्यवंत जीवने मिथ्यात्व गुणस्थानक कहुँ डे. औपश-
 मिक सम्यकत्व वंत जीव अनंतानु बंधो कषायना
 उदये औपशमिक वमता कीरना स्वाद सरखो ज्ञाव
 मिथ्यात्व गुणस्थानक पास्या पहेला जे जीवने होय
 ते सास्वादन सम्यक् दृष्टी गुणस्थान बीजुं जाणवुं

मिश्रमोहनीना उठयथी जीवने रुची के अरुची ए
 बन्ने न होय एवा जे अध्यवसाय ते मिश्रदृष्टि गुण-
 स्थानक त्रीजु जाणवु विरति गुण जाणतो वतो पण
 अप्रत्याख्यान कपायोदये विरति आदरी न शके पण
 तत्त्वरुची, सम्यवत्ववत जीनवचन यथावस्थितपणे
 परिणमे तेनुं नाम अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानक
 औशु जाणवुं प्रत्याख्यानी कपायोदये सर्व विरति-
 पणुं तो न आदरी शके, पण कांइक असे सावध्य
 घोगनी विरति करे. जेम निरपराध, निरपेक्ष, सक-
 दृष्टि, प्रसजीवने न हणवो, इत्यादिक सम्यक्त्व
 सहीत अध्यवत्ताय अथवा सम्यक्त्वसहीत एक
 नवकारसी करे एवा अध्यवसाय ते देशविरतिसम्य-
 क्दृष्टिगुणस्थानक पांचमुं जाणवु देशविरतिगुण
 स्थानकथी अनतगुण विशुद्ध सर्व विरतिरूप चारित्रना
 अध्यवसाय पण प्रमादेकरीनेसहीतहोय तेनु
 नाम प्रमतसयत गुणराणु ठु जाणवु प्रमादपाच
 प्रकारे, भद, विषय, कपाय, निझा अने विकाश,
 ते पांचेप्रमादयीरहीत अन गुरविशुद्ध, निश्चय

चारीत्रे स्थिरतारुप अध्यवसाय ते सातमुं अप्रमत्-
 संयतनामनुं गुणस्थानक जाणबुं पूर्वे नहि पामेखा
 एवा अत्यंतविशुद्धअध्यवसायेकरी चारीत्रमोह-
 नीनी एकवीस प्रकृति उपशमाववा अथवा खपा-
 ववाने अर्थे रसघात, स्थितिघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्रम
 अने अपूर्वस्थितिवंध ए पांचवाना धुरसमयथी
 करे ते आठमुं अपूर्वकरणगुणस्थानक जाणबुं; अथवा
 एक समये अनेकजीव ए गुणस्थानकेचढे पण अ-
 ध्यवसाय, शुद्ध, शुद्धतरादिके निवृत्ति एटले फेरफार
 होय माटे ते आठमागुणस्थानकने निवृत्तिगुण-
 गुणस्थानक पण कहे डे. नवमे गुणस्थानके एक समये
 घणा जीव चढे पण तेढऱ्हना अध्यवसायमा फेरफार
 न होय माटे तेनुं नाम अनिवृत्तिगुणस्थानक अथवा
 बादर एटले मोटाखंड अने संपराय एटले कषाय-
 ना आ गुणस्थानके जीव करे एटले कषायना उप-
 शमाववाके खपाववाने अर्थे घगाखंडकरे तेथी तेनुं
 नाम बादरसंपरायनामा नवमुं गुणस्थानक जाणबुं
 सूद्धम डे संपराय एटले किंद्रीकृत लोन्नकषायनो

उदय ज्या ते सूक्ष्म सपराय नामे दर्शमु गुणस्थानक जाणबु जेम मेलवालुपाणी शान्तथवाथी मेल निचे वेसे ने पाणीनिर्भलथाय अथवा 'जणाय तेम ज्यां मोहनीकर्मनोउपशमथाय तेनुनाम उपशांतमोह गुणस्थानक अगीयारमु कब्बु ठे पाणी मा मळ ठे ते पाढु नोळावाथी अपस्यमळीन याय, तेम आ गुणस्थानकपामेताजोग्ने कपाय सत्तामा ठे तेथी त्यांयो अवस्य पमेज एम जाणबु, सर्व मोहनीप्रकृतिहयथता, सत्तामांयो पण मोहनीकर्मटळीजतां अत्यंत विशुद्धअध्यवसायस्थानक ठे ज्यां तेनु नाम क्षीणमोहगुणस्थानक वारमु जाणबु वारमागुणगणेथी कोडजीव पंके पण मरणपामे नहि मन, वचनने काययोगसहीत वर्ते अने धाती कर्मनाक्षयथकी केवळज्ञान ह्रोय ते सयोगी केवळी गुणस्थानक तेरमु जाणबु त्रणेयोगनो रोध करे एटके घाटर मनवचनने कायाना व्यापारने अज्ञावे, मेरपर्तनी पेरे नि प्रकप शेलेसोकरणकरता, अयोगी केमळी गुणस्थानक चौडमु जाणबु ते चौदमाउण-

इत्यनुसृत उद्देश्य सम्बन्धे जीवक्रमानुशीलमाक प्रत्ये
रत्ते ते.

जीवक्रमानुसृतस्थानकर्त्तस्यिति अन्तर्भुक्तं इत्यनुसृत अनादीकर्त्तत अनेऽन्यनीश्रेपे
इत्यनुसृतस्थानकर्त्तत तथा समक्षीयी परंप्रा जीवनी
जीवक्रमानुसृतस्थान तंशी जघन्यथी अंतरमुहुर्त
रत्ते उद्देश्य उद्देश्यी अर्थमुञ्च परावर्तजेटषी कही
ते. एतत् इत्यनुसृतस्थानकर्त्तस्यिति जघन्यथी
इत्यनुसृत कर्ते उद्देश्यी उ आवसीका जाणवी.
जीवक्रमानुसृतकर्त्तस्यिति जघन्य तथा उद्देश्यी
उ इत्यनुसृत उद्देश्यी कही ते. चांचा अविरति
इत्यनुसृतकर्त्तस्यिति जघन्य अंतरमुहुर्त
उद्देश्य उद्देश्यी सामरोपमयी जामरी कहा ते.
उद्देश्य उद्देश्यी युस्थानक ठहु प्रमत्युणस्था-
नुहु इत्यनुसृतस्थानकर्त्तत ए दरेक गुण-
मुक्ति उद्देश्य उद्देश्यी सामरोपमयी जघन्य
उद्देश्य उद्देश्यी कोक वर्धनी कही ते. सातमुं अप्रमत,
उद्देश्य उद्देश्यी वर्धनी कही ते. सातमुं अनिवृत्तिवादरसंपराय,

उद्य ज्या ते सूक्ष्म सपराय नामे दशमुं गुणस्थानक जाणवु जेम मेलवाळुपाणी शान्तयवाची मेलनिचे वेसे ने पाणीनिर्भलथाय अयंवा जणाय तेम ज्या मोहनीकर्मनोउपशमथाय तेनुनाम उपशातमोह गुणस्थानक अगीयारमु कहु ठे पाणीमा भळ ठे ते पाढु कोळावाची अवस्थमक्षीन याय, तेम आ गुणस्थानकपामेझाजीवने कपाय - सत्तामा ठे तेर्थी त्पाथो अवस्थ पर्केज एम जाणवु, सर्व मोहनीप्रकृतिक्षयथता, सत्तामांयो पण मोहनीकर्मटळीजता अत्यंत विशुद्धअध्यवसायस्थानक ठे ज्या तेनु नाम क्षीणमोहगुणस्थानक वारमु जाणवु वारमागुणठाणेथी कोळजीव पर्के पण मरणपामे नहि मन, वचनने काययोगसहीत वर्ते अने धाती कर्मनाक्षयथकी केवळझान होय ते सयोगी केवळी गुणस्थानक तेरमुं जाणवु त्रेणे योगनो रोध करे एटले वादर मनवचनने कायाना व्यापारमे अज्ञावे, मेन-पर्वतनी पेरे नि प्रकप शेखेसोकरणकरतां, अयोगी केवळी गुणस्थानक चौडमु जाणवु ते चौडमाउण-

वरणीयकर्म, २ दर्शनावरणीयकर्म, ३ वेदनीय कर्म,
 ४ मोहनीय कर्म, ५ आयुकर्म, ६ नामकर्म, ७ गो-
 त्रकर्म अने ८ अंतराय कर्म एवं आठ कर्म रे. प्रथम
 मिथ्यात्व गुणस्थानकथी सातमा अप्रतमगुणस्था-
 नक सुधीना सातगुणस्थानकमांथी एक मिश्रगुण-
 स्थानक वर्जी वाकीना उए गुणस्थानके सातके आठ
 कर्म वांधे; आयु वंधकाले आठ अने आयु न वांधतो
 होय त्यारे सातकर्म सदा सर्व जीव वांधे त्रीजुमिश्र
 गुणस्थानक, आठमुं अपूर्व करण अने नवमुं अनिवृति
 वादरगुणस्थानक एवं त्रण गुणस्थानके आयु कर्मविना
 वाकीना सात कर्म वांधे. दशमा सुद्धमसंपरायगु-
 णस्थानके एक आयु कर्म अने वीजु मोहनीय एवे
 कर्म वर्जी वाकीना उ कर्म वांधे. अगियारमुं उप-
 शांतमोह, बारमुं क्षीणमोह अने तेरमुं सयोगी
 केवली एवं त्रण गुणस्थानके एक साता वेदनीजवांधे
 अने चौदमुअयोगीगुणस्थानक तो अवंधक रे त्यां
 कोइ जीवकर्म वांधे नहि एम कहुँ रे. मिथ्यात्वथी
 मांकी सूक्ष्मसंपरायगुणस्थानक सुधी आरे कर्मनो

उदय, अगियारमे तथा वारमे गुणस्थानके मोहनीय कर्मविना वाकीना सात कर्मनो उदय अने तेरमे तथा चौदमे गुणस्थानके, अघाती एवा वेदनीय, आयु, नाम अने गोत्र एव चार कर्मनो उदय होय ठे मि-
ष्यात्वथी प्रमत्त सुधी ठ गुणस्थानकमाथी एक मिश्र गुणस्थानक वर्जी वाकीना पांच गुणस्थानके, सातके आठ कर्मनी उदीरणा, मिश्रगुणस्थानके आठ कर्मनी उदीरणा, अप्रमत्त, अपूर्व अने अनिवृत्ति गुणस्थानके आयुकर्म अने वेदनीय कर्मविना ठ कर्मनी उदीरणा, सूक्ष्म सपराय गुणस्थानके ठ अथवा पांच कर्मनी उदीरणा अने उपशांतमोहगुणस्थानके, वेदनीय, आयु. अने मोहनीयविना वाकीना पांच कर्मनो उ-
दीरणा होय ठे, तथा वारमा क्षीण मोह गुणस्थानके उपर कहेला त्रण कर्मविना पाचकर्मनी अने आव-
लीका धाकते ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय अने अतराय कर्मनी उदीरणाटक्के तेथी वाकीना एक नाम-
कर्म अने वीजु गोत्र एव वे कर्मनी उदीरणा होय तथा तेरमा सयोगी गुणस्थानके पण ते नाम अने गोत्र

कर्मनी उदीरणा कही ठे. चौदमुं अयोगी गुणस्थानक अणुदरीक होय त्यां एके कर्मनी उदीरणा होय नहि. पहेला गुणस्थानकथी मांकी अगियारमां गुणस्थानक सुधी आठ कर्मनी सत्ता, बारमा गुणस्थानके मोह नीयकर्म वर्जी सात कर्मनो सत्ता अने तेरमे तथा चौदमे गुणस्थानके वेदनीय कर्म, आयुः कर्म, नाम कर्म अने गोत्रकर्म ए चार अघाती कर्मनी सत्ता कही ठे.

पृथ्वी कायादि पांच एकेंद्रियना दंमुके एक मिथ्यात्व गुणस्थानक सिद्धांतने विषे कहुं ठे. वेशंद्रिय, तेशंद्रिय अने चौरिंद्रियनादंमुके मिथ्यात्व अने शास्वादन एम बे गुणस्थानक लाज्जे. नारकी, जुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिकने विषे पेहेलेथी चार गुणस्थानक लाज्जे पण एमां एटलुं विशेष ठेके अनुक्तर विमानवासी जीवोने एक अविरति समकीत इष्टि चोथु गुणस्थानक ज होय ठे. गर्जज तिर्यंच पंचेंद्रियने पहेलेथी देशविरति पर्यंत पांच गुणस्थानक अने मनुष्यना दंमुके चौदे गुणस्थानक कह्यां ठे.

॥ इति गुणस्थानक द्वार ॥
अथ एकवीसमु आहारद्वार

आहार त्रण प्रकारना हे ओजाहार, लोमाहार
अने प्रकेपाहारतेमां ओज-तैजस शरीर, तेणे करीने
जे आहारले तेनु नाम ओजाहार अर्थात् जीव पर-
न्नवे जतां प्रथमसमये तैजस अने कार्मण शरीरवके
ओदारिक शरीर योग्य पुङ्गलनो आहार करे अने
बीजा समयथीमांकी, कार्मण साथे ओदारिक मिश्र
कायवके आहार करे ते, शरीर पर्याप्ति पुरी थाय
त्या सुधीजे आहारते सर्व ओजाहार जाणवो लोमा-
हार स्पर्शेंडिये करीने जीवजे आहार पुळगल ग्रहण
करे तेनुं नाम लोमाहार जेमके-तेलादिक शरीरे
चोळवाथी अंदर गरमी तथा चिकाश आदि आवे
अथवा उष्ण काळने विषे पाणीना स्पर्शवके एटले
न्हावाथी अगर नीनु कपकु शरीर उपर राखवाथी
शीतल पणाएकरी तृपा गरमी अने दाढ विगेरे
उपशमे एम जे स्पर्शेंडियवके आहार ते लोमाहार
जाणवो प्रकेपाहार जे कोळीआ विगेरे करीकोरामा

(पेटमां) प्रक्षेपाय (नखाय) अर्थात् मुख प्रक्षेपे जे आहार ते वीजो प्रक्षेपाहार जाणवो.

एकेंद्रियनापांच, देवतानातेर, अने नारकीनो एक उगणीस दंडके एक उजाहार अने वीजो सो-माहार होय ठे. विगलेंद्रियना त्रण, गर्जज तिर्यंचनो एक अने गर्जज मनुष्यनो एक एम पांच दंडकने विषे, उजाहार, लोमाहार अने प्रक्षेपाहार ए त्रणे प्रकारना आहार कहां ठे. एकेंद्रिय, विगलेंडि, अने गर्जज तिर्यंच तथा मनुष्यनामळीदश दंडके सचित्त, अचित्त, अने मिश्र आहार होय ठे एटले कोइ वार सचित्त, कोइवार अचित्त अने कोइवार कांइ सचित्त कांइ अचित्तरूप मिश्र एम त्रण प्रकारना आहार होय ठे अने नारकी तथा देवताना दंडके सदा सर्वदा अचित्तज आहार कहो ठे. शरीर पर्यासी पुरी करे त्यां सुधी सर्व अपर्यासा अवस्थाए जीवोने उजाआहार होय ठे अने शरीरपर्यासि पुरी कर्या पठी लोमाहार होय; ते सोमाहार असंझीने अजाणता अने संझीने जाणता अजाणता तथा देव-

ताने मनोङ्गपणे अने नारकीने अमनोङ्गपणे परिणमेठे.

॥ इति आहारद्वार ॥

अथ चावीसमुं आहारनी इच्छाद्वार.

पृथ्वीकायादिक सर्व एकेऽङ्गियने आहारनिखाय सदा सर्वदा निरतर होये. वेशङ्गिय, तेशङ्गिय, घउरिङ्गिर अने नारकीनाजीवोने एकवार आहार कीधा पठी वधारेमां वधारे अतरमुहुर्तने आतरे फरी आहारनी इच्छा थाय पचेऽङ्गियतिर्यंचगर्जजने वधारेमा वधारे वे अहोरात्री अने मनुष्यने त्रण अहोरात्रीने आंतरे स्वाज्ञाविक एटले तापरोगादिकना अज्ञावे आहारनी इच्छाथायेठे. आ उत्कृष्ट आहार इच्छा प्रमाण देवकुरु तथा उत्तरकुरुक्षेत्रना तथा भरत अने श्रैवत्तकेत्रनेविषे पहेला आराना मनुष्य तथा तिर्यंचनीअपेक्षाएजाणवो जुवनपति, व्यतर जोतीषि अने वैमानिकनादमुके, मनगमतो अने सर्व इंडियोने आढहादकारी आहार परिणमेठे. माटे श्रायुष्यनाकाळमाननीअपेक्षाए आहारनी इच्छानो काळमान कक्षो ठे दशहजारवरसना आ-

युष्यवाला देवताने एक अहोरात्रीनेआंतरे आहा-
रनीइच्छायाय, दशहजारवरसथी समयाधिकथी
मांझीने एक सागरोपमथी उंडा आयुष्यवाला देवोने
वेथी नव दिवसना आंतरे आयुष्यना प्रमाण प्रमाणे
आहारनी इच्छानुंकाळमान जाणुं. एक सागरो-
पमना आयुष्यवाला देवोने एक हजारवरसे आ-
हारनीइच्छा वे सागरोपमनाआयुष्यवालाने वे
हजारवरसेआहारनी इच्छा, त्रण सागरोपमना
आयुष्यवालाने त्रण हजारवरसे आहारनी इच्छा
एम जेटला सागरोपमनुं आयुष्य होय तेटलाहजार
वरसे देवोने आहारनी इच्छा थाय ते ठेवट अनुक्तर
विमानवासी देवोनुं तेत्रीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आ-
युष्यरे तेदेवोने तेत्रीशहजारवरसे उत्कृष्ट आ-
हारनीइच्छानो काळमान जाणवो एम सर्व देवोने
आयुष्य प्रमाणनी अपेक्षाए आहारनी इच्छानो का-
लमान कह्यो दे.

॥ इति आहार इच्छाप्रार ॥

अथ त्रेवीशमु किमाहारस्तार.

पूर्व, पश्चिम, उत्तर अने दक्षिण ए चार तथा
उधर्व (उच्ची) अने अधो (नीची) मळी र दिशाउ
माथी जीव केटली दिशाउनो आहार ग्रहण करे ठे
एम जे कहेबु ते किमाहार

एक अणाहारक ने वीजा आहारक एम जीवो
वे प्रकारना ठे तेमां परन्नवजता विग्रहगतोए जीव
एक समयथीमांझी वधारेमा वधारे चारसमय सुधी
अणाहारी होय अने केवळज्ञानी कर्म खपाववाने आठ
समयनो केवळी समुद्घातकरे तेमां त्रीजे चोथे अने
पाचमे समये केवळ कार्मण्योग होय, त्यां ते पण
त्रण समय सुधी अणाहारी होय अने चौदमे गुण-
स्थानके सेलेशीकरणे जीव अतरमुहुर्त प्रमाण अणा-
हारी होय अने सिद्धना जीव अनतकाळ सदासर्वदा
अणाहारी होय ठे, उपर कहेला अणाहारी जीव
सिवाय वाकीना सर्व जीवो आहारक जाणवा

आहारक एवा चोबीसेदम्बकनाजीवो ठए
दिशाओथी आहारग्रहणकरे ठे, पण एमां एटलु

विशेष ढे, के, एकेऽङ्गियना पांच दंसकना जीवोतो,
 त्रण, चार, पांच अथवा उषदिशाओनो आहार प्रहण
 करेढे, कारणके चौदराजलोक, सुक्षम एकेऽङ्गिथी
 नर्यो ढे, अने चौदराजलोक परी अलोक ढे, तेमा पु-
 द् गलादिकनहि होवाथी आहारढे नहि, माटे जे
 शुद्धजीवो लोकनामध्यनागमां रे तेने तो उष-
 दिशाओनो आहार होय, पण जे लोकने ढेके रहेला
 ढे, एवा जीवोने उपर अलोक होवाथी उर्ध्वदिशीनो
 आहार होय नहि माटे ते जीवोने उर्ध्वदिशीसिंवाय
 बाकीनी पांच दिशानो आहार होय; एवीज रीते
 लोकना ढेके रहेला जीवोने बेदिशीए अलोक होय
 तेने चारदिशानो अने जेने त्रण दिशाए अलोक होय
 तेने बाकीनी त्रणदिशानो आहार होय एम जाणु.

॥ इति किमाहार द्वार ॥
 अथ चोवीशमुं जीवन्नेद द्वार.

जीवन्नेद—कर्मगति जात्यादिकनी अपेक्षाए जी-
 वनी विशेष व्याख्या तेनुं नाम जीवन्नेद. जीवना
 मुख्य बे न्नेद ढे, एक मुक्तिना अने बीजा संसारी,

आठे कर्मथी मुकाणा मुक्तयया ते मुक्तिना अने कर्मे
करीतहीत, चारगतिरूपससारमांपरिव्रमणकरे रे ते
ससारीजीवोजाणचा.

मुक्तिना—सिद्धना जीवोना ज्ञेद—१ जीनसिद्ध,
२ आजीनसिद्ध, ३ तिर्थसिद्ध, ४ अतिर्थसिद्ध, ५ गृह-
स्थलिंगेसिद्ध, ६ अन्यलिंगेसिद्ध, ७ स्वलिंगेसिद्ध, ८
चिलिंगेसिद्ध, ९ पुरुषलिंगेसिद्ध, १० नपुसकलिंगेसिद्ध,
११ प्रत्येकबुद्धसिद्ध, १२ स्वयंबुद्धसिद्ध, १३ बुधवोधिन-
सिद्ध १४ एक समये एक सिद्ध अने १५ एक समये
अनेक सिद्ध, एम. जेवी पदवि अने जेवा चिन्हादिके
जीवसिद्धि पदने पाम्या मोळे गया ते अपेक्षाए ग-
णता सिद्धनाजीवोना पदर ज्ञेद कह्या रे

सर्व ससारीजीवोना एक, बे, त्रण, चार, पाच,
छ, अने चौद, बत्रीश तथा पांचसेने त्रेसछ ज्ञेदपण
जुदी जुदी अपेक्षाए शास्त्रने विषे कह्या रे ते आ
प्रमाणे—श्रुतहाननो अनतमो ज्ञाग सर्व ससारी जी-
वने सदा सर्वदा उघाको होय अवराय नहि ते चे-
तना छहणे करी सर्व ससारी जीवो एक विध—एक

प्रकारना जाणवा. स्थावरनामकमोदयेकरी जे स्थिर रहे एटबे पोतानी शक्तिए हाली चाली शके नहि ते स्थावर अने त्रसनामकमोदये जीवत्रस-पणुपामे हालीचालीशके तडकेथी ठांए आवे ते त्रस. एवं एकेत्रसअनेवीजास्थावरमळी सर्व संसारीजीवोना व ज्ञेदथायबे, पुरुष, स्त्री अने न-पुंसक वेदनी अपेक्षाए त्रग ज्ञेद, नारकी, तिर्यच, म-नुष्ये अने देवगतिए करी चारज्ञेद, एकेंद्रिय, वेङ्ड-डिय, तेङ्डिय, चौरिंडिय तथा पंचेंडिय मळीइंडियो नी अपेक्षाए पांच अने पृथिविकाय, अप्पकाय, तेउ-काय, वाऊकाय वनस्पतिकायने त्रसकाय एम कायनी अपेक्षाए सर्व संसारी जीवोना ठ ज्ञेद कहां बे. १ सूहस एकेंद्रिय अपर्याता, २ सूहम एकेंद्रिय पर्यासा, ३ बादर एकेंद्रिय अपर्याता, ४ बादर एकेंद्रिय प-र्यासा, ५ बेङ्डिय अपर्यासा, ६ बेङ्डिय पर्याता, ७ तेङ्डिय अपर्यासा, ८ तेङ्डीय पर्यासा, ९ चौरिंडिय अपर्यासा, १० चौरिंडिय पर्यासा, ११ असंझी पचेंडिय अपर्यासा, १२ असंझी पचेंडिय पर्याप्ता, १३ संझी

पचेद्रिय अपर्याप्ता अने १४ सङ्गी पचेद्रिय पर्याप्ता
 एम सर्व संसारी जीवोना चौद स्थानक-ज्ञेद-कर्म
 ग्रथादिकने विषे कहाँ रे पृथ्वीकायादिक स्थावरना
 पाच सुद्धम अने पाच वादर मल्ली दश, प्रत्येकव-
 नस्पतिकायनो एक, विग्लेंड्रियना त्रण, अने संज्ञी
 तथा असंज्ञी पचेद्रियना वे ज्ञेद एम सर्वमलीने
 सोळ ज्ञेदने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता करता बत्रोश
 ज्ञेद पण प्रकारांतरे गणया रे

हव जीवना पाचशें ब्रेशठ ज्ञेद कहाँ रे ते आ
 प्रमाणे,—नारकीना सात ज्ञेद रे तेने पर्याप्ता तथा
 अपर्याप्ता करतां चौद ज्ञेद थाय पाच सुद्धम स्था-
 वर, पाच वादर स्थावर, एक प्रत्येकवनस्पतिकाय
 अने त्रण विग्लेंड्रिय एव चौद तथा पांच समुर्धिम
 तिर्यच पचेद्रिय ने पाच गर्जज तिर्यच पचेद्रिय एव
 दशमलीने चोबीश ज्ञेद थाय, तेने पर्याप्ता तथा अ
 पर्याप्ता करता तिर्यचना अकृताळीस ज्ञेद थाय एक
 सोने एक गर्जज मनुष्यना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता
 गणता वसेने वे अने समुर्धिम मनुष्यना एहमोने

एक अपर्याप्तामलीत्रणसेंने त्रण मनुष्यना ज्ञेद थाय.
 दश चुवनपति आठ व्यंतर, आठवाण व्यंतर, पंदर
 परमाधामी, दश तिर्यग्जून्नक, पांच चरज्योतिषी,
 पांच स्थिरज्योतिषी, नवलोकांतिक, त्रणकिविषिश्चा,
 बार देवलोक, नवग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तरविमा-
 ननां मलीने नवाणु तेने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता
 गणतां एकसोने अष्टाणु ज्ञेद देवताना थाय. एवी
 रीते चौद नारकीना, अमृतादीस तिर्यचना, त्रणशेंने
 त्रण मनुष्यना अने एकसोने अष्टाणु देवताना मली
 सर्व संसारी जीवोना पांचसेंने त्रेशर ज्ञेद कहाँ डे.

पृथ्वीकायना दंरुके चार, अप्रकायना दंरुके
 चार, तेजकायना दंरुके चार, वाउकायना दंरुके चार
 तथा वनस्पतिकायना दंरुके छ जीवज्ञेद जाणवा, बे
 इंडियना दंरुके बे, तेइंडियना दंरुके बे, चौरिंडिय
 ना दंरुके बे अने तिर्यच पंचेंडियना दंरुके वीश
 जीवज्ञेद कहाँ डे. मनुष्यना दंरुके त्रणसें ने त्रण ने
 तेर देवताना दंरुके एकसोने अष्टाणु जीवज्ञेद पासीए.

॥ इति जीवज्ञेद धार ॥

(१३३)

अथ पचीसमु वेदधार.

वेद—जे अन्निलाय करवो ते वेद त्रण प्रकारेरे
स्त्रीवेद, पुरुषवेद अने नपुशक वेद ते दरेकना वळी
वड्बे ज्ञेद ठे, १ ऊव्यवेद अने २ ज्ञाववेद

दाढी, मुगादिक मुख पुरुपाकार, पुरुपचिन्ह,
बीर्यपत्तन, हृष्टता अने धैर्यादि लक्षणे युक्त ते ऊव्य
पुरुपवेद तथा जेम श्लेष्मनाजोरे खटाशनी इत्वा थाय
खटाश ज्ञावे तेम जे कर्मना उदययी स्त्रीनु दर्शन,
आलिंगन, मैथुनादिकनी इत्वा थाय ते ज्ञावपुरुप-
वेद ते वेद घासना जरुका जेवो जाणवो, जेम घा-
सनी ज्वाला एकदम उठे पण पाठी तरत समाझ
जायठे तेम पुरुपवेदी वेदना उदये विह्वल थाय पण
कार्य सिद्धिए तरत शात थाय ते पुरुपवेद जाणवो

स्तन, योनी प्रमुख श्रवयव सहित अने दाढी
मुगादिक रहित ते ऊव्य स्त्रीवेद तथा जेम पित्तना
जोरे मिट्ठाज्ञनी इत्वा थाय मिट्ठ ज्ञावे तेम जे कर्मना
उदययी पुरुप सुहामणो लागे, आलिंगन, मैथुनादिक
अन्निलाय उपजे ते ज्ञाव स्त्रीवेद ते वेद वकरीनी

र्वीकीना अग्नि सरखो जाणवो, एटले जेम र्वीकीउ-
नी अग्नि जेम जेम खोरीए तेम तेम विशेष दीपे
घणीवार प्रज्वले तेम स्त्रीवेदी वेदनाउदये घणी प्र-
ज्वले पुरुषनाकरस्पर्शादिके वधारे दीपे घणे कष्टे
शांती आय ते स्त्रीवेद जाणवो.

स्तनादिक स्त्री अवयवो अने दाढी मुबादिक
पुरुष चिन्ह जेने होय नहि, कांइक स्त्रीनेमळती कां-
इक पुरुषने मळती ज्ञाषा बोले, स्त्रीनीपेरे चाळा चेष्टा
करे अने स्त्रीनी जेम कोमळता निर्बळतादिकेकरी
सहीत होय ते द्रव्य नपुंसकवेद जाणवो तथा जेम
पित्त श्लेष्मनाजोरे खारा खाटानी इष्ठाथयाकरे
खारुं खाटुं जावे एम जेकर्मनाउदयर्थी स्त्री अने
पुरुष ए बज्जे सबंधि विषयान्निलाष उपजे ते ज्ञाव
नपुंसक वेद जाणवो; ते वेदोदय नगर दाह सरखो
रे, जेम नगर बलतुं होय तेमां रहेलां उक्ररूदिक
घणा काळ सुधी बळे तरत उलवाय नहि, तेम नपुं-
सकवेदी मोहाग्निज्वलाए ज्वाजद्वयमान घणा

काळे पण शान्तिने पासे नहि अतरग वेदरूप अग्नि
धुधवातो रहे ते नपुसक वेद जाणवो

पाच स्थावर, त्रण विगलेंद्रिय अने नारकीना
दक्षके एक नपुसक वेद होय, गर्जज तिर्यच अन
गर्जज मनुष्यना दक्षके त्रणे वेद होय, तथा देव-
ताना तेरे दक्षके नपुंसक विना वाकीना वे वेद होय
अने समुर्धिम तिर्यच तथा समुर्धिम मनुष्यने एक
नपुसक वेद होय रे गर्जज मनुष्य, गर्जज तिर्यच,
जुवनपति, व्यतर, ज्योतिषी अने सुधर्मा तथा इशान
देवलोकनादेवो कायसेवी, कायसेवाए तृप्ति पासे,
त्रीजा अने चोथा देवलोकना देवो स्पर्शसेवी, स्त
नजुजा आदिगनादिकायस्पर्शे तृप्ति पासे पांचमा
अने रठा देवलोकना देवो रूपसेवी पोताने ज्ञोग
योग्य देवीनारूप, हास्य कटाक्षादिकरूप देखीने तृ-
प्ति पासे सातमा अने आरमा देवलोकना देवो
शब्दसेवी पोताने ज्ञोग योग्य देवीना गीत वार्जीन्त्र
हास्य नेपुर ऊकारादि शब्द साज़लीने तृप्ति पासे
नवमां, दशमा, अगियारमा अने वारमा देवलोकनर

देवो मनसेवी, एटले पोताने ज्ञोग योग्य देवी मन-
मांहे चिंतवे तेवारे ते देवी पोताना स्थानके बेरीथ-
कीज शृंगारधरी जबी बुरी काम चेष्टा मनमां चिं-
तवती ज्ञोगने माटे सावधान आय तेवारे ते देवता
त्यांज एटले पोताने स्थानके बेरा थका मनसंकट्पे
परम सुख परम तृप्ति पामेडे. देवीउनी उत्पत्ति बोजा
देवलोक सुधी अने गमना गमन आठमा देवलोक
सुधी डे, स्पर्शसेवी, रूपसेवी अने शब्द सेवीने पण
कायसेवीनी पेरे शुक्रपुज्जल डे; ते शुक्रपुज्जल देवता
नी शक्तिएकरीने देवांगनाना शरीर ने विषे शंक्रमे
संचरे तेथी देवांगनाने संज्ञोग सुख उपजे डे, ते शु-
क्रपुज्जल वैक्रिय होवाथी गर्ज उपजे नहि. नवग्रैवै-
यक अने पांचअनुक्तरविमानना देवता अप्रवीचारा
एटले विषय सेवा रहित डे माटे मने करीने पण
स्त्रीने प्राण्ये नहि माटे पराधिनरहित संतोषवंत सर्व
विषय सेवी देवताउंथी पण अत्यंतमुखीया डे.

काय सेवीथी अनंत गणु सुख स्पर्श सेवीने
जाणवुं ने ते थकी अनंत गणु सुख रूपसेवीने ते थकी

(१३७)

अनतगणुसुख शब्दसेवीने तथा ते थकी पण
अनतगणुसुख मनसेवीने अने ते थकी अनतगणु
सुख अप्रवीचारीदेवोनेजाणवु उपर कहेखा सर्व
जीवोनासुखथी अनतगणु सुख गया थे राग अने
द्वेष जेना एवा श्री वीतरागने जाणवु.

॥ इति वेदम्भार ॥

अथ ऋषिसमु कपायद्वार

कपाय—(कघ—आय)कप—ससार ने आय—लाज्ज
एटखे जेनाथी ससारनो लाज्ज आय ससारनी परपरावधे
तेनुनाम कपाय अनतानुवधी, अप्रत्याख्यानी प्रत्या-
ख्यानी अने सज्जलन ए चार ज्ञेद कपायना जाणवा

अनतानुवधी—अनता ससारने वधारनार एवो
क्रोध, मान, माया अने लोज्जते अनतानुवधी कपाय
जाणवो ए क्रोध पर्वतनी लीटी जेवो, मान पापाणना
लाज्जला जेवु, माया वांशना मुळ जेवी, अने लोज्ज
करमजनारंगजेवो जाणवो, अप्रत्याख्यानी कोइ
पण पञ्चखाणने उदय आववानदे थोका पण पञ्चखाणनी
प्राप्ति न थाय एवो क्रोध, मान, माया अने लोज्ज ते

अप्रत्याख्यानीकपाय जाणवो. एक्रोध सुकेला तछावनी रेखा सरखो, मान हारुकाना थांजलासरखुं, माया मेंदानाशिंगका सरखी अने लोन्न कादवना रंग सरखो जाणवो. प्रत्याख्यानी सर्वविरतिरूप पञ्चखाणने आवे, आववा नदे. एवो क्रोध, मान, माया अने लोन्न ने प्रत्याख्यानी कपाय जाणवो. ए क्रोध रेतीनी रेखा सरखो, मान काष्टना थांजला सरखुं, माया वळदना मुतरनी रेखासरखी अने लोन्न काजळना रंग सरखो जाणवो. संज्वलन चारित्रीयाने पण लगारेक दीपे, उदय आवे एवो क्रोध, मान, माया अने लोन्न ते संज्वलन कपाय जाणवो. ए क्रोधपाणीनीरेखासरखो, मान नेतरना थांजला सरखुं, माया वांशनीडाल सरखी अने लोन्न हळदरना रंग सरखो जाणवो.

अनंतानुबंधी समकीतनो, अप्रत्याख्यानी देश विरतिनो, प्रत्याख्यानी सर्वविरतिनो अने संज्वलन कषाय यथाख्यातचारित्रिनो घातकरनार डे. क्रोध मान, माया अने लोन्ननी अपेक्षाए जीवो सर्वथी थोक्मामानी, मानीथी विशेषाधिक क्रोधी, क्रोधीथी

(१३४)

विशेषाधिक मायावत अने मायावंतथी विशेषाधिक
लोन्नीजीवो कह्या रे.

चोबीशे दम्के क्रोध, मान, माया अने लोन्न
एम चारे कपाय होय रे, पण तेमा एटलु विशेषके
नारकीने क्रोध वधारे तिर्यचने माया वधारे मनुष्यने
मान वधारे अने देवताउनेलोन्न वधारे होय रे एम
कह्यु रे ॥ इति कपायद्वार ॥

अथ सत्तावीसमु सज्जाद्वार

सज्जा-रुक्षा प्रकारनु ज्ञान तेनु नाम सज्जा क-
हीए, ते सज्जा वे प्रकारनी रे एक ज्ञान सज्जा अने
वीजी अनुन्नवसज्जा ज्ञान सज्जा ते मतिज्ञान, श्रुत-
ज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान अने केवळज्ञान;
ते केवळज्ञानरूपसज्जा क्षायिक अने मतिआदिक
सर्व सज्जा क्षायोपशमिक रे वीजी अनुन्नव सज्जा
ते पोतानाकरेला शातावेदनियादि कर्मोथी उत्पन्न
शाय रे ते जेमके आवस्तु मारे आहारयोग्यरे
आ वस्तुथी मारु पोपण यशे इत्यादिक एकेंड्रिया-
दिकने पण अव्यक्तव्य शब्दार्थो ह्वेख, ते अनुन्नव

संझा, ते संझा चार प्रकारे डे. आहारसंझा, ज्य संझा, मैथुनसंझा अने परिग्रहसंझा ए चार प्रकारे संझा जाणवी; वली १ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ खोज्ज, ५ उंध अने ६ लोक संझा पण कही डे. ते उपरनी चार संझामां मेळवता दश संझा डे. वीजा अंथोमां वली १ सुख, २ दृःख, ३ मोह, ४ विति-गिह्वा, ५ शोक, अने ६ धर्म एठ नेदवाली पण संझा कहेली डे. ए संझाउ ते पूर्वोक्त संझाउ मांहे अंतर्गत जाणवी.

नरकादिक चोवीसेदंरुके सर्वजीवोने उपर कहेली चार अथवा दश संझा होय डे. पृथ्वीकायादि जीवोने मन नशी तो पण आ कहेली संझाउतो सर्व जीवोने होय. जेम वनस्पतिकायजीवो जलादिकना आहारवर्के जीवे डे अने आवा प्रकारनी वस्तुउ मळे तो सारु, आवस्तुथी मारुशरीरपुष्टयशे, एवो अवक्तव्य शब्दार्थो लेख, ते आहार संझा जाणवी. लङ्गामणी विगेरे केटलीएकवनस्पति मनुष्यना हाथनो स्पर्शयवाथी संकोचीजाय डे ए ज्यसंझा

जाणवी नौकर क चपकादि वृक्षोने खीनो स्पर्शयवाथी
 प्रफुल्लीतथायरे अथवा तारीवृक्षनीपासे ताम
 वृक्ष होय तोज तामी फळे रे फळवाळी थाय रे ए
 मैथुन सङ्गाना लक्षण जाणवा बोद्व पखाशाडि वृक्षो
 नीधान (धन) ना उपर उगे रे अथवा पोताना मु-
 ल्लीआ वर्के नीधानने वीटेरे नीधाननी आसपास
 विंटलाय रे ए परिग्रह सङ्गानु लक्षण जाणवु को-
 कनड वृक्षने मनुष्यादिकनो पगलागवाथी हुकारा
 करे रे ए क्रोध सङ्गानु लक्षण जाणवु हु रता आ
 लोको छू.खी केमथाय रे एवा अहकारे करी रुदंती
 वृक्ष रुदन करे रे कारणके तेथी सुवर्णसिद्धि थाय
 रे, ए मानसङ्गानुं लक्षण रे वेळमीडे फळने पोताना
 पाठका वर्के ढांके रे, ए माया सङ्गाना लक्षण रे. अति
 तीव्र लोन्ननाउद्ये जीव धनउपरवृक्षथाय रे,
 अथवा कोइ मोटोफणीधर नागथइ धननी रक्षा
 करे रे, ए लोन्न सङ्गाना भाव जाणवा वेळमीडे मार्ग
 तजी वृक्षने वीटलाय ए उघसङ्गा, तथा कीमीडे
 श्रेणीवध चालेरे, माकरु एकदमनासेरे, अने

आ ज्ञवमां हजो मरण नथो आव्युं तो पण हुं मरी
जइश ए जीवने ज्ञय लागे रे ए सर्वपूर्वोक्त संझाना
ज्ञाव जाणवा. जीव ज्ञवोज्ञवथी आहारादिक कृत्य
वके टेवाएलो रे माटे अजाण पणे, असंझीपणे अ-
थवा तो संझीपणे पण उपर कहेली सबे संझाए स-
हीत जीव होय रे. जेम नरघांवगारुनारमाणस
अन्य व्यवसायमां होय तो पण तेनी आंगलोडे उंची
नीची ध्राय रे अथवा टकोरा वगारे रे, तथा काप-
मनो वहेपारी, कापमने फास्वाना व्यवशायथी रात्रे
उंघमां पण अणजाणतां पोतानुं धोतीडे के अन्य
वस्त्र फारे रे कारणके ए हंसेशानी प्रवृत्तिनी टेव रे,
एम सर्व संसारी जीवो देहममत्वेकरी आहारादि-
कथी टेवाएलां होवाथी हालपण जो अजाण होय
अङ्गानी होय तो पण तेमां प्रवृत्ति करे रे एनुं नाम
संझा जाणवुं. ॥ इति संझाद्वार ॥

अथ अठावीसमुं स्वकाय स्थिति द्वार.

स्वकाय स्थिति—(स्वकाय स्थिति) स्व पोनाना,
काय-समुह, अर्थात् पृष्ठवीना जीवोनो समुह ते पृ-

इच्छीकाय, पाणीना जीवोनी जातीरुप समुह तेने विषे
फरीफरी मरणपासीने तेनी तेजकायमा उत्पन्न
आय, तो तेनीअपेक्षाए जे स्थिति काळमान तेनु
नाम स्वकाय स्थिति जाणवी

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय अने वाउकाय
ए चार एकेंझियना दमके उक्खटी स्वकाय स्थिति
असरखाती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळनी अर्थात्
पृथ्वीकायनो जीव मरणपासीने फरी तेजकायमा
उपजे, पण पोतानी कायने मुके नहि तो असरखात
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळसुधी रहे एमज अप-
काय तेउकाय अने वाउकायने शिष्यगणजाणी
लेबु वनस्पति कायनी स्वकाय स्थिति उक्खटी अनता
काळ प्रमाणजाणवी आजे वनस्पति कायनी स्थिति
कहीते व्यवहारराशी जीवनी अपेक्षाए जाणवी
केमके व्यवहारराशी उजीव मरणपासी नीगोटमा
जायतो अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळ सुधी
रहेने पठी पाठो व्यवहार राशीमा आवे एम जाणबु.
वेझझिय, तेझझिय अने चोरिझिय एम विकल्पेझि-

यमां दरेकने उत्कृष्टी स्वकाय स्थिति संख्याता है जार
वरश सुधीनी जाणवी. तिर्यंच पचेंद्रिय अने मनुष्यनी
उत्कृष्टी स्वकाय स्थिति सात आठ नवनी कही भे.

गर्जज तिर्यंच तथा मनुष्यों संख्याते आयुष्य-
सातन्नव करे अने आठमे नवे युगलीउ थाय ए आठे
नवे करी उत्कृष्टी स्वकाय स्थिति त्रण पछ्योपम अने
सात पूर्व क्रोम वरसनी गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्य
नी जाणवी. त्रसकाय जीवोनी स्वकाय स्थिति वे ह-
जार सागरोपमनी कही भे, कारणके कोइपण जीव
वधारेमां वधारे त्रसकायमां वे हजार सागरोपम सुधी
रही शके ने पठी अवश्य एकिंद्रिय थाय, संझीनी
स्वकाय स्थिति उत्कृष्टी नवसें सागरोपमनी जाण-
वीने पठी अवश्य असंझीमां जाय एम कह्यु भे. दे-
वता तथा नारकी मरीने पाठा देवता तथा नारकीमां
जाय नहि अवश्य वीजी गतिए जाय. पृथ्वीकायादि
उपर कहेका सघला जीवोनी जघन्यकाय स्थिति अं-
तर मुहुर्तनी जाणवी.

॥ इति स्वकाय स्थितिद्वार ॥

अथ उगण्ड्रीसमु विरहकव्यद्वारा

विरहकाळ—एकजीवउत्पन्नथयापठीबीजो जीव
केटखाकाळनेअतरेउत्पन्नथाय अयवाच्वे एम जेदरेक
दूरकनेविषेकहेबुं तेनुनामथहिं विरहकाळ जाणवो.

नारकीना दंडके प्राये समयसमयप्रत्ये जीव
उपजेरे अने चवेरे, परतु क्यारेक अतरप्रभेतो जघन्य
एकसमय अने उक्तुष्टोवारमुहुर्तनोजाणवो सातेना-
रकीमाँ कोइजीवनउत्पन्नथायतो वधारेमा वधारे वार
मुहुर्तमुधीनउपजे पण धारमुहुर्त पठीतो जरुर कोइ-
नरकेजीवउपजे माटे सामान्ये सातेनारकीआश्री वार
मुहुर्तनोविरहजाणवो जुटीजुटीनारकीनी अपेक्षाए
पहेली रत्नप्रज्ञा नारकीए चोबीसमुहुर्त, बीजीशर्करा
प्रज्ञाए सात दिवस, बायुकाए पदर दिवस, पंक प्रज्ञाए
एकमास, धुम प्रज्ञाए घेमास, तमप्रज्ञाए चार मास
अने तमस्तम प्रज्ञानारकीनेविषे ठमासनो उपजगा
तथा चबवानो विरहकाळएटसे अनर उक्तुष्टोजाणवो
अहिंजेनो जेटखो विरहकाळकप्तांठे तेटखाकाळयी
उपरात अवश्य ए नरकोनेविषे कोइपणजीव उत्पन्न

आय एम कहुँ रे.

दशचुवनपतिनादंके जीव निरंतरउपजेरे
अने चवेदे; परंतु कदीअंतरपकेतो जघन्यथी एक
समयनो अने उत्कृष्टथी चोवीस मुहुर्तनो विरहकाळे
एटले अंतरजाएवो एमज व्यंतर, ज्योतिषी तथा
सौधर्मनैश्शान देवलोकने विषे पर्ण प्रत्येके उपजवा
तथा चववानोविरहकाळ वधारेसांवधारे चोवीस
मुहुर्तनो रे, तेवारपठीनिश्चे वीजोकोइजीव दे-
वतापणे उपजेअथवाचवे. त्रीजा देवलोके नवदि-
वसने विसमुहुर्तनो, चोथादेवलोके बारदिवसअने
दशमुहुर्तनो, पांचमादेवलोक साक्षीबावीस दिवसनो,
छठा देवलोके पीस्ताळीसदिवसनो आठमाए सो
दिवसनो, नवमाए तथा दशमाए प्रत्येके संख्याता
मासनो अने अगियार तथा बारमाए संख्याता वर-
सनो विरहकाळ जाएवो. आ संख्याता वरस ज्यां
सुधी सोवरसंपुरानयाय त्यांसुधीनागणवा. पहेला,
वीजा तथा त्रीजा ग्रैवेयके संख्याता सेंकमो वरसनो,
चोथा, पांचमा अने छठा ग्रैवेयके संख्याताहजार

वरसनो अने सातमाआरमातथा नवमाग्रेष्यके
सरयाताजाखवरसनो उपजगाचवरानो मिरह काळ
कह्योंहे. ज्यासुधी हजार वरस पुरा न थाय त्या
सुधी सख्याता सेंकमा वरस, ज्यासुधी खाखवरस
पुरा नथायत्यसुधी सरयाताहजारवरस अने ज्यासुधी
कोकरसपुरानग्राय त्यासुधीना सरयाताखवरस-
गणाय ठे एक सर्वार्थ सिद्धविन। वाकीनाचारथनुक्तर-
विमाननेविपे पट्योपमना असरगातमाज्ञागजेटखो
अने सर्वार्थ सिद्ध विमानने मिपे पट्योपमनासरया-
तमाज्ञागजेटजो उत्फृष्ट मिरहकाळकह्योंहे जघन्यथी
एक समयनो उत्पातनथा चवन मिरहकाळ सर्वदेव
दोकेजाणवो

पृथ्वीकायादिपाचे एकेडियनाढनके प्रत्येक
समये जीवउत्पन्न थायहे अने चमेव माटे ते एके-
डियनेविपे विरहकाळहोयनहि

वेडडिय, तेझडिय अने चौर्दियना ढनके प्र
त्येके उत्पात अने चमननो विरह वधारेमा वधारे आ
तरमुदृत अने जघन्यथी एक समयनो दर्शोंहे गर्जज

तिर्यंच पंचेऽङ्गियने विषे वार मुहुर्तनो अने समुद्दिमं
 तिर्यंचपंचेऽङ्गियने विषे अंतरमुहुर्तनो जन्म तथा म-
 रणश्राश्रीविरहकाळजाणवो. गर्जज मनुष्यने विषे
 वारमुहुर्तनो अने समुद्दिममनुष्यने विषे चोवीस
 मुहुर्तनो उत्कृष्टविरहकाळहोयठे. मोहने विषे निरंतर
 जीवउत्पन्नथायठे. पण क्यारेक अंतर पडे तो जघन्य
 एक समय अने उत्कृष्टथी ठ मासनुं सिद्धगतिने विषे-
 आंतरुंकहुंडे तथा सिद्धगतिथी सिद्धना जीवोने चव-
 वानुनथी माटे चवनविरहकाळहोयनहि एमजाणदुं.

॥ इति विरहकाळ छार ॥

अथ त्रीसमुं चवन संख्याद्वार अने एकत्रीसमुं
 उपजवानुं संख्याद्वार.

चवन संख्या—एक समयमांजीवकेटलाचवे
 (मरे) ए संख्यानुं जे कहेबुं ते चवन संख्या तथा
 एक समयमां केटलां उपन्न थाय एम जे कहेबुं ते
 उपजवानी संख्याद्वार. ऐ बन्नेद्वार नेगा कहे ठे.

नारकीना दंडके, जीवो उपजे तो समये समये
 जघन्यथी एक, वै त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता अ-

सख्याता उपजे छे तथा चवे ठे.

दश जुवनपति, व्यतर, ज्योतिषी अनेकैमानिक मां सौधर्म देवलोकथी मार्कीने आठमा सहस्रार देवलोक सुधीना देवलोकने विषे जीवो जो उपजे तो, एक समयमां जघन्यथी एक, वे त्रण अने उत्कृष्टा सख्याता असंख्याता जीवो उपजे तथा चवे ठे. कारणके आठमा देवलोक सुधी तिर्यच पण जायवे, ने ते तिर्यचगतिमा जीवो असरयाता ठेमाटे असंख्याता उपजे एम जाणवु नवमा आदि उपरना देवलोके एक समयमा ठेवट सख्याता जीवो उपजे अने चवे ठे ते देवलोकमा फक्क गर्जजमनुष्यजायरे

पृथ्वीकाय, अपुकाय, तेउकाय अने वाउकायनादरुके, प्रतिसमये जीवो असख्याता उपजेठे अनेचवेरे, तथा वनस्पतिनादडके प्रतिसमये जीवो अनताउपजे ने अनताचवे ठे, वनस्पतिकायमा जीवो अनता ठे माटे वनस्पतिकायमाहेथीआव्या जीवो वनस्पतिकायमा समयेसमये अनताउपजे अने अनताचवे ठे एम जाणवुं वेङ्किय, तेश्किय, चौरिंकिय

अने तिर्थंचपंचेंद्रियना दंसुके, देवतानी पेरे एक वे
त्रणथी यावत् संख्याता असंख्याता उपजे अने चवे हे.

गर्जज मनुष्यने विषे उपजेतो एक समये वधा-
रेमाँ वधारे संख्याता जीवो उपजे अने चवे, तथा स-
मुर्हिम मनुष्यने विषे देवतानी पेरे संख्याताने असं-
ख्याता उपजे अने चवे हे. सिद्धगति (मोह)ने विषे
जीवो उपजेतो एक समये एक, वेष्टी माँकीने यावत्
एकसोने आठ सुधि उपजे हे. ते सिद्धगतिमांथी प-
रुवानो अन्नाव होवाथी कोइ चवतो नथी.

॥ इति चबन तथा उपजवानु संख्याद्वार ॥

अथ वत्रीशमुं गतिद्वार.

गति-गमन करवुं-कया दंसुकनो जीव कया
कया दंसुकेजाय एम जे कहेवुं ते आहिं गतिद्वार जाणवुं.

नारकी जीवो नारकीमांथी नीकळी, गर्जज
तिर्थंच अने गर्जज सनुष्य एम वे दंसुकमाँ जाय हे.
दशलुवनपति, दृष्टतर, ज्योतिषी अने सौधर्म तथा
शान देवलोकना देवो भवांतरै, पृष्ठवीकाय, अप्का-
य, वनस्पतिकाय, पंचेंद्रिय तिर्थंच अने मनुष्य एम

पाच दंकके जाय, तथा सनत् कुमारादिसहस्रार पर्ये
 तना देवो गर्जज तिर्यच अने मनुष्य एम वे दक्षके
 जाय, ने सहस्रारथी उपरना देवदोकना देवो ,एक
 गर्जज मनुष्यनाज दक्षके जाय रे, पृथ्वीकाय, अप-
 काय, वनस्पतिकाय तथा वेश्डिय, तेष्डिय अने चौरि
 दिय ए ठ दक्षकना जीवो, नवातरे पाच एकेदिय,
 त्रण विगलेंदिय, तथा तिर्यच पचेंदिय अने मनुष्यना
 मलीदश दक्षकने विषेजाय अने वाजकाय तथा तेभका
 यनाजीवो ए उपर कहेला दश दक्षकमाथी एक मनु-
 ष्यना दक्षक सिवाय वाकीना नव दक्षकने विषेजाय रे
 गर्जजतिर्यच पचेंदिय श्वने गर्जजमनुष्यना दक्षकमाथी
 सूर्याता आयुष्यवाला जीवो पोतानाकर्मानुसारे ३४
 दक्षकमा जाय नथा असन्धाता आयुष्यवाला तो तेर
 देवतानाज दक्षके जाय रे सायाता आयुष्यवाला गर्जज
 मनुष्यमाथी वज्रन्पञ्चनाराच सधयणना धणी कोडक
 जीव आगे कर्म खपावीने सिव्वति माहे पण जाय रे
 एम सामान्ये चोबीसे दक्षकना जीवोनीगति कही
 हवे चोबीसे दक्षकना जीवोनी गति पाचसेने

त्रेसठ जीवन्नेदने विषे कहे डेः—पहेली थठी नारकीना
जीवो आयुक्षये नारकीमांथी नीकळीने पंदर कर्म
ज्ञूमिनां गर्जजमनुष्यपर्याप्ता, पंदर कर्मज्ञूमिनां गर्ज-
जमनुष्य अपर्याप्ता तथा पांचगर्जजतिर्थं च पर्याप्ताने
पांचगर्जजतिर्थं च अपर्याप्ता एवं चालीश जीवन्नेदने विषे
जाय, तथा सातमी नारकीथी नीकळां जीवो तो प्रांच
गर्जज तिर्थं च पर्याप्ताने पांचगर्जज तिर्थं च अपर्याप्ता
एमदशजीवन्नेदने विषे जायडे. दशलुवनपति,
सालव्यंतर, पंदरपरमाधामी, दशतिर्थग् ब्रञ्जक,
दशज्योतिषी, सौधर्म, इशान अने एक किल्वीषिया
एम चोसठ जातिनां देवोमांथी नीकळ्या जीवो, पंदर
कर्मज्ञूमिनागर्जज मनुष्य अने पांच जातिना गर्जज
तिर्थं च तथा बादर पृष्ठवीकाय, बादर अपकायने बा-
दरप्रत्येकवनस्पतिकाय मळी त्रेवीसपर्याप्ता तथा त्रे-
वीस अपर्याप्ता एवं डेताळीस न्नेदमां जाय डे. सन्तत
कुमारथी मांर्मीने सहस्रार पर्यंत छ देवलोकना देवो,
वे किल्वीषिया जातिना देवो अने नवलोकांतिकना
देवो एम सत्तर जातिना देवोमांथी नीकळ्या जीवो,

पांच गर्जज तिर्यंच अने पंद्र कर्म ज्ञमिना मनुष्य
 नामली वीस पर्याप्ता तथा वीस अपर्याप्ता एव
 चाल्हीस ज्ञेदमा जाय ठे नवमा आणत देवलोकथी
 मांझीने बारमा श्रद्धयुत देवलोक सुधीना चार देव-
 लोकना देवो अने नव ग्रैवयक तथा पांच अनुत्तरवि-
 मानना देवो एसर्वे मळीने अढार देवलोकना नीक-
 घ्याजीव, ते पदरकर्म ज्ञमिना मनुष्यमां जाय ठे
 नारकीनो एक दर्क क तथा देवतानातेरदर्कके मळीने
 चौद दर्ककनी गति कही जीवमात्र उत्पति काळे
 अपर्याप्तावस्थाए होय अने पठीथी पर्याप्ता थाये,
 ए अपेक्षाए अहीं नारकी तथा देवतानी गति पर्या-
 प्ता तथा अपर्याप्ता जीवज्ञेदे कहीठे तो ते करण
 अपर्याप्ता जाणवा करण अपर्याप्ता जीव अवश्य
 पर्याप्ता थायज, तेथी सग्रहणी विगेरेमा कहुं ठे के
 नारकी तथा देवताचवीने पर्याप्ता तिर्यंच अने मनुष्य
 थाय एमा कोइ विरोध नवी.

पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पतिकाय तथा वे
 इङ्गिय, ते इङ्गिय अने चौरिङ्गिय एव रदरुक्ताजीगो

आयुक्तये आप आपणा दंमकमांथी नीकलीने, पंदर कर्म चूमिना गर्जज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर गर्जज मनुष्य अपर्याप्ता, एकसोने एक समुद्धिम मनुष्य अने अमताळीसतिर्यचना ए सर्वे मळीने एकसोने उगणा एंशी जीवन्नेदने विषे पोतपोताना कर्मानुसारे जाय ढे. तेजकाय अने वाडकाय ए वे दंमकना नीकल्या जीव, अमताळीस न्नेदना तिर्यचमां जाय ढे. एवी रीते बावीस दंकनी गति कही.

गर्जज तिर्यच पंचेंड्रिय एवा जखचरजीवो आरमांथी बारमा देवलोके, नव ग्रैवेयके अने पंच अनुक्तर विमाने जाय नहि माटे सर्व पांचसे ने ब्रेसर जीवन्नेदमांथी ए अढार स्थानकना पर्याप्ता तथा अपर्याप्तामळी उत्रीस जीवन्नेद वादकरता बाकीना पांचसेने सत्तावीस जीवन्नेदमां जखचर जीवो जाय ढे. गर्जजउपरिसर्पजीवो उपर कहेला पांचसेने सत्तावीस जीवन्नेदमांथी सातमीअने उठी नारकीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी चार न्नेद वर्जीने बाकीना पांचसेने ब्रेवीस जीवन्नेदमां जाय ढे. गर्जज

थलचर जीवो (चोपगा) उपर कहेला पांचसेने सत्तावीस जीवन्नेदमाथी सातमी, ठठी अने पांचमीनारकीनापर्यासा तथा अपर्यासा मळीठन्नेदवर्जी ने वाकीना पांचसे ने एकवीस जीवन्नेदने विषे जाय रे गर्जजखेचरजीवो उपरकहेला पांचसेने सत्तावीसजीवन्नेदमाथी सातमी, ठठी, पांचमी अने चोथी नारकीनापर्यासा तथा अपर्यासामळीआरन्नेदवर्जीने वाकीना पांचसेने उगणीस जीवन्नेदमा जाय रे गर्जज छुजपरिसर्पजीवो उपरकहेलापांचसेने सत्तावीस जीवन्नेदमाथी सातमी, ठठी, पांचमी, चोथी अने त्रीजीनारकीनापर्यासा तथा अपर्यासा मळीदशन्नेदवर्जीने वाकीनापांचसेने सत्तरजीवन्नेदमांजाय रे, हवे असझी तिर्यच पचेडियजीवो आयुक्तयेनिकलीनेत्रणसेने पचाणुन्नेदने विषे जाय तेना नाम कहे रे,—दश छुवन पति, सोल व्यंतर, पदर्परमाधामी, दशतिर्यग् जृन्नक, ठप्पन्नअतरद्वीपनामनुष्यो, पहेली नारकी अने पदरकम्भजुमिनामनुष्यो एव एकसोने त्रेवीस पर्यासा तथा अपर्याप्ता मळीज्ञे वसेने द्वेताठीस तथा

एकसोने एक समुर्द्धिम मनुष्यो अने अकृताक्लीस ज्ञेद तिर्यचना गणतां त्रणसेने पंचाणुं जीवज्ञेद यथा तेमां असंझी तिर्यच पचेंड्रियनी गति जाणवी. एवं त्रेवीस दंरकनी गति कही.

मनुष्यना दंरके गति कहे ढे. प्रथम समुर्द्धिम मनुष्य आयुक्ष्ये, समुर्द्धिम मनुष्यमांथी नीकळ्या, पंदर कर्म चुमीज मनुष्यपर्याप्ता, पंदरकर्मचुमिज अपर्याप्त्या, एकसोने एक समुर्द्धिम मनुष्य अने अकृताक्लीस ज्ञेदना तिर्यच एवं एकसोने उगणा एंसी जीवज्ञेदमां जाय ढे पंदर कर्मचुमिना गर्जज मनुष्यो मांथी जीवो नीकळीने पांचसेने त्रेसठ जीवज्ञेदमां जाय ढे. त्रीस अकर्म चुमिना मनुष्यमांथी नीकळ्या जीवो, दशचुवनपति, सोखब्यंतर, पंदर परमाधामी, दशतिर्यंग् ऋञ्जक, दश ज्योतिषी, एक किछ्वीषिया अने सौधर्म तथा इशान ए बे देवसोक मळी चोसठ जीवज्ञेदमां जाय ढे. उपन्न अंतर छीपनामनुष्यमांथी नीकळ्या जीवो, दश चुवनपति, सोखब्यंतर, पंदर परमाधामी अने दश त्रिर्यंग् ऋञ्जक एम एकावन

जीवन्नेदमां जाय रे इति गतिष्ठार.

अथ तेत्रीशमुं आगतिष्ठार

आगति-आगमन-क्या दर्शकने विषे क्याक्या
दर्शकना जीवो आवीने उपजे एम जे कहेबु तेनु
नाम अहि आगतिष्ठार जाणबु

नारकी तथा देवताना मळी चौट दर्शकने विषे
एक तिर्थच पञ्चेऽङ्गिय अने बीजा मनुष्य एम वे दर्शक
माहेथी जीवो आवी उत्पन्नयाय रे पृथ्वीकाय,
अपकाय अने वनस्पतिकाय एम त्रण दर्शकने विषे.
एक नारकीवर्जीने वाकीना ब्रेवीशे दर्शकमाहेथी जी-
वोआवी उत्पन्नयाय रे. तेउकाय, वाउकाय, वे
इङ्गिय, ते इङ्गिय अने चौर्दिंगिय एम पाच दर्शकने
विषे यावरना पाच, विगलेऽङ्गियना त्रण, तिर्थच प-
ञ्चेऽङ्गिय अने मनुष्य एम दश दर्शक माहेथी जीवो
आवी उत्पन्न याय रे. तिर्थच पञ्चेऽङ्गियना दर्शकने विषे
चोवीशे दर्शकमाहेथी जीवो आवी उत्पन्न याय रे
मनुष्यना दर्शकने विषे. तेउकाय अने वाउकाय
सिवाय वाकीना घावीश दर्शकमाहेथी जीवो आवी

उत्पन्न थाय रे. एम सामान्ये चोवीशें दंसकनी
आगति कही.

हवे चोवीरे दंसके, पांचसे त्रेसठ जीवन्नेदमांथी
आगति कहेरे—पहेली नरके. पंदरकमंजूमिज
गर्जजमनुष्य, पांच गर्जज तिर्यंच पंचेंद्रिय अने पांच
समुद्दिमतिर्यंच पंचेंद्रिय एम पच्चीशभेदना जीव आवो
उपजे. बीजी नरके. पंदरकमंजूमिजगर्जज मनुष्य अने
अने पांच गर्जज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम वोस नेदना जीव
आवी उपजे. त्रीजीनरके. पंदरकमंजूमिजगर्जज मनु-
ष्य तथा गर्जज जलचर, थलचर, ऊरपरिसर्प अने खेचर
एम ढुगणिश नेदमांहेथी जीव आवी उपजे. चोथीनरके
पंदरकमंजूमिज गर्जजमनुष्यतथा गर्जज जलचर थल
चर अने ऊरपरिसर्प एम अढार नेदमांहेथी जीव आवी
उपजे. पांचमी नरके पंदरकमंजूमिज गर्जज मनुष्य
तथा जलचर अने ऊरपरिसर्प एम सत्तर नेदमांहेथी
जीव आवी उपजे. छठीनरके पंदरकमंजूमिज गर्जज
मनुष्य अने गर्जज जलचर एम सोलन्नेदमांहेथी जीव
आवी उपजे. सातमी नरके पाण पंदरकमंजूमिजग-

गर्ज मनुष्य अने जखचर एम सोलज्जेदमांहेरी आवी
उपजे नरकने विषे अपर्याप्ता जीवो जाय नहि ए
प्रकारे नारकीना ठस्के आगति कही

दशञ्जुवनपति, सोल व्यतर, पठर परमाधामी
अने उशतिर्यग्भूज्जक ए एकावनजातिनादेवोनेविषे
एकसोने एक द्वेत्रना गर्जज मनुष्यपर्याप्ता, पांचग-
र्जजतिर्यच पर्याप्ता अने पाच असझी तिर्यच पचेंडिय
एम एकसोने अगियार ज्ञेदमाहेरी जीव आवी उपजे
दश प्रकारना ज्योतिषी अने सौधर्म एम अगियार
जातीना देवोने विषे पदर कर्मज्जुमिज गर्जज मनुष्य,
त्रीस अकर्मज्जुमिज गर्जज मनुष्य अने पाच गर्जज
तिर्यच एम पचास ज्ञेदमाहेरी जीवो आवी उपजे
वीजा इशान देवलोकने विषे पदरकर्मज्जुमि, पांचहरि
वर्ष, पाच रम्यक, पाचदेवकुरु ने पांच उत्तरकुरु एव
पांत्रीस क्षेत्रना गर्जज मनुष्यो तथा पाच गर्जजतिर्यच
एम चालीश ज्ञेदमाहेरी जीव आवी उपजे पहेला
किछीविया जातिना देवोने विषे पदर कर्मज्जुमि, पाच
उत्तरकुरुने पांच देवकुरु एव पचीस क्षेत्रना गर्जज

मनुष्यो तथा पांचगर्जज तिर्यच पंचेऽङ्गिय एम त्रीस-
न्नेदमांहेथी जीव आवी उपजे. त्रीजायी आठमासुधी
उ देवलोक, नव खोकांतिक अने वे किल्वीषिया एम
सत्तर जातिना देवोने विषे पंदर कर्मजुमिज गर्जज
मनुष्य अने पांच गर्जज तिर्यच पंचेऽङ्गिय एम वीस-
न्नेदमांहेथी जीवो आवी उपजे. नवमा आणंत देव-
खोकथी मांसीने पांच अनुक्तर विमान पर्यतना अढार
देवखोकने विषे पंदर कर्मजुमिज गर्जज मनुष्यना न्ने-
दमांहेथी जीव आवी उपजे. एवी रीते एक नारकीनो
दंरुक तथा तेर देवताना दंरुक मलीने चौदं दंरुके
आगति कही.

पृथ्वीकाय, अपकाय अने वनस्पतिकाय एत्रण
दंरुकनेविषे अर्नताळीसन्नेदना तिर्यच, एकसोने एक
समुच्चिद्भम मनुष्य तथा पंदर कर्मजुमिज गर्जज मनु-
ष्य पर्याप्ता, पंदर कर्मजुमिना गर्जज मनुष्य अपर्याप्ता
तथा पंदर परमाधामी, दश जुवनपति, सोलव्यंतर,
दशतिर्यग् ब्रून्नक, दश ज्योतिषी, सौधर्म तथा इशान
अने एक किल्वीषिया जातिना देवो एम सर्वे मली

वसेने त्रेताल्लीस ज्ञेदमाहेयो जीव आप्नी उपजे, ते
 उकाय, वाउकाय, वेङ्गिय, तेङ्गिय, चारिङ्गिय
 अने असङ्गीतिर्यच पचेंडियने विषे एकसोनेएक
 समुर्धिम मनुष्य अपर्याप्ता, पठर कर्म जुमिज मनुष्य
 पर्याप्ता, पठर कर्म जुमिज मनुष्य अपर्याप्ता अने
 अन्ताल्लीस ज्ञेदना तिर्यच एम एकसोने उगणाएसी
 ज्ञेदमाहेयी जीव आप्नी उपजे गर्जेज तिर्यच पचें
 डिय एमा जटाचर, यज्ञचर, उरयरिसर्प, जुजपरिसर्प
 अने सेवरने विषे एकसोने एक समुर्धिम मनुष्य अ-
 पर्याप्ता, पठर कर्म जुमिज गर्जेज मनुष्य पर्याप्ता,
 पठर कर्म जुमिज मनुष्य अपर्याप्ता, अन्ताल्लीस
 ज्ञेदना तिर्यच तथा पठर परमाधामी, दग जुननपनि,
 सोखव्यतर, दग तिर्यग् जज्ञक, दशा व्योतिप, त्रण
 किण्विषीया, नव सोकातिक अने सौर्यमंथी मानीने
 आठमा सहस्रार पर्यंत् देवतोक तथा सात नारकी
 एम सर्वेमल्लीने घसेने समसर जीवज्ञेड माहेयी जीव
 आप्नी उपजे, श्रेष्ठीन दक्षके आगनि कही

समुर्धिम भनुष्यने विषे पञ्च त्र्यं जुनिर ज

नुष्य पर्याप्ता, वादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता,
 वादर अपकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, वादर प्रत्येक
 वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, सुद्धम पृथ्वीकाय
 पर्याप्ता अपर्याप्ता सुद्धम अपकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता
 सुद्धम साधारण वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, वा-
 दर साधारण वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता त्रण
 विकलेंड्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता, तथा वीस तिर्यच
 पंचेंड्रियना अने एकतोने एक समुद्धिम मनुष्य एम
 सर्वे भळीने एकसोने इंकोतेर न्नेदमांथी जीवो आवी
 उपजे. पंदर कर्म चुमिज गर्जज मनुष्य ने वीषे उपर
 कहेला एकसोने इंकोतेर जीवन्नेद तथा नव्वाणु दे-
 वताना न्नेद अने पहेलीथी छठीनारकी सुधीना ना-
 रकी एम सर्वे भळीने वसेने ठोंतेर न्नेदमांहेथी जीव
 आवीउपजे. त्रीस अकर्म चुमिना मनुष्यने विषे पं-
 दर कर्मचुन्निज गर्जज मनुष्य पर्याप्ता अने पांच गर्जज
 तिर्यच पर्याप्ता भळी वीसन्नेदमांहेथी जीवआवीउपजे.
 उपन्न अंतर छीपना मनुष्यने विषे पंदर कर्मचुमिज
 गर्जज मनुष्य पर्याप्ता तथा पांच गर्जज तिर्यच पर्याप्ता

अने पञ्च समुर्धिम तिर्यच पचेंड्रिय पर्याप्ता एम प-
शीसज्जेदमाहेथो जोव आवी उपजे एवीरीते चोवीस
दक्षे आगतिकही

॥ इति आगतिद्वार ॥

अथ चोत्रीसमु सपदा द्वार.

संपदा-पद्मी त्रेयासना नाम, १ अरिहतनी
पद्मी, २ चक्रवर्तिनी, ३ वासुदेवनी, ४ वल देवनी,
५ केशवीनी, ६ साधुनी, ७ श्रावकनी, ८ सम्यकृद्द
टिनी, ९ मरुलिङ्गनी, ए नव मोटी पद्मी तथा चौढ
रत्न चक्रवर्तिना भेलरत्ना त्रेयीस पद्मी याय ते चौढ
रत्नना नाम, १ सेनापति रत्न, २ गाया पति रत्न,
३ वार्धिक रत्न, ४ पुरोहित रत्न, ५ ख्रीरत्न, ६ ह-
स्तिरत्न अने ७ शश्वरत्न ए सात पचेंड्रीय रत्न ते
तथा १ चक रत्न, २ रुक्म रत्न, ३ वृन रत्न, ४
चर्म रत्न, ५ दक्ष रत्न, ६ मणिरत्न अने ७ कागणि
रत्न, ए सात एकेंड्रिय रत्न जाण्या एम नव मोटी
पद्मी, सात पचेंड्रिय रत्न अने सात एकेंड्रिय रत्न
यडने त्रेवीम यथा चौढ रत्नमा सेनारनि ने देश

साधे, गाथापति ते धान्य रसवती नीपजावे, वार्धिकंते
 आवास घर निपजावे, पुरोहित ते घाव साजा
 करे, शान्ति कर्म करे अने विघ्न टाळे, स्त्रीरत्न
 न्नोग साधन आवे, अश्व तथा हस्ति स्वारीकरणे
 कामआवे, चक्ररत्न पट् खंसाधतामार्गवतावे, खम्भु
 रत्नैवरीनुं मस्तक ठेदे, ठत्र रत्न चक्रवर्तिना हस्तस्पर्शे
 वारजोजनसुधी वीस्तरे तेष्वी वारजोजनसुधी उत्तापकरे,
 चर्म रत्न ते कार्य उपन्येठते चक्रवर्तिनास्पर्शे वारजो-
 जन विस्तरे ने तेजां प्रज्ञातकाळे वीजवावे ते संध्या-
 काळे उपन्नोगमांचावे एवा शालिप्रसुखनेउद्दग्नकरे,
 दंसरत्न ते वांकी झूमिसमी करे, काम पस्ते हजार जो-
 जन धरतीवीदारे अने तमिस्त्रादिक गुफाना वार-
 उघारे, मणिरत्न ते हस्त अथवा मस्तके वांद्युथकुं
 समस्तरोगहरे अने वार जोजन सुधी उद्योत करे,
 अने कांगणिरत्न ते वैताढय पर्वतनी गुफामां वन्ने
 नीतेथइने उगणपचास मांसलाकरण योग्य होय तथा
 तोखा मापवधारे एवीरीते चौद रत्नना गुण अथवा
 उपयोग जाणवो, चक्ररत्न, खम्भुरत्न, ठत्र रत्न अने

दक्ष रत्न ए चार रत्नो आयुध आळामां उपजे, चर्म
 रत्न, मणिरत्न अने कागणिरत्न ए त्रण रत्नो चक्रवर्तिना
 लक्ष्मीनारमाउपजे सेनापति, गाथापति, वार्धिक अने
 पुरोहित ए चार रत्नो चक्रवर्तिना पोताना नगरमा
 उपजे स्त्री रत्न वैताढय पर्वते विद्याधरना नगरमा
 उपजे अश्व रत्न तथा गज रत्न वैताढय पर्वतना मूळे
 उपजे चक्र रत्न, ठत्र रत्न अने ठक्करत्न ए त्रण एक धनुष्य
 एटले चार हाथ प्रमाणना होय चर्मरत्न वेहाय प्रमाण
 होय, समग्र रत्न घनीस आगुल लाखु होय, मणि-
 रत्न चारआयुललाखुने वे आगुलनुपहोलु होय,
 कागणि रत्न सुवर्णमय चार आंगुल लाखु होय, से-
 नापति गाथापति, वार्धिक अने पुरोहित ए चारनी
 उचाइ' (अवगाहना) चक्रवर्ति प्रमाणे ज्ञाणवी,
 मीरत्न चक्रवर्तिथी चार आगुलनोची होय, अश्व
 रत्न कानना मुळथो ते पुठना मुळ लगे एकसोने
 आठ आगुलनो छावो अने पडो आगुलनो उचो
 होय अने गजरत्न चक्रवर्तिथी घमणे उचो
 होय वे. सर्वे रत्ननु माप चक्रवर्ति ने आत्म आगुल

प्रमाण जाणवुं.

पहेली नरकथी नीकल्या जीवो कर्मानुसारे उ-
पर कहेली त्रेवीस पदवीमांथी सात एकिं द्वियरत्न
विना वाकीनीसोळपदवीपामे, वीजीनरकथी नीक-
ल्या जीवो कर्मानु सारे उपर कहेली सोळ पदवी-
मांथी चक्रवर्तीनी पदवीविना वाकीनी पंदर पदवी
पामे, त्रीजी नरकना नीकल्या जावो कर्मानुसारे
उपर कहेली पंदर पदवीमाथी एक वासुदेवनी अने
वीजी वळ देवनी पदवीविना वाकीनी तेर पदवी पामे,
चोथी नरकथी नीकल्या जीवो कर्मानुसारे उपर क-
हेलीतेरपदवीमांथीतीर्थकरनीपदवीविना वाकीनीबार
पदवीपामे, पांचमी नरकथी नीकल्या जीवो कर्मानुसारे
ते बार पदवीमांथीकेवळीनी पदवीविना वाकीनी अ-
गियारपदवी पामे, छही नरकथी नीकल्या जीवो कर्मा-
नुसारे ते अगियारपदवीमांथी साधुजीनी पदवीविना
वाकीनोदश पदवीपामे अने सातमीनरकथी नीकल्या
जीवो कर्मानुसारे समकितदृष्टीनी, अश्वरत्ननी अने
गज रत्ननी एस त्रण पदवी पामे, ज्ञुवनपति, वाण

व्यतर अने ज्योतिषी ए त्रणनिकायना नीकल्या जीवो
 कर्मानुसारे वासुदेव अने तिर्थकरनी पदवी विना
 वाकीनो एकवीस पदवी पामे, पृथगीकाय, अपकाय,
 चनस्पतिकाय तथा गर्जेज मनुष्यअने गर्जेजतिर्थ-
 चना नीकल्या जीवो कर्मानुसारे तिर्थकर, चक्रवाति,
 वल्लदेव अने वासुदेवनी पदवीविना वाकीनी उंगणीस
 पदवी पामे वे इङ्गिय, ते इङ्गिय अने चौरिङ्गिय तथा
 समुर्धिम तिर्थच पचेंडिने समुर्धिम मनुष्यमांथी नो-
 कल्याजीवो कर्मानु सारे तिर्थकरनी, चक्रवर्तिनी, व-
 ल्लदेवनी, वासुदेवनी अने केवळीनो पदवी विना
 वाकीनी अढार पदवी पामे तेउकाय अने वाउकाय-
 नानीकल्याजीवो कर्मानुसारे सात एकेंडियनी तथा
 हस्ति रत्ननी अने अश्वरत्ननी एम नव पदवी पामे
 पत्तरपरमाधामीने पदेला किछीपियाना नीकल्या
 जीवो कर्मानुसारे निर्यकर, चक्रवर्ति, वासुदेव, वल्ल-
 देव अने केवळी विना वाकीनी अढार पदवी पामे.
 उयरना वे किछीपियाना नीकल्या जीवो कर्मानुसारे
 ऊपर कहेली अढार पदवीमाथीसात एकेंडिय रत्ननी

पदवी विना वाकीनी अगियार पदवी पामे, सौ-
 धर्म अने इशान देवलोकना नीकल्याजीवो कर्मानु-
 सारे त्रेवीस पदवी पामे. त्रीजाथी आठमा देवलोक
 सुधीना अने नव लोकांतिकना नीकल्याजीवो कर्मानु-
 सारे त्रेवीस पदवीमांथी सात एकिंदिय रत्ननी पदवी
 विना वाकीनी सोलपदवीपामे. नवमाथी बारमा
 देवलोकना तथा नव ग्रैवेयक सुधीना नीकल्याजीवो
 सात एकिंदिय रत्नो तथा अश्वने हस्ति विना वा-
 कीनी चौदपदवीपामे. पांच अनुक्तर विमानना
 निकल्याजीवो तिर्थंकरनी, चक्रवर्तीनी, वल्ल देवनी,
 केवलीनी, मंकुलिकनी, साधुनी, श्रावकनी अने सम-
 कित दृष्टिनी एम आठ पदवी पामे. तिर्थंकर अने च-
 क्रवर्तीने विषे कोइ जीवोने तिर्थंकरनी, चक्रवर्तीनी
 मंकुलिकनी, समक्रितनी, साधुनी अने केवलीनी एम
 ठ पदवीछे लान्ने, वासु देवने विषे वासुदेवनी, मंकु-
 लिकनी अने समकीतनी एम त्रण पदवी लान्ने. व-
 ल्लदेवने विषे कोइ जीवोने वल्लदेवनी, मंकुलिकनी
 साधुनी, केवलीनी अने समक्रितनी एम पांच पदवी

खाज्ञे मनुष्यमाहे पुरुषप्रेदे नव मोटी पदवी तथा सेनापति, गाथापति, वार्धिक अने पुरोहित एम तेर पदवी खाज्ञे, मनुष्यमाहे स्त्रीप्रेदे समकीतनी, श्रावि कानी, साध्वीनी, केवलीनी अने स्त्री रत्ननो ए पाच पदवीखाज्ञे.

॥ इति सपठा छार ॥

अथ पात्रीसमु देवछार

देव—१ ऊऱ्यदेव, २ नरदेव, ३ धर्मदेव, ४ देवाधिदेव अने ५ ज्ञावदेव ठे मनुष्य अथवा तिर्यच पचेद्वियजीवोमांयो जेने देवतानु आयुष्य वाच्यु ठे ते आवताज्ञवे देवपणे उपजगे एवा जे जीवो तेने ऊऱ्यदेव कहीए चोद रत्न, नवनिधानजेहने होय तेने नरदेव कहीए साधुना सज्जावीस गुणे करो सहित होय तेहने धर्म देव कहीए वार गुणे सहित, अदार ढोप रहित तथा चोत्रीस अतिशय, पात्रीस वाणीना गुण ए विगेरे अनत गुणे करीने सहित धर्मना प्रवर्तक होय तेने देवाधिदेव कहीए चारनिकायना देवोनेज्ञाव देव कहीए ऊऱ्य देवनी जघन्य

स्थिति अंतर मुहुर्तनी अने उत्कृष्ट त्रण पद्व्योपमनी
 कही ढे, नरदेवनी जघन्यस्थिति सातसेंवरसनी
 अने उत्कृष्ट चोरासीलाखपूर्वनीकहीडे, धर्मदे-
 वनी जघन्यस्थिति अंतरमुहुर्तनी अने उत्कृष्ट देशे
 उणी पूर्वक्रोकु वरसनी कही ढे, देवाधि देववी जघ-
 न्य स्थिति बहोंतेरवरसनी अने उत्कृष्ट चोरासीलाख
 पूर्वनी कहीडे अने ज्ञाव देवनी जघन्यस्थिति दश-
 हजारवरसनी अने उत्कृष्ट तेत्रोससागरोपमनो
 जाणवी. ऊऱ्य देवचवीने देवता आय, नरदेव चवीने
 नरके जाय अथवा कोइक चारित्र ग्रहण करी स्वर्गे
 अथवा मोक्षे पण जाय ढे, धर्मदेवचवीने वैमानिक
 अथवा मोक्षमां जाय ढे, देवाधिदेव चवीने मोक्षे
 जाय अने ज्ञावदेव चवीने वादर पृथ्वीकाय, अप-
 कायने वनस्पतिकाय तथा गर्जज मनुष्य अने तिर्य-
 चमां जाय ढे. सर्वथो थोका नरदेव होय, नरदेवथी
 देवाधी देव संख्यात गुणा, देवाधि देवथो धर्म देव
 संख्यात गुणा, धर्म देवथी ऊऱ्यदेव असंख्यात गुणा
 अने ऊऱ्य देवथी ज्ञावदेव असंख्यात गुणा जाणवा।

ऊद्यदेवनेविषे युगलीआ मनुष्य तथा युगली-
 आ तिर्यच अने सर्वार्थसिद्धविना वाकीना सर्व स्था-
 नकेथी जीवो आवी उपजे. नरदेवने विषे देवताना
 तेर दम्कने पहेली नारकीना नीकल्या जीवो आवी
 उपजे, धर्म देवने विषे ठहीने सातमी नारकी तथा
 तेजकायने वाजकाय अने युगलीआ मनुष्य तथा यु-
 गलीआ तिर्यच वज्ञाने वाकीना सर्व स्थ्रानकना नी
 कल्या जीवो आवीने उपजे, देवाधिदेवमा किण्वी
 पिया सिवाय वैमानिक देवलोकना देवो तथा पहेली,
 बीजी अने त्रीजी नारकीमांथी नीकल्या जीवो आ-
 वीने उपजे अने ज्ञावदेवने विषे तिर्यच पचेड़िय अने
 सङ्गी मनुष्यमांथी नीकल्या जीवो आवीने उपजेरे.

॥ इति देवधार ॥

अथ वत्रीसमु सजतिधार

सजति—सयमी ते—१ सयती (संजमवाळा),
 २ संयता सयती, ३ असंयती, ४ व्रती (व्रतवाळा),
 ५ व्रताव्रती, ६ अव्रती, ७ पञ्चखाणी, ८ पञ्चखाणा
 पञ्चखाणी, ९ अपञ्चखाणी, १० पंचिया (पंचित), ११

बालपंमिया, १२ बाला, १३ संबुक्ता (संवृत), १४ संबुक्ता असंबुक्ता, १५ असंबुक्ता, १६ जागरा(जागृत) १७ सुताजागरा, १८ सुता, १९ धर्मिया (धर्मिष्ट), २० धर्माधर्मिया, २१ अधर्मिया, २२ धर्मविवसाइया (धर्मव्यवशाइ), २३ धर्माधर्म विवसाइया, २४ अधर्मविवसाइया, २५ धर्मेरिया (धर्ममांस्थित), २६ धर्माधर्मेरिया अने २७ अधर्मेरिया. एम सन्तावीस प्रकारनुं विवेचन चोवीस दंरुके नीचे प्रमाणे जाएँगुं.

नारकी, देवता, एकेंद्रिय, विगलेंड्रिय एम वावीसदंरुकना जीवो तथा समुर्द्धिस मनुष्य अने समुर्द्धिस तिर्यच पंचेंद्रियना जीवो, असंयती, अब्रती, अपच्छाणी, बाला, सुता, असंबुक्ता, अधर्मिया, अधर्मेरिया अने अधर्मविवसाइया कहांरे. गर्जजतिर्यच पंचेंद्रियना दंरुके जीवो, असंयती, संयतासंयती, अब्रती, ब्रताब्रती, अपच्छाणी, पच्छाणा पच्छाणी, बाला, बालपंमिया, सुता, सुताजागरा, असंबुक्ता, असंबुक्ता संबुक्ता, अधर्मिया, धर्माधर्मिया, अध-

म्मेरिया, धम्माधम्मेरिया, अधम्मविवसाइया अने
धम्माधम्मविवसाइया कहा रे गर्जज मनुष्यना द-
रके तो सयती विगेरे सक्तावीसे बोल लाज्जे रे

चोवीसे दंरकमा उत्तमधर्म साधन योग्य ग-
र्जज मनुष्यनो जब ढे तेमां सयम यह शके रे ते
सयम (चारित्र)ना पांच प्रकार रे १ सामायिक
चारित्र, २ ठेटो पस्थापनियचारित्र, ३ परिहार विशु-
द्धिचारित्र, ४ सूद्धम सपरायचारित्र अने ५ यथास्थात
चारित्र झान, दर्शन अने चारित्रनो जे लाज्ज तेनुं
नाम सामायिक चारित्र, पूर्व पर्यायनो ठेट अने न-
वापर्यायनु स्थापन करवु ते ठेटोपस्थापनिय चारित्र,
विशेषकर्म निर्जराये तपो विशेष ते परिहार विशुद्धि
चारित्र, अति सूद्धम कपाय ते सूद्धम सपरायचारित्र
अने अकपायपण याय तेनु नाम यथास्थात चारित्र
कहु रे

विशेषपणे ज्ञाणपाने अर्थे पांचे चारित्रे, १ ज्ञेद,
२ वेद, ३ राग, ४ निर्गथ, ५ झान, ६ लिंग, ७ शरीर
८ क्षेत्र, ९ काळ, १० गति, ११ योग, १२ उपयोग,

१३ कषाय, १४ लेश्या, १५ गुणस्थानक, १६ ज्वर, १७ आकर्ष, १७ ज्ञाव अने १८ अद्वप बहुत्व ए उंगणीस बोल संकेपे कहे डे.

सामायिक चारित्रना वे ज्ञेद रे, एक इत्वरिकने बीजुं यावत्कथिक तेमां इत्वरिक एटले स्वद्वपकाळनुं ने ते पहेला तथा बेला तिर्थकरना वारामां होय अने यावत्कथिक एटले घणा काळनुं ते बावीश तिर्थकरना वारामां तथा महाविदेह क्षेत्रमां होय रे. रेदो पस्थापनिय चारित्रना वे ज्ञेद रे, एक सातिचार रेदो पस्थापनियने बीजु निरतिचार रेदो पस्थापनिय, तेमां सातिचार एटले मुळ गुणधातिने प्राय डितरूप होय अने निरतिचार एटले इत्वरीक सामायिकवंत नव दिक्षितने वक्तिदिक्षारूप होय रे. परिहार विशुद्धि चारित्रना वे ज्ञेद रे, एक निर्विषमानसिकने बीजुं निर्विष्टकायिक परिहार विशुद्धिचारित्र, तेमां निर्विषमा नसिक एटले कर्म निर्जरा अर्थे तपो विशेष आचारित्रना आ सेवक ए कद्वपमां प्रवर्तता होय तेने होय अने निर्विष्ट कायिक एटले आ, चारित्रमां प्रवर्तता

ना अनुचारी एटले वैयाक्षादिकना करनारने होय रे. सुदम सपराय चारित्रना वे ज्ञेदरे, एक विशुद्ध मानसिक अने वीजु सक्षिप्त मानसिक सुदम सपराय चारित्र, तेमा विशुद्धमानसिक एटले क्षयक श्रेणीए चक्तां जीवने विशुद्ध पारिणामिकरूप अने वीजु सक्षिप्त मानसिक एटले उपशम श्रेणीयी पक्तां जीवने सक्षिप्त पारिणामिकरूप होयरे. यथाख्यात चारित्रना वे ज्ञेदरे, एक गांधास्थिकने वीजुं कैवलिक, तेमा गांधनस्थिक ते अगियारमा तथा वारमा गुणस्थानके वर्तता जीवोने होय अने कैवलिक ते तेरमा तथा चौदमा गुणस्थानके होय रे इति ज्ञेद. सामायिक चारित्र तथा रेतापस्थापनिय चारित्र, सपेटोने अथवा अपेटोने पण होय तेमा सपेटोने स्त्री, पुरुष अने नपुसक एम त्रणे वेदे होय अने अवेदी ते उपशम वेटो तथा क्षपकवेदोने होय रे परिहार विशुद्धी चारित्र सपेटी एटले पुरुष वेदवालाने अथवा नपुसक वेदवालाने होय रे. सुदम सपराय चारित्र तथा यथा रयात चारित्र अवेदी एवा उपगम तथा क्षपकवेदी

ने होय दे. इतिवेद. पहेलेशी चार चारित्र सरागी होय अने यंग्राह्यात चारित्र वितरागी होय दे. इति राग. निर्धना छ ज्ञेद दे १ पोलाक, २ बकुंस, ३ प्रतिसेवना कुशीद, ४ कषाय कुशीज, ५ निर्धन अने ६ स्नातक. ज्ञानादिना अतिचार सेवने करी ब्रतने कुशीत करे ते पोलाक कहीए, शरीरनी सुशुषा विशुषा करे अथवा उपकरण वहु मुद्यजब हळताराखे संग्रहे तेने बकुंस कहीए, मुख गुणतो पाले सेवे पण उत्तरगुणमां काँइ काँइ छानो दोष लगाने तेने प्रतिसेवना कुशीद कहीए, संज्वलन कषायोदये करी काँइक अप्रशस्त परिणाम थाय पण सुलगुणमां तथा उत्तरगुणमां काँइ दोष लगाडे नहि तेने कषाय कुशीद कहीए, संपुर्ण ब्रंशी रहित मोहनीय वर्जीत वितराग ठंड्हाह्य तेने निर्धन कहीए अने घातीकर्म रहित संयोगी केवली तथा सैखेशी प्रतिपङ्ग अंयोगी केवली तेने स्नातक कहेवायरे. सदुंसाधान्यनायुक्ता सरखा पुलाक, सदुंसाधान्यसरखां बकुंस, मस्त्याधान्य सरखा प्रतिसेवना कुशिल, उपएया धान्य सरखांक

पाय कुशील, -कणकीसहितचोखासरखा निर्वथ
 अने अणीशु चोखासदृयस्नातकजाणवा, पु-
 लाक, वकुस अने प्रतिसेवना कुशीलमा एक सामा-
 यिकचारित्र तथा बीजु ठेदोपस्थापनियंचारित्र
 एम वे चारित्रलाजे कपाय कुशीलमा प्रथमना चार
 चारित्र लाजे निर्वथमां अने स्नातकमा एक यथा-
 रथातचारित्रहोयरे इतिनिर्वथ प्रथमना चार
 चारित्रे वे, त्रण अथवा चार झान होय ते अने य-
 थारयात चारित्रमा पाचझाननीन्नजनाजाणवी
 इतिझान स्वलिंगे पाच चारित्रलाजे, अन्यलिंगे अने
 गृहस्थलिंगे परिहारविशुद्धी चारित्रविना वाकीना
 चार चारित्रलाजे, एम ऊऱ्यलिंगनी अपेक्षाएजा-
 णवु तथा ज्ञावलिंगनी अपेक्षाए स्वलिंगे पांचे चा-
 रित्र होय अने अन्यलिंगे तथा गृहस्थलिंगे एके चा-
 रित्र होय नहि. इति लिंग पहेला तथा बीजा चा-
 रित्रने विषे प्रश्नवार अथवा पांचे शरीरलाजे अने
 बीजा, चोथाने पांचमा चारित्रने विषे औदारिक,
 तैजस अने कार्मण एम त्रण शरीर होय ते इति

शरीर कर्म चुमिमां पांचे चारित्र होय अने अकर्म
 चुमि तथा अंतर द्वीपमां एके चारित्र होय नहि.
 इति देव. उत्सर्पिणी काळमां जन्मनी अपेक्षाए प-
 हेले आरे एके चारित्र न साज्जे अने बीजा, त्रीजा
 तथा चोथा आरामां पांचेचारित्रलाज्जे तथा पां-
 चमां छठा आरामां एके चारित्रहोय नहि. आ अव
 सर्पिणी काळमां जन्मनी अपेक्षाए पहेलाने बीजा
 आरामां एके चारित्र न होय, चोथा आरामां पांचे
 चारित्र होय, पांचमां आरामां एक सामायिक अने बीजुं
 छेदोपस्थापनिय एम वे चारित्र होय अने छहे आरे
 एके चारित्र होय नहि. इतिकाळ, नारकी, तिर्यंच
 अने मनुष्य ए त्रणे गतिमां चारित्रिनो आराधक
 जायनहि पण देवगतिमां जायतेमां सामायिक अने
 छेदोपस्थापनिय चारित्र आराधक जघन्य पहेले देव
 लोके अने उत्कृष्ट अनुत्तर विमाने जाय छे, परिहार
 विशुद्धि चारित्र आराधक जघन्य पहेले देवलोके अने
 उत्कृष्ट आरम्भे देवलोके जाय, सुद्धम संपराय चारित्र
 अने यथाख्यात चारित्रिना आराधक अनुत्तर विमाने.

जाय तथा यथास्यात् चारित्रशाराधक उत्कृष्टो मोक्षे
 पण जाय रे इतिगति मनयोग, वचनयोग अने का-
 ययोग एत्रणे योगे पहेलेथी चार चारित्र अने अयो-
 गीमां एक यथास्यात् चारित्र खान्ने इतियोग सा-
 गार उपयोगमा पांच चारित्र अने अनागार उपयो-
 गमां सुद्धमसपरायचारित्र वर्जीने बाकीना चार
 चारित्र खान्ने इति उपयोग प्रथमना चार चारित्र
 सकपायी अने यथारयात् चारित्र कपाय रहित
 जाणवु सकपायी चारित्रमांथी पहेला वीजा ने त्रीजा
 चारित्रे सज्जलननो क्रोध मान, माय अने लोज्ज होय
 रे तथा सुद्धमसपरायचारित्रे एक सज्जलन लो-
 ज्जनो कांइक अश्व होय रे इति कपाय, सामायिकने
 रेदोपस्थापनिय चारित्रमा ठुक्केश्या, परिहारविशुद्धि
 चारित्रमां पाठली त्रण लेश्या अने सुक्ष्म सपराय तथा
 यथास्यात् चारित्रने विषे शुक्र लेश्या कही रे इति
 लेश्या सामायिकने रेदोपस्थापनिय चारित्रे रहुं,
 सातमु, श्रावरमु ने नवमु एम चार गुणस्थानक होय,
 परिहार विशुद्ध चारित्रे नहुने सातमु एल वे गुणस्थग्रा

नक होय, सुहमसंपरायचारित्रे दशमु गुणस्थानक होय अने यथाख्यात चारित्रे अगियारमुं, वारमुं, ते रमुं तथा चौदमुं एम चारगुणस्थानक कहाँरे. इति गुणस्थानक. सामायिक अने डेढोपस्थापनिय चारित्रवाला जघन्य एकज्ञव अने उत्कृष्टा आठ ज्ञव करे अने बाकीना त्रणचारित्रवाला जघन्य एकज्ञव अने उत्कृष्टा त्रणज्ञव करे. इति ज्ञव. सामायिक चारित्र एकज्ञवमां जघन्य एकवार अने उत्कृष्ट नवसे वार आवे, डेढोपस्थापनियचारित्र एक भवमां जघन्य एकवार अने उत्कृष्ट एकसोने वीसवार आवे परिहार विशुद्धि चारित्र एक ज्ञवमां जघन्य एकवार अने उत्कृष्ट त्रणवार आवे, सुहमसंपराय चारित्र एक ज्ञवमां जघन्य एकवार अने उत्कृष्ट चार वार आवे अने यथाख्यात चारित्र एक ज्ञवमां जघन्य एकवार ने उत्कृष्ट बे वार आवे डे एम कहुं रे. इति आकर्ष. पहेलेघी चार चारित्र सुधीमां एक क्षयोपशमनाव लाज्जे अने यथाख्यात चारित्रने विषे उपशमनाव अने क्षायिकए बे ज्ञावलाज्जे. इतिज्ञाव. सर्वथी थोका

सुद्दमसपरायचारित्रिवाळा, सुद्दमसंपरायचारित्रि-
 वाळाथी परिहार विशुद्धिचारित्रिवाळा सख्यातगुणा,
 परिहारविशुद्धि चारित्रिवाळाथी यथाख्यात चारित्रि-
 वाळा सख्यात गुणा, यथाख्यात चारित्रिवाळाथी ठेदो
 पस्थापनिय चारित्रिवाळा संख्यात गुणा अने ठेदो
 पस्थापनिय चारित्रिवाळाथी सामायिक चारित्रिवाळा
 जीवो सख्यातगुणा लाज्जे इति अष्टपवहुत्त्व ए
 प्रमाणे उगणीश्वारे सक्षेपे करीने पांच चारित्रिकद्यां

॥ इति सजतिष्ठार ॥

अथ साड्ब्रीसमु जराउष्ठार

जराउ-वेदनी-ते वे प्रकारे ठे जरावेदन। अने
 श्वेषक वेदनी ते सर्व ससारी जीवोने होयठे शरीरे
 करीने जे वेदाय ते जरावेदनी अने मने करीने जे
 वेदाय ते श्वेषकवेदनी जाणवी,

नारकीनोएकदरुक, देवताना तेरदरुक,
 गर्जजतिर्यचनोएक दरुक, अने गर्जज मनुष्यनो
 एक दरुक एम सोब दरुकना जीवोने एक जरा-
 वेदनी अने वीजी श्वेषकवेदनी एम वे वेदनी होयठे.

(१७२)

एकिंडियनापांचदंरुकअने विगदेंडियना त्रण
 दंरुक एम आठ दंरुकना जीवोने तथा समुर्धिम
 मनुष्य अने समुर्धिमतिर्यचपंचेडियने एक जरा-
 वेदनीज होय ढे. सिद्धना जीवोने एके वेदनी नथी.
 ॥ इति जराउद्धार ॥

अथ अङ्गीसमुं परिग्रहार.

परिग्रह—संग्रह ते त्रण प्रकारे ढे. १ कर्म परि-
 ग्रह, २ शरीर परिग्रह अने ३ वाह्य ज्ञानोपगरण (ज्ञा-
 जनादि उपकरण) परिग्रह.

नारकी तथा एकिंडियने एक कर्म परिग्रह
 अने वीजो शरीर परिग्रह एम वे परिग्रह होय ढे.
 देवता तथा त्रण विगदेंडिय, तिर्यच पंचेडिय अने
 मनुष्यने त्रणे परिग्रह होय ढे.

॥ इति परिग्रहार ॥

अथ उंगणचालीसमुं अद्यप बहुत्वद्धार.

अद्यपबहुत्व एटले सर्व जीवोमां क्या दंरुके
 जीवो थोका अने क्या दंरुके जीवो वधारे एम जे
 कहेवुं तेनुं नाम अहिं अद्यपबहुत्व जाणवुं.

सवीथी गर्जजमनुष्य थोका, तेथी वादर अग्रिः
 कायना दम्के जीवो असख्यातयुणा, तेथी वैमानिक-
 ना दम्के जीवो असख्यातयुणा, तेथी चुवनपतिना
 दम्के जीवो असख्यातयुणा तेथी। नारकीना दम्के
 जीवो असख्यातयुणा, तेथी व्यतरना दम्के जीवो
 असख्यातयुणा, तेथी ज्योतिषीना दम्के जीवो अ-
 सख्यातयुणा, तेथी चौरिड्धियना दम्के जीवो अस-
 ख्यातयुणा, तेथी तिर्थच पचेड्धियना दम्के जीवो
 विशेषाधिक, तेथी वेष्टियना दम्के जीवो विशेषा-
 धिक, तेथी ते इड्धियना दम्के जीवो विशेषाधिक,
 तेथी पृथ्वीकायना दम्के जीवो असख्यातयुणा, तेथी
 अपकायना दम्के जीवो असख्यातयुणा, तेथी वाउ-
 कायना दम्के जीवो असख्यातयुणा अने वाउकायथी
 वनस्पतिकायना जीवो अनंतयुणा कहा ठे.ए प्रमाणे
 सामान्ये चोवीशे दम्के जीवोनु अर्घ्यवहुत्व कहा

विशेष व्याख्याए जीवो सवधी अर्घ्यवहुत्वना
 अष्टाषु ज्ञेदकहेरे गर्जजमनुष्यो सर्वे यद्धने
 (७३७६१६२, ५१४७६४३, ३७५४३५४, ३७५०३३६,)

सातक्रोक्त वाणुखाख अठयावीशहजार एकसौनैवासर
 कोक्कोक्त क्रोक्त, एकावनखाख वहेंतालीसहजार
 ढसेनेवेंतालीश क्रोक्कोक्त, साक्त्रीशखाख उंगणसाठ
 हजार त्रणसेने चोपनक्रोक्त, उंगणनालीशखाख पच्चास
 हजार त्रणसोनेभन्नीश रे, ते संख्यामांथी पण पुरुषो
 करतां ल्ली सत्यावीस गणी झाजेरी रे. माटे, २ प्रथम
 सर्वथी थोका गर्जज मनुष्यो (पुरुषो), ३ तेथी
 मनुष्यणी (ल्लीडि) संख्यातगुणी, ४ तेथी वादर ते-
 उकाय पर्यासा असंख्यातगुणा, ५ तेथी अनुक्तर वि-
 मानवासी देवो असंख्यातगुणा, ६ तेथी उपरखा त्रण
 ग्रैवेयकना देवता संख्यातगुणा, ७ तेथी नीचला त्रण
 ग्रैवेयकना देवो संख्यातगुणा, ८ तेथी अच्युत देव-
 लोकना देवता संख्यातगुणा, ९ तेथी आरण्य देव-
 लोकना देवो संख्यातगुणा, १० तेथी प्राणात देव-
 लोकना देवो संख्यातगुणा, ११ तेथी आणत देव-
 लोकना देवो संख्यातगुणा, १२ तेथी सातमी नरक
 (पृथ्वीना नारकी असंख्यातगुणा, १३ तेथी बढी नरक

पृथ्वीना नारकी असर्ख्यातगुणा, १४ तेथी सहस्रार
 देवलोकना देवो असर्ख्यातगुणा, १५ तेथी महाशुक्र
 देवलोकना देवो असर्ख्यातगुणा, १६ तेथी पाचमी
 नरक पृथ्वीना नारकी असर्ख्यातगुणा, १७ तेथी
 खातक देवलोकना देवता असर्ख्यातगुणा, १८ तेथी
 चोथी नरकपृथ्वीना नारकी असर्ख्यातगुणा, १९ तेथी
 ब्रह्मदेवलोकना देवो असंख्यातगुणा, २० तेथी त्रीजी
 नरक पृथ्वीना नारकी असर्ख्यातगुणा, २१ तेथी मां-
 हेंड देवलोकना देवो असरपातगुणा, २२ तेथी स-
 नक्षमार देवलोकना देवो असर्ख्यातगुणा, २३ तेथी
 बीजी नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यातगुणा, २४ तेथी
 समुच्चिरम भनुप्य असर्ख्यातगुणा, २५ तेथी इशान
 देवलोकना देवो असंख्यातगुणा, २६ तेथी इशान
 देवलोकनी देवीयो सर्ख्यातगुणी, २७ तेथी सौ धर्म
 देवलोकनां देवो सर्ख्यातगुणा, २८ तेथी सौ धर्म
 देवलोकवासी देवीयो वत्रीसगुणी रे माटे सर्ख्यात-
 गुणी, २९ तेथी जुवनपतिना देवता असर्ख्यातगुणा,
 ३० तेथी जुवनपतिनी देवीयो वत्रीसगुणी रे माटे

संख्यातगुणी ३१ तेथी पहेली नरक पृथ्वीना नारकी
 असंख्यातगुणा, ३२ तेथी खेचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनि
 या पुरुष असंख्यातगुणा, ३३ तेथी खेचर पंचेंड्रिय
 तिर्यंच योनिनी स्त्रीउं त्रिगुणी ठे माटे संख्यातगुणी,
 ३४ तेथी अबचर पंचेंड्रिययोनिया पुरुष संख्यातगुणा,
 ३५ तेथी अबचर पंचेंड्रिय योनिनी स्त्रीउं त्रिगुणी ठे
 माटे संख्यातगुणी, ३६ तेथी जबचर पंचेंड्रिय तिर्यंच
 योनिया पुरुष संख्यातगुणा, ३७ तेथी जबचर तिर्यंच
 योनिनी स्त्रीउं त्रिगुणी ठे माटे संख्यातगुणी, ३८ तेथी
 द्वयंतर निकायना देवो संख्यातगुणा, ३९ तेथी द्वयंतर
 देवीयो बत्रीसगुणी ठे माटे संख्यातगुणी, ४० तेथी
 ज्योतिषी देवता संख्यातगुणा, ४१ तेथी ज्योतिषीनी
 देवीयो बत्रीसगुणी ठे माटे संख्यातगुणी, ४२ तेथी
 खेचर पंचेंड्रिय तिर्यंच योनी या नपुंसक संख्यात-
 गुणा, ४३ तेथी अबचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनि या नपुं-
 सक संख्यातगुणा, ४४ तेथी जबचर पंचेंड्रिय तिर्यंच
 योनि या नपुंसक संख्यातगुणा, ४५ तेथी चौरिंड्रिय
 पर्यासा संख्यातगुणा, ४६ तेथी सर्व पंचेंड्रिय पर्यासा

विशेषाधिक, ४७ तेथी वेश्डिय पर्यासा विशेषाधिक,
 ४८ तेथी तेश्डिय पर्याप्ता विशेषाधिक, ४९ तेथी
 पचेंडिय अपर्याप्ता विशेषाधिक, ५० तेथी चौरंडिय
 अपर्याप्ता विशेषाधिक, ५१ तेथी तेश्डिय अपर्याप्ता
 विशेषाधिक, ५२ तेथी वेश्डिय अपर्याप्ता विशेषा-
 धिक, ५३ तेथो-प्रत्येक शरीरवाला घादर वनस्पति
 कायिया अपर्याप्ता असख्यातगुणा, ५४ तेथी वादर
 निगोदपर्याप्ता अनतकायना शरीर असख्यातगुणा, ५५
 तेथी वादर पृथ्वीकायियापर्याप्ता असख्यातगुणा ५६ तेथी
 वादर अपकायिया पर्यासा असख्यात गुणा, ५७ तेथी
 वादर वाउकायिया पर्यासा असख्यात गुणा, ५८ तेथी
 वादर ते उकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा, ५९
 तेथी प्रत्येक शरीरवाळा घादर वनस्पति कायिया
 अपर्यासा असख्यात गुणा, ६० तेथी वादर निगोदीया
 अपर्यासा असख्यात गुणा, ६१ तेथी वादर पृथ्वी का-
 यिया अपर्यासा असख्यात गुणा, ६२ तेथी वादर
 अपकायिया अपर्यासा असख्यात गुणा, ६३ तेथी वा-
 दर वाउकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा, ६४

तेथी सुहम तेउकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा,
 ६५ तेथी सुहम पृथ्वीकायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक,
 ६६ तेथी सुहम अपकायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक,
 ६७ तेथी सुहम वाऊकायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक,
 ६८ तेथी सुहम तेउकायिया पर्याप्ता संख्यात गुणा,
 ३५ तेथी सुहम पृथ्वीकायिया पर्याप्ता विशेषाधिक,
 ७० तेथी सुहम अपकायिया पर्याप्ता विशेषाधिक, ७१
 तेथी सुहम वाऊकायिया पर्याप्ता विशेषाधिक, ७२
 तेथी सुहम निगोदनां शरीर अपर्याप्ता असंख्यात
 गुणा, ७३ तेथी सुहम निगोदनां शरीर पर्याप्ता सं-
 ख्यातगुणा, ७४ तेथी अन्नव्य सिद्धिया जीव अनंत
 गुणा, ७५ तेथी पडिवाय प्रतिपत्ती सम्गग्न दृष्टिजीव
 अनंतगुणा, ७६ तेथी सिद्धना जीव अनंतगुणा, ७७
 तेथी बादर वनस्पतिकायिया पर्याप्ता अनंतगुणा, ७८
 तेथी बादर पर्याप्ता विशेषाधिक, ७९ तेथी बादर व-
 नस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा, ८० तेथी
 बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक, ८१ तेथी सर्वपर्याप्ता
 बादरजीव विशेषाधिक, ८२ तेथी सुहम वनस्पतिका-

यिया अपर्याप्ता असख्यातगुणा, ७३ तेथी सुद्दम अ-
पर्याप्ता विशेषाधिक, ७४ तेथी सुद्दम पर्याप्ता वनस्प-
तिकायिया संख्यातगुणा, ७५ तेथी सर्व सुद्दम पर्या-
प्ता विशेषाधिक, ७६ तेथी सर्व पर्याप्ता अपर्याप्ता
सुद्दम जीव विशेषाधिक, ७७ तेथी नन्द्यसिद्धिक नन्द्य-
जीव विशेषाधिक, ७८ तेथी निगोदनाजीव विशे-
पाधिक, ७९ तेथी वनस्पतिना जीव विशेषाधिक, ८०
तेथी एकेंद्रियजीव विशेषाधिक, ८१ तेथी तिर्यचयो-
निया विशेषाधिक, ८२ तेथी मिथ्या दृष्टि विशेषा धिक,
८३ तेथी अविरतिजीव विशेषाधिक, ८४ तेथी सक-
पायी जीव विशेषाधिक, ८५ तेथी छङ्गस्थजीव वि-
शेषाधिक, ८६ तेथी सयोगी विशेषाधिक, तेथी सर्व
संसारी जीवविशेषाधिक अने ८७ तेथी सर्व जीववि-
शेषाधिक रे

॥ इति अद्य बहुत्वम्भार ॥

अथ चालीसमु सङ्गीष्ठार

सङ्गी—सङ्गा—जाणतु तेने सङ्गा कहीए सङ्गा
त्रण प्रकारनी रे, १ दीर्घकालीकी सङ्गा, २ हितोप-

देशीकी संज्ञा अने इष्टिवादोपदेशीकी संज्ञा. घरा कालनी वात जाए एटवे त्रिकालिक वस्तुनुं जाणपणुं ते दीर्घ कालिकी नामे संज्ञा जाणवी. पोताना शरीर रक्षणे अर्थे इष्ट वस्तुमां प्रवर्त्ते अने अहित वस्तुथी निवर्त्ते तेनुं नाम हितोपदेशीकी संज्ञा जाणवी. छाद-शांगीना ज्ञाननार सम्यग् इष्टि श्रुतज्ञानने जे जाए तेनुं नाम इष्टिवादोपदेशीकी संज्ञा जाणवी.

चुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक ए देवताना तेर दंरुक तथा तिर्यचनो एक दंरुक अने नारकीनो एक दंरुक एम पंदर दंरुके, एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय कारणके आ अमुक काम कर्यु, अमुक काम करुं हुं, अने अमुक काम करीश एम अतित, अनागत अने वर्तमान ए त्रणकाल विषयिकनुं जाण पणुं ठे माटे ते दीर्घकालिकी संज्ञा जाणवी. बेझंडिय, तेझंडिय अने चौरिंडियना दंरुके जीवोने एक हितोपदेशीकी संज्ञा होय ठे, कारणके एमने ज्ञाव मन ठे माटे कांइक मनोज्ञान सहित वर्तमान कालने विषे इष्ट वस्तुनी प्रवृत्ति अने अनिष्ट वस्तुनी

(१४१)

निष्ठति रुप जाण पाणु होय तेयो तेने हितोपदेशिकी
संझा जाणवो, पृथ्वीकायादिक पाचे एकेंद्रियना दं-
रुके जीवोने एके सङ्गा होय नहि, कारणके एमने
एकज काय योग ढे माटे सङ्गा रहित जाणवा म-
नुष्यना दरुके जीवोने दीर्घ कालिकी सङ्गा होय तथा
कोडएक सम्यगदृष्टि, चौदपूर्वघरजीवोने वोजी
दृष्टिवादो पदेशिकी सङ्गा पण होय ढे हितो पदेशिकी
सङ्गा दीर्घकालिकी सङ्गाने विषे अतर्नुतरे

॥ श्ति सङ्गीष्ठार ॥

अथ एकताव्यसमु प्रकीर्णष्ठार

जीवोना शरीरादिकना माप जे अगुलेयी पामी
एते अगुलादिकनु स्वरूप तथा जीवोना आयुष्य जे
पद्योपम सागरोपमादिकना कहा ढे ते पद्योपम अने
सागरोपमनु स्वरूप सक्षेपथी कहे रे,

एक आत्म अगुल, वीजु उत्सेघागुल अने त्रीजु
प्रमाण अगुल एम अगुल त्रण प्रकारे ढे, तेमा जे काळे जे
देवेजेटलु मनुष्यनु अंगुलहोय तेअगुलप्रमाणने आत्म
अगुल कहु रे आत्म अगुले नगर, गाम, कुवा, तळाव,

वाव, गढ़, पोल, कोरा, वहाण, रथ अने गामादिक
भपायठे जेमके रुपज्ञदेवना वारे रुपज्ञदेवना अंगुले
मापीने लोको घर, हाट, कुवा प्रमुख करता हता अने
श्रीमहावीर स्वामीना वारे महावीर स्वामीना अंगुले
मापीने घर, हाट, कुवा प्रमुख लोको करता हता ए
प्रमाणे आत्म अंगुलनुं स्वरूप जाणबुं.

अनंता सुद्धम परमाणुए एक व्यवहार परमाणु
आय, तें व्यवहार परमाणुमंदिरने विषेडिङ्गादिकथी
आवता सूर्यना किरणोमां जे उमतां रजनां कणीया
देखाय ढे, तेना अनंतसा ज्ञाग जेटखो ऊणो होय
ढे. अनंता व्यवहार परमाणुए एक उष्ण सन्नियो
आय, आठ उष्ण सन्निये एक सण सन्नियो आय. ए
आठ सण सन्निए एक उर्ध्वरेणु अने आठ उर्ध्वरेणुए
एकत्रसरेणुआय ढे. ते त्रसरेणु बेश्डियादिक त्रस
जीवोने चालती जे रज उके ढे, तेना एक कणीया
वरावर जाणवो. आठ त्रसरेणुए एक रथरेणुए थाय;
तेरथरेणु रथादिक चालतां जे रज उके ढे ते मांहेना
एक कणीयां जेवको जाणवो. आठ रथरेणुए कुसद्दे-

त्रना युगलीया मनुष्यना एक वालाग्र, कुरुदेवना
 युगलीया मनुष्यना आठ वालाग्रे हरिवर्ष अथवा
 स्म्यकर्वर्षकेत्रना युगलीयानो एकवालग्र हरिवर्ष
 अथवा स्म्यक वर्ष केत्रना युगलीयाना आठ वालाग्रे
 हेमवत अथवा औरएयवृत्त केत्रना युगलीयानो एक
 वालाग्र हेमवत अथवा औरएयवृत्त केत्रना युगली-
 याना आठवालाग्रे, महाविदेह केत्रना मनुष्यनो एक
 वालाग्र महाविदेहना मनुष्यना आठ वालाग्रे, ज्ञ-
 रत अथवा औरवृत्तकेत्रना मनुष्यनो एक वालाग्र
 जाणवो आठ वालाग्रे एकलिख, आठ लिखे एकजु,
 आठजुए एक जवमध्य अने आठ जवमध्ये एक
 उत्सेधागुल थाय, एवा र उत्सेधागुले एक पग, वे
 पगे एक बेंत, वे बेंते अथवा चोवीस अगुले एक हाथ,
 चार हाथे एक धनुष्य, वे हजार धनुष्ये एकगाऊ थ्यने
 एवा चार गाऊए एक जोजन थाय ए उत्सेधागुले
 देवतादिक सर्व ससारी जीवोनी अवगाहनानु प्र-
 माण (माप) कहु रे

चारसें उत्सेधागुले एक प्रमाण अंगुल थाय
 अने एक ग्रनाट्टु तर्फे उत्सेध उलझाय रन

जाणवुं. पार्वतरे हजार उत्सेधांगुले करीने एक प्रमाण अंगुल थाय एम लखयुं ठे माटे बहु श्रुत कहे ते सत्य जाणवुं. चोवीस प्रमाण अंगुले एक हाथ, चार हाथे एक धनुष्य, वे हजार धनुष्ये एकगाउ अने एवा चार गाउए एक जोजन थाय ठे. शाश्वता पर्वतो, छीपो, समुद्रो, नदीछे, ऊहो, पृथ्वी, लाक, अलांक, नरका वासा अने विमानो विगेरेनुं लांबपणुं, पहोळपणुं तथा परिधि विगेरेना माप प्रमाण अंगुले कहाँ ठे.

हवे पट्योपमनुं स्वरूप कहे ठे. एक उद्धार प-
ट्योपम, बोजो अद्वापट्योपम अने त्रीजो हेत्र पट्यो
पम एवी रीते त्रिंश प्रकारना पट्योपम ठे, ने ते दरेक
ना वली एक बादर अने बीजो सुद्धम् एम वे वे ज्ञेद
गणतां पट्योपम ठ प्रकारना थाय ठे.

उत्सेधांगुले एक जोजन एटले चार गाउलांबो,
पहोळोने उंझो एवो एक कुपाकार पट्य (पालो)
कट्पीए, ने ते पट्य मध्ये देवकुरु अथवा उत्तर कुरुमा
उत्पन्न अयेलो एवो सात दिवसनो घेटो होय ते
घेटानोवाळ एक उत्सेधांगुल प्रमाण लइ तेना सात
चार आठ आठ खंड करीए त्यारे ए एक अंगुल प्र-

माण वाल्ना वीसलाख सत्ताणु हजार एकसोने वावन खंक थाय तेबा खरे गांसीने ए पट्ट्य जरीये, ते एवी रीते गांसीने जरीयेके तेना उपर चकवर्तीनु कटक चाल्यु जाय तो पण ते घसके नहि तथा गगानदीनो प्रवाह तेने ज्ञेदी शके नहि, अनिए करीने वले नहि अने वायरे करी एक वालाग्र खम पण उने नहि एवो गांसीने जरीए, पठी ए पट्ट्यमाथी एकेका समये एकेक केशखंक काढता जेटले काळे ते पट्ट्य खाली थाय तेटला काळन वादर उघार पट्ट्योपम कहे थे, ते उघार पट्ट्यो पम संख्याता समयकाळ, प्रमाण होय थे, जे कारणमाटे ते खम सख्याताज होय माटे सख्यातो काळ कह्यो थे एम उघार पट्ट्योपमनु स्वरूप जाणबु

पूर्वे जे वालाग्र खरे पट्ट्यजर्यो थे ते वालाग्र खरने छानीउ वादरवालाग्र कहे थे वादर एकेक खरना असरयाता असख्याता सुदम खम मनथी कट्टीए ते एवा सुदम कट्टीए केजे एक खरनो वली वीजो खम केवली केवल छाने करी पण कट्टी न शके एवा सुदम खम कट्टीए ए सुदम खरे करी पुर्वोक्त रीते कुप

नरीए पर्नी ते कुपमांथी समये समये एकेको खंक
 काढीए एम काढतां काढतां जेटला काले ए पव्यखाली
 आय तेटला काल्ने सुदम उद्धार पव्योपम कहे दे.
 सुदम उद्धार पव्योपम असंख्याता समय एटले सं-
 ख्याता क्रोम वरसनो होय दे. पच्चीस कोमा कोमी
 उद्धार पव्योपमना जेटला समय आय तेटला द्वीप
 अने समुद्रो आ तिर्छा लोकमां दे एम कहुँ दे.

पूर्वोक्त योजन प्रमाण पव्य बादर वालाये नरी
 अने तेमांथी सोसो वर्षे एकेक वालाय काढतां काढतां
 ते पव्य जेटला काले खाली आय तेटला काल्ने बादर
 अद्धा पव्योपम कहे दे. बादर अद्धा पव्योपम संख्याता
 क्रोम वरस प्रमाण आय. हवे तेहीज बादर
 खंकना पूर्वोक्त रीते असंख्याता सुदम खंक कद्पोए ने
 ते कद्पेला खंकमांथी एकेको खंक सोसो वर्षे काढीए
 ने एम सुदम खंक काढतां काढतां जेटलाकाले ते
 पव्य खाली आय तेटला काल्ने सुदम अद्धा पव्योपम
 कहे दे. सुदम अद्धा पव्योपम असंख्याता क्रोम वर्षे
 आय, दरा कोमाकोमी सुदम अद्धा पव्योपमे एक अद्धा

सागरोपम याय, ए सुद्दम अक्षपत्रोपम अने सागरो-
पमे करी देवता, नारकी अने तिर्यच विगेरना आ-
युज्य तथा स्वकायस्थिति, ज्ञवरिथिति अने कर्म
स्थितिनु काळमान कहु रे

पूर्वोक्त रीते एक योजन पद्ध्यनेविषे ज्ञरेला
वादर वालाग्र मांहेथी एकेका वालाग्रे स्पर्शेज्ञा जे-
टला जेटला आकाश प्रदेश होय तेटला तेऱला
समये एक वालाग्र काढीए एम काढता काढता जे-
टला काळे ते पद्ध्य खाली याय तेटला काळने एक
वादर क्षेत्र पद्ध्यापम कहीए एक वादरक्षेत्र पद्ध्योपम
असरयाती उत्सर्पणी अने असंरयाती अवसर्पणीए
याय रे हवे तेहीज वादर वालाग्र समना पूर्वोक्त
रीते सूद्दम वालाग्रखम कद्यपीए नेते कद्यपेला सुद्दम
वालाग्रने स्पर्शेला प्रदेश तथा अणस्पउर्या एवा स-
मस्त आकाश प्रदेशने समये समये काढता जेटला-
काळे ते पद्ध्य खाली याय तेटला काळने सुद्दम क्षेत्र
पद्ध्योपम कहे रे सुद्दमक्षेत्र पद्ध्योपमनु काळमान
पूर्वोक्त वादरक्षेत्र पद्ध्योपमयी असरयातगुण अस-
रयाती उत्सर्पणी अने असस्याती अवसर्पणी प्रमाण

कहुं रे. एवा दश कोमाकोमी सुद्धमकेत्र पद्ध्योपमे
एक सुद्धमकेत्र सागरोपम थाय. ए पद्ध्योपम तथा
सागरोपमे करी त्रसादिक जीवोनुं परिमाण करुं
एम कहुं रे.

त्रण प्रकारना सुद्धम पद्ध्योपमनुं प्रयोजन शास्त्र
ने विषे रे अने त्रण प्रकारना बादर पद्ध्योपम कहां रे
तेतो फक्त सुद्धम पद्ध्योपमना सुखावबोध थवा माटे
कहां रे तेनुं कांइ वीजुं प्रयोजन शास्त्रने विषे नथी.

दश कोमाकोमी पद्ध्योपमे एक सागरोपम थाय
दश कोमाकोडी सागरोपमे एक उत्सर्पीणी अने दश
कोमाकोमी सागरोपमे एक अवसर्पीणी थाय, एक
उत्सर्पीणी अने एक अवसर्पीणी मल्लीने वीस कोमा-
कोमी सागरोपमे एक काळचक्र थाय, अनंताकाळ
चक्रे एक पुज्जल परावर्त्तन थाय, एवा अनंत पुज्जल
प्ररावर्त्तनो, जीवे समकित अणफरस्या अतिक्रम्या
माटे तत्त्वरुचीरूप शुद्ध समकितवर्त्तना प्रकारे ज्ञान
दर्शन चारित्र आराधी अनंत सुखनुं धाम मोक्षने
माटे प्रयत्न करवो ते जीवने श्रेयस्कर रे.

॥ इति प्रकीर्णद्वार ॥

(१४४)

अथ जीवविचारना वोख

१ जीवना ज्ञेद वे रे-२ ससारी-कर्म सहित.
२ सिद्ध-कर्म रहित

३ ससारी जीवना ज्ञेद वे रे-४ त्रस-हाले
चाले ते ५ स्थावर-स्थिर रहे ते

६ स्थावर जीवना पांच ज्ञेद रे-७ पृथ्वीकाय--
माटी पापाणादिक ८ अप्पकाय--पाणीना जीव
९ तेजकाय-अग्निना जीव १० वातकाय वायराना
जीव ११ वनस्पतिकाय-जासु पालादिकना जीव

१२ वनस्पतिकायना वे ज्ञेद रे-१३ प्रत्येक-एक
शरीरने विषे एकजीव होय ते. १४ साधारण-एक
शरीरने विषे अनता जीव होय ते

१५ त्रसकायना चार ज्ञेद रे-१६ वेश्डिय-स्पर्श-
नेंडिय (त्वचा) अने रसनेंडिय (जीभ) वाळा
१७ तेश्डिय-स्पर्शनेंडिय, रसनेंडिय अने ग्राणेंडिय
(नासिका) वाळा १८ चउरिडिय-स्पर्शनेंडिय, रस-
नेंडिय, ग्राणेंडिय अने चक्षुरिडिय (आंख) वाळा
१९ पचेंडिय-स्पर्शनेंडिय, रसनेंडिय, ग्राणेंडिय, चक्षु-

रिंद्रिय अने श्रोत्रेंद्रिय (कान) वाला.

६ पंचेंद्रिय जीवना चार न्नेद ठे-१ नारकी,
२ तिर्यंच, ३ मनुष्य अने ४ देवता.

५ नारकीना सात न्नेद ठे. १ घम्मा, २ वंशा,
३ सेला, ४ अंजना, ५ रिषा, ६ मधा अने ७ माघ-
वती. तेना गोत्रना नाम अनुक्रमे जाणवा. १ रत्न-
प्रज्ञा, २ शर्कराप्रज्ञा, ३ वालुकाप्रज्ञा, ४ पंकप्रज्ञा,
५ धूमप्रज्ञा. ६ तमः प्रज्ञा अने, ७ तमः तमः प्रज्ञा.

८ तिर्यंच पंचेंद्रियजीवोना त्रण न्नेद ठे-१ जल-
चर-पाणीमां चालनारां. २ स्थलचर-जमीनउपर
चालनारां. ३ खेचर-आकाशमां उरुनारां.

४ मनुष्यना त्रण न्नेद ठे-कर्मज्ञूमीना, २ अकर्म-
ज्ञूमीना अने ३ अंतर्दीपना.

२० कर्मज्ञूमी १५ ठे-५ जरत, ५ औरवत अने
५ महाविदेह.

२१ अकर्मज्ञूमी ३० ठे. ५ हैमवत्, ५ हैरण्य-
वत्, ५ हरिहर्ष, ५ स्म्यक्, ५ देवकुरु अने ५ उत्तरकुरु.

२२ अंतर्दीपि ५६ ठे-आजंबुद्धीपमां पूर्व पश्चिम

लावा एवा हिमवत् अने शिखरी ए वे पर्वतो रे ते
पर्वतोना दरेकना रेमाना वव्वे गजदत्तवण समुद्र-
मां गयेला रे ने ते अकेक गजदत्त उपर सात सात
अतर्ढीप रे

१३ देवताना चार ज्ञेद रे १ जुवनपति, २ व्य-
तर, ३ ज्योतिषी अने ४ वैमानिक

१४ जुवनपतिना दश ज्ञेद रे -१ असुरकुमार
२ नागकुमार, ३ सुवर्णकुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अग्नि-
कुमार, ६ छीपकुमार, ७ उदधिकुमार, ८ दिग्गीकुमार,
९ पवनकुमार अने १० स्तनितकुमार

१५ व्यतरना वे ज्ञेद रे १ व्यतर, २ वाणव्यतर

१६ व्यतरना आठ ज्ञेद रे १ पिशाच, २ चूत,
३ यक्ष, ४ राहस, ५ किन्नर, ६ किपुरुष, ७ महोरग
अने ८ गधर्व.

१७ वाणव्यतरना आठ ज्ञेद रे १ अणपन्नी,
२ पणपन्नी, ३ इसीवाढी, ४ चूतवाढी, ५ कदित,
६ महाकदित, ७ कोहड अने ८ पतग.

१८ ज्योतिषीना पाच ज्ञेद रे. १ चक्र, २ सूर्य,

३ ऋह, ४ नक्षत्र अने ५ तारा.

१६ वैमानिक देवताना वे ज्ञेद ठे--१ कट्टपोपन्न--स्वामी सेवक नाव आदि मर्यादावाला. २ कल्पातित-स्वामी सेवक श्यादि मर्यादा रहित.

२० कल्पोपन्न--वार देवखोकवाला. ते देवखोकना नाम, १ सुधर्म, २ इशान, ३ सनत्कुमार, ४ माहेन्द्र, ५ ब्रह्मलोक, ६ लांतक, ७ महागुक्र, ८ सहस्रार, ९ आनन्द, १० प्राणत, ११ आरण अने १२ अच्युत.

२३ कव्यातितना वे ज्ञेद ठे, १ नव ग्रैवेयक, २ पांच अनुत्तर.

नव ग्रैवेयकना नाम.

१ सुदर्शन् २ सुप्रतिवंध ३ मनोरम ४ सर्वज्ञद
५ विशाळ ६ सुमनस ७ सुमणुस ८ प्रीयंकर ९
आदित्य.

१२ पांच अनुत्तरना नाम. १ विजय, २ विजयंत,
३ जयंत, ४ अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध.

१३ सिद्धना जीवो पंदर ज्ञेदे ठे. १ जिनसिद्ध,

१ अजिनसिद्ध, ३ तीर्थसिद्ध, ४ अतीर्थसिद्ध, ५ गृह-
लिंगसिद्ध, ६ अन्यलिंगसिद्ध, ७ स्वलिंगसिद्ध, ८ स्त्री-
लिंगसिद्ध, ९ पुरुषलिंगसिद्ध, १० नपुसकलिंगसिद्ध,
११ प्रत्येकबुद्धसिद्ध, १२ स्वयंबुद्धसिद्ध, १३ बुद्धोधित-
सिद्ध, १४ एकसिद्ध, अने १५ अनेकसिद्ध ए प्रकारे
जीवनो विचार सद्देषे जाणवो. हवे ए जीवोनु उत्कृष्ट
देहमान तथा उत्कृष्ट आयुपनु मान कहे रे

१४ पृथ्वीकाय शरीर प्रमाण-अगुलनो अस-
रयातमो ज्ञाग आयुप्-वावीश हजार वर्ष

१५ अपूकाय शरीर प्रमाण अंगुलनो असं-
ख्यातमो ज्ञाग. आयुप्-सात हजार वर्ष

१६ तेउकाय. शरीर प्रमाण-अगुलनो अस-
रयातमो ज्ञाग आयुप्-त्रण अहोरात्रि

१७ वाउकाय शरीर प्रमाण-अंगुलनो असं-
ख्यातमो ज्ञाग आयुप्-त्रण हजार वर्ष

१८ साधारण वनस्पतिकाय-शरीर प्रमाण-
अगुलनो असरयातमो ज्ञाग. आयुप्-अतर्सुदूर्त.

१९ प्रत्येक वनस्पतिकाय, शरीर प्रमाण-एक

हजार योजन अधिक, आयुष—दश हजार वर्ष,

३० वेङ्घिय, शरीर प्रमाण—बार योजन, आयुष—बार वर्ष,

३१ तेङ्घिय, शरीर प्रमाण—त्रण गाऊ, आयुष—४८ दिवस.

३२ चउरिन्द्रीय, शरीर प्रमाण—चार गाऊ, आयुष—२ मास.

३३ प्रथम नरकना जीवो, शरीर प्रमाण—७॥।।।
धनुष्णे ६ अंगुल, आयुष—एक सागरोपम.

३४ बीजी नरकना जीवो, शरीर प्रमाण—१५॥।।।
धनुष अने १२ अंगुल, आयुष—त्रण सागरोपम,

३५ त्रीजी नरकना जीवो, शरीर प्रमाण—३॥।।।
धनुष, आयुष—सात सागरोपम.

३६ चोष्टी नरकना जीवो, शरीर प्रमाण—६॥।।।
धनुष, आयुष—१० सागरोपम.

३७ पांचमी नरकना जीवो, शरीर प्रमाण—१२५
धनुष, आयुष—१७ सागरोपम,

३८ छठी नरकना जीवो, शरीर प्रमाण—२५०

धनुष, आयुष.—३२ सागरोपम.

३४ सातमी नरकनाजीवो, शरीर प्रमाण—५००

धनुष, आयुष—३३ सागरोपम.

४० गर्जज जखचर, शरीर प्रमाण—एक हजार
योजन आयुष—क्रोक पूर्व

४१ गर्जज स्थिलचर, शरीर प्रमाण—८ गाऊ
आयुष—त्रण पद्ध्योपम

४२ गर्जज खेचर शरीर प्रमाण—वेथी नव
धनुष्य आयुष—पद्ध्योपमनो असरयातमो ज्ञाग,

४३ गर्जज उजपरिसर्प शरीर प्रमाण—वेथी
नव गाऊ, आयुष—पूर्व क्रोड वर्ष

४४ गर्जज उरपरिसर्प, शरीर प्रमाण—एक हजार
योजन, आयुष—पूर्व क्रोड वर्ष,

४५ समुर्धिम जखचर शरीर प्रमाण—एक हजार
योजन, आयुष—क्रोक पूर्व वर्ष,

४६ समुर्धिम स्थिलचर, शरीर प्रमाण—वेथी नव
गाऊ, आयुष—८४००० वर्ष

४७ समुर्धिम खेचर, शरीर प्रमाण—वेथी नव

धनुष. आयुष—४२००० वर्ष.

४७ समुर्धिम चुजपरिसर्प. शरीर प्रमाण—वेशो
नव धनुष. आयुष-४२००० वर्ष.

४९ समुर्धिम उरपरिसर्प. शरीर प्रमाण—वेशी
नव योजन. आयुष—५३००० वर्ष.

५० गर्जज मनुष्य. शरीर प्रमाण त्रणगाऊ.
आयुष—त्रण पत्थोपम.

५१ समुर्धिम मनुष्य. शरीर प्रमाण—अंगुखनो
असंख्यातमो ज्ञान. आयुष—अंतर्मुहूर्त.

५२ चुवनपति देवता. शरीर प्रमाण—सात हाथ.
आयुष—असुरकुमारनिकायना देवोनुं एक सागरो-
पमथो अधिक, नवनिकायना देवोनुं देशेभुजुं वे
पत्थोपम.

५३ व्यंतर देवता. शरीर प्रमाण—सात हाथ.
आयुष—एक पत्थोपम.

५४ ज्योतिषी देवता. शरीर प्रमाण—सात हाथ.
आयुष—चंडमा—एक पत्थोपमने एक लाख वर्ष.
सूर्य—एक पत्थोपमने एक हजार वर्ष. ग्रह—एक

(२०७)

षट्योपम नक्षत्र—अर्ध पत्योपम तारा—एक पट्यो-
पमनो चोयो न्नाग

५५ सुधर्म देवलोकना देवता, शरीर प्रमाण—
सात हाथ आयुप—वे सागरोपम.

५६ इग्नान देवलोकना देवता, शरीर प्रमाण—
सात हाथ, आयुप—वे सागरोपमथी अधिक

५७ सनक्तुमार देवलोकना देवता शरीर प्रमाण-
र हाथ, आयुप—सात सागरोपम

५८ माहेन्ड्र देवलोकना देवता शरीर प्रमाण-
र हाथ, आयुप—सात सागरोपमथी अधिक

५९ ब्रह्म देवलोकना देवता, शरीर प्रमाण—
पांच हाथ, आयुप—दश सागरोपम.

६० लातक देवलोकना देवता, शरीर प्रमाण—
पांच हाथ, आयुप—चौद सागरोपम

६१ शुक्र देवलोकना देवता - शरीर-प्रमाण—
चार हाथ आयुप—सत्तर सागरोपम.

६२ सहस्रार देवलोकना देवता, शरीर प्रमाण—
चार हाथ, आयुप—अढार सागरोपम.

६३ आणत देवलोकना देवता. शरीर प्रमाण-
त्रण हाथ, आयुष—ठंगणीज्ञ सागरोपम.

६४ प्राणत देवलोकना देवता. शरीर प्रमाण-
त्रण हाथ, आयुष—२० सागरोपम.

६५ आरण देवलोकना देवता. शरीर प्रमाण-
त्रण हाथ, आयुष—२१ सागरोपम.

६६ अच्युत देवलोकना देवता. शरीर प्रमाण-
त्रण हाथ, आयुष—२२ सागरोपम.

६७ नवग्रैवेयकना देवता. शरीर प्रमाण-वे हाथ,
आयुष—१ ला ग्रैवेयके ६३ सागरोपम.

१	जा	”	६४	”
२	जा	”	६५	”
३	था	”	६६	”
४	मा	”	६७	”
५	ठा	”	६८	”
६	मा	”	६९	”
७	मा	”	७०	”
८	मा	”	७१	”

६७ पाच अनुत्तर विमानना देवता शरीर
 प्रमाण—एक हाथ आयुप—विजय, विजयत, जयंत
 ने अपराजीत, ए चार विमानना देवताउनु ३१ श्री
 ३३ सागरोपम सर्वार्थ सिद्ध विमाने—३३ सागरोपम,

श्री नव तत्त्वना दुटा वोद्ध

१ जीवतत्व, २ अजीवतत्व, ३ पुण्यतत्व, ४ पापतत्व, ५ आश्रवतत्व, ६ सवरतत्व, ७ निर्जरातत्व, ८ घटतत्व, ९ मोक्षतत्व

प्राण^१ धारण करे ते जीवतत्व, तेथी विपरित जमस्वज्ञाववाळो अजीवतत्व, शुभ कर्मना उदयधी सुखनो अनुज्ञव थाय^२ ते पुण्यतत्व, अशुभ कर्मना उदयथी छु खनो अनुज्ञव थाय ते पापतत्व मिथ्यात्वादिक हेतुए कर्मनुं आवबु ते आश्रवतत्व कर्मना हेतुज्ञूत मिथ्यात्वादिने रोकवा ते सवरतत्व देशथी कर्मनो क्षय थवो ते निर्जरातत्व. नवा कर्म परमा-

१ माण वे प्रकारे छे. १ द्रव्य माण = भाव माण. ससारीने द्रव्य भाव माण अने सिद्धुना जीवने भाव माणज होय.

एुल्लंगु आत्मप्रदेश साथे कीरनीरनी पेरे मळबुं त वं-
धतत्व, सर्वथा कर्मनो क्षय अवो ते मोहतत्व.

१ जीवतत्वना १४ न्नेद, २ अजीवतत्वना १४
न्नेद, ३ पुण्यतत्वना ४२ न्नेद, ४ पापतत्वना ७६ भेद,
५ आश्रवतत्वना ४२ न्नेद, ६ संवरतत्वना ५७ न्नेद,
७ निर्जरातत्वना १२ न्नेद, ८ वंधतत्वना ४ न्नेद, अने

नाम.	रूपी	अरूपी	हेयै ज्ञेयै उपादेयै
जीवतत्व	१४	०	ज्ञेय
अजीवतत्व	४	१०	"
पुण्यतत्व	४२	०	उपादेय
पापतत्व	८२	०	हेय
आश्रवतत्व	४२	०	"
संवरतत्व	०	५७	उपादेय
निर्जरातत्व	०	१२	"
वंधतत्व	४	०	हेय
मोक्षतत्व	०	९	उपादेय
	१८८	८८	

१ व्याग करवा योग्य, २ जाणवा योग्य, ३ आदरवा योग्य.

ए मोहकतत्वना ए ज्ञेद

उपर प्रमाणे नव तत्वना ४७६ ज्ञेद थाय ठे,
तेमां १७७ ज्ञेद रूपी ठे, अने ८४ ज्ञेद अरुपी ठे.

जीवनी ठ जातीठ.

एकविध—चैतन्य धर्मनी अपेक्षाए जीव एक
प्रकारे ठे

द्विविध—त्रस अने स्थावर ए ज्ञेदनी अपेक्षाए
जीव वे प्रकारे ठे

त्रिविध—स्त्रीवेद, पुरुष वेद अने नपुसक वेद
एम वेद आश्रयी जीव त्रण प्रकारे जाणवा

चतुर्विध—मनुष्यगति, तिर्यचगति, देवगति
अने नरकगति एम गति आश्रयी जीव चार प्रकारे ठे

पचविध—एकेऽङ्गिय, वेऽङ्गिय, तेऽङ्गिय, चउ-
र्णङ्गिय अने पचेऽङ्गिय एम इङ्गिय आश्रयी जीव पाच
प्रकारे जाणवा

पठ्विध—पृथ्वीकाय, श्राव्यकाय, तेजकाय, वाञ्छ-
काय, वनस्पतिकाय अने त्रसकाय एमकाय आश्रयो
जीव ठ प्रकारे जाणवा

जीवतत्त्व.

जीवना चौद ज्ञेद नीचे प्रमाणे दे.

१ सूदम एकेंद्रिय पर्यासा, २ सूदम एकेंद्रिय अपर्यासा, ३ बादर एकेंद्रिय पर्यासा, ४ बादर एकेंद्रिय अपर्यासा, ५ वेशंद्रिय पर्यासा, ६ वेशंद्रिय अपर्यासा, ७ तेशंद्रिय पर्यासा, ८ तेशंद्रिय अपर्यासा, ९ चउर्हांद्रिय पर्यासा, १० चउर्हांद्रिय अपर्यासा, ११ असन्नि पंचेंद्रिय पर्यासा, १२ असन्नि पंचेंद्रिय अपर्याप्ता, १३ सन्नि पंचेंद्रिय पर्याप्ता, १४ सन्नि पंचेंद्रिय अपर्याप्ता.

सूदम एकेंद्रिय—सूदम नाम कर्मना उदयथी चर्म दृष्टिने अगोचर एवा सूदम शरीरवाला.

बादर एकेंद्रिय—बादर नाम कर्मना उदयथी दृष्टिने गोचर एवा बादर शरीरवाला.

वेशंद्रिय—स्पर्शन अने रसना, एवेशंद्रियवाला.

तेशंद्रिय—स्पर्शन, रसना, अने ब्राण, एवेशंद्रियवाला.

चउर्हांद्रिय—स्पर्शन, रसना, ब्राण अने नेत्र, ए

चार इंडियवाला.

असन्नि पंचेंड्रिय—मन सज्जा विनाना स्पर्शन,
रसना, ग्राण, चक्षु अने कर्ण ए पाच इंडियवाला

सन्नि पंचेंड्रिय—मन सज्जा सहित पांच इंडि-
यवाला जीवो

पर्याप्ता—पोताने योग्य पर्याप्ती^१ पूर्ण करी होय
एवा जीवो

अपर्याप्ता—पोताने योग्य पर्याप्ती पूर्ण करी न
होय एवा जीवो

जीवनुं खद्धण

ज्ञान—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, ध्वनिज्ञान, मन
पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने
विज्ञानज्ञान, ए थारु ज्ञानमांथी गमे ते एक वे अ-
थवा अधिक ज्ञान जेने होय

दर्शन—चक्षु, अचक्षु, अवधि अने केवल ए चार
दर्शनमांथी एक अथवा अधिक होय

चारित्र—सामायिक, ठेदोपस्थापनीय, परिहार

^१ आटाराटिक पुद्दलोने ग्रहण करवा परिणमावशानी शक्ति विगेप

विशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, देशविरति तथा
अविरति ए सात प्रकारना चारित्र मार्गणाना ज्ञेद
मांहेला गमे ते होय.

तप-इच्छ्य अने ज्ञाव; इच्छ्य तप वे प्रकारे बे,
बाह्य ने अच्यंतर; तेमांथी गमे ते तप होय.

वीर्य-सकरण^१ अने अकरण^२ वीर्य होय.

उपयोग-पांच ज्ञानना, त्रै अज्ञानना अने चार
दृश्यनना; ए बार उपयोग मांहेथी गमे ते वे अगर
तेथी अधिक होव तेने जीव कहीए.

ए पूर्वोक्त ड प्रकारना लक्षण उड्ठे अगर वत्ते
अंशे होय तेने जीव कहीए.

पर्याप्ति.

पर्याप्ति-ड प्रकारे डे. १ आहार पर्याप्ति, २
शरीर पर्याप्ति, ३ इंद्रिय पर्याप्ति, ४ श्वासोष्वास प-
र्याप्ति, ५ ज्ञाषा पर्याप्ति, ६ मनः पर्याप्ति.

१ आहार पर्याप्ति-आहार ग्रहण करीने रस
अने खल रुपे पृथक् करवानी शक्ति विशेष.

१ इंद्रियोना सामर्थ्यरूप. २ आत्मानुं वीर्य.

(२१५)

२ शरीर पर्याप्ति-रसरूप परिणामने रस, रुचि, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा अने शुक्र ए सात धातु-रूप शरीरपणे परिणमाववानी शक्ति विशेष

३ इडिय पर्याप्ति-सात धातुने इडियपणे परिणमाववानी शक्ति विशेष, आ त्रण पर्याप्ति पुरी कर्या विना कोइ जीव मरे नहि

४ श्वासोद्धवास पर्याप्ति श्वासोश्वास वर्गणाना दबिक ग्रहण करी श्वासोश्वासपणे परिणमावी, अवलंबी मुकवानी शक्ति विशेष

५ ज्ञापा पर्याप्ति-ज्ञापा वर्गणाना दबिक ग्रहण करी, ज्ञापापणे परिणमावी, अवलंबी मुकवानी शक्ति विशेष.

६ मन पर्याप्ति-मनोवर्गणाना दबिक ग्रहण करी मनपणे परिणमावी मनन करवानी शक्ति विशेष
अजीव तत्व

अजीवतत्वना १० अरुपी अने ४ रूपी ए प्रकारे
१४ न्तेद ते

१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आका-

(४३६)

शास्तिकाय, ते प्रत्येकना स्कंध^१ देश^२ ने प्रदेश^३ एम
ब्रण ब्रण भेद तथा कालज्ञव्यनो २ ज्ञेद ए प्रकारे
दश ज्ञेद अरुपी अने पुज्जलास्तिकायना स्कंध, देश,
प्रदेशने परमाणु^४ ए चार ज्ञेद रूपी मली १४ थया.

धर्मस्तिकाय—गति परिणामने पामेलां जीव
पुज्जलने अपेक्षा कारण ते. सहज पणे चलन सहायक
गुणवाळो.

अधर्मस्तिकाय—स्थिति पणे परिणमेलां जीव
पुज्जलने अपेक्षा कारण ते. सहज पणे स्थिति सहा-
यक गुणवाळो.

आकाशस्तिकाय—अवगाह करनारा जीव पुज-
लने अवकाश आपनार ते.

पुज्जलास्तिकाय—पूरण गलन स्वज्ञाववाळो ते.

धर्मस्तिकाय अने अधर्मस्तिकाय ए बंने वर्ण,
गंध, रस, स्पर्श, शब्द अने रुपरहित; चौदराजखोक

१ आखो पदार्थ २ स्कंधनो एक विभाग—स्कंधनी साये संवंध
वाळो केटलोक भाग. ३ स्कंधने लागेलो अनिर्विभाज्य भाग. ४ स्कंध
रुपे नहि परिणमेलो निर्विभाज्य भाग.

व्यापी, अस्तर्य प्रदेशी, चूत, ज्विष्य अने वर्तमान ए त्रणकाळे शाश्वतपणे रहेनार ठे आकाशास्तिकाय वर्ण, गध, रस, स्पर्श, शब्द ने रूप रहित, लोक अ-लोक व्यापी, अनत प्रदेशी, त्रीकाळ स्थायी ठे. काळ समयादि रूप ठे. वर्ण, गध, रस, स्पर्श, शब्द अने रूप रहित, व्यवहारयी अढीचिपव्यापी, अप्रदेशी, त्रीकाळ एक समयरूप ऊऱ्य पणे रहेनार ठे. पुज्ञास्तिकाय वर्ण, गध, रस, स्पर्श, शब्द अने रूप सहित चौदराजलोकमा सर्त्य, असंख्य अने अनत प्रदेशी, पूरण गलन स्वज्ञावी ठे.

शब्द, अधकार, उथोत, प्रज्ञा, ब्राया, आतप, अने टाढ आदि पुज्ञास्तिकाय ऊऱ्य जाणबु वर्ण, गध, रस, अने स्पर्श ते पुन्ज्ञास्तिकायनु सामान्य लक्षण जाणबु

पुण्य तत्त्व.

पुण्य नव प्रकारे घधाय ठे, अने वेतासीश प्रकारे ज्ञोगवाय ठे. पुण्य वांधवाना नव प्रकार.

१ साधु प्रसुखने-अन्न आपवाथी, २ पाणी आपवाथी, ३ रहेवाने स्थानक आपवाथी, ४ सुवाने पाट प्रसुख आपवाथी, ५ पहेरवा उडवा माटे वस्त्र आपवाथी, ६ ते विषे मनमां शुज्ज संकटप कर्याथी, ७ वचने करीने स्तुत्यादिक कर्याथी, ८ कायाए करी सेवा कर्याथी, अने ९ नमस्कारादिक कर्याथी.

पुण्य ज्ञोगववाना वेतालीश प्रकार.

१ सातावेदनीय-जेना उदयथी सुखनो अनुन्नव थाय.

२ उच्च गोत्र-जेना उदयथी ऐश्वर्यादिके करीने संपन्न उच्च कुलमां जन्म धारण करे.

३ मनुष्यगति-जेना उदयथी मनुष्यगति पासे.

४ मनुष्यानुपुर्वी-जेना उदयथी अन्य गतिमां वांका जतां जीवने मनुष्यगतिमां लावे.

५ देवगति-जेना उदयथी देवगति पासे.

६ देवानुपुर्वी-गत्यंतरमां वांका जतां जीवने देवगतिमां आणे ते.

१ गत्यंतरमां वांका जतां जीवने पोताना उत्पत्ति स्थाने आणे ते.

(२१८)

७ पंचेन्द्रिय जाति नामकर्म- जेना उदयथी प-
चेन्डपणु पाप्त थाय.

८ औदारिक शरीर नाम कर्म-जेना उदयथी
औदारिक शरीर योग्य पुज्जलो ग्रहण करी तेने शरीर
पणे परिणमावीने जीव पोताना आत्मप्रदेश साथे
मेलने ते

९ वैक्रियशरीर'नाम कर्म- जेना उदयथी विविध
क्रिया करवाने समर्थ एवा शरीरनी प्राप्ति थाय

१० आहारक शरीर नाम कर्म-जेना उदयथी
चौट पूर्वधर तीर्थिकरनी ऋषि जोवा माटे अथवा तो
सुहम अर्थनो सदेह टाळवा माटे एक हाथना प्र-
माणनु विशिष्ट रूपवालु शरीर करे ते

११ तैजसशरीरनाम कर्म-जेना उदयथी आहार
पचानवाना अने तेजोलेश्याना हेतु जूत शरीरनी
प्राप्ति थाय ते.

१ वैक्रिय शरीरना वे भेद छे भवपत्ययिरुने लद्धि प्रत्ययिः
भवपत्ययिक नारङ्गी तथा देवनाने होय छे, अने लद्धि प्रत्ययिः
मनुप्य तथा तिर्यचने होय छे.

१२ कार्मण शरीरनाम कर्म-जेनाउदयथी कर्म परमाणुना उपादान कारण एवा कार्मण शरीरनी प्राप्ति थाय ते.

१३ औदारिक अंगोपांग नाम कर्म-जेना उदयथी औदारिक शरीरना अंग^१ तथा उपांगनी प्राप्ति थाय.

१४ वैक्रिय अंगोपांग नाम कर्म-जेना उदयथी वैक्रिय शरीरना अंग उपांगनी प्राप्ति थाय.

१५ आहारक अंगोपांग नामकर्म-जेना उदयथी आहारक शरीरना अंग उपांगनी प्राप्ति थाय.

१६ वज्रश्छष्णनाराच संघयण नामकर्म. (वज्र खीली, श्छष्ण पाटो, नाराच मर्कटबंध बे पासे, संघयण हात्कानो निचय) जेना उदयथी बे पासे मर्कट बंध उपर पाटो दझने खीली मारवायी जेवो मजबुत

१ बे हाथ, बे साथळ, पीठ, मस्तक, छाती, अने पेट ए आठ अंग छे. २ अंगुली प्रमुख ते उपांग ने रेखादि अंगोपांग पहेला॑ त्रण शरीरने अंगोपांग छे, शेष तैजस अने कार्मण ए बे॑ शरीरने अंगोपांग नथी.

बध थाय तेवा मजबुत सघयणनी प्राप्ति थाय ते

१७ समचतुरस्त संस्थान नामकर्म—जेना उदयथी
पर्यकासने वेसता जेनो चारे वाजु सरखी होय एवा
सस्थाननी^१ प्राप्ति थाय ते

१८ शुज्जवर्ण नामकर्म—जेना उदयथो श्रेत, पीत,
रक्तरूप शुज्ज वर्णनी प्राप्ति थाय ते

१९ शुज्जगंध नामकर्म—जेना उदयथी सुरज्जी-
गधनी प्राप्ति थाय

२० शुज्जरस नामकर्म—जेना उदयथी आम्ज,
कपायेकाने मीठा रस रूप शुज्ज रसनी प्राप्ति थायते

२१ शुज्जस्पर्श नामकर्म—जेना उदयथी हळवो,
चीकणो, सुवालो, अने उष्ण स्पर्शरूप शुज्ज स्पर्शनी
प्राप्ति थाय ते

२२ अगुरुवधु नामकर्म—जेना उदयथी खोहना
गोलापेरे अत्यत ज्ञारे नहि, तेमज आकजाना रुनी
पेरे अत्यत हलकुं नहि एवा शरीरनी प्राप्ति थाय ते

३३ पराधात नामकर्म-जेना उदयथी गमे तेवो
चलवान पण अंजाइ जाय ते.

३४ श्वासोश्वास नामकर्म-जेना उदयथी श्वा-
सोश्वास वर्गणाना दलिक लइ शकाय ते.

३५ आतप^१ नामकर्म-जेना उदयथी पोते शी-
तळ ठतां अन्यने ताप करनार आय ते.

३६ उद्योत नामकर्म-जेना उदयथी चंडादिनी
पंडे प्रकाश युक्त शरीरनी प्राप्ति आय ते.

३७ शुज्जखगति नामकर्म-जेना उदयथी वृषज्ञ
तथा हंसनी पेरे सारी चालवानी गति प्राप्त आयते.

३८ निर्माण नामकर्म-जेना उदयथी अंगोपांग
योग्य स्थळे गोठवाय ते.

३९ त्रस नामकर्म-जेना उदयथी उपयोग पू-
र्वक गमनागमन करवानी शक्ति प्राप्त आय ते.

४० बादर नामकर्म-जेना उदयथी चर्म चक्षुए
देखाय एवा शरीरनी प्राप्ति आय ते.

१ सूर्यना विवरां रहेला बादर पर्याप्ता एकेन्द्रियनेज आतप नाम
कर्मनो उदय छे,

(२३)

३१ पर्याप्ति नामकर्म—जेना उदयथी पोताने
रोग्य पर्याप्ति पूर्ण करे ते.

३२ प्रत्येक नामकर्म—जेना उदयथी एक जीव
एक शरीरने पासे ते

३३ स्थिर नामकर्म—जेना उदयथी हाक दात
आदि स्थिर अवयवो होय ते

३४ शुज्ज नामकर्म—जेना उदयथी नाज्जिना उ-
परनु अग बीजाने खेटकारी न थाय ते

३५ सुज्जग नामकर्म—जेना उदयथी सर्व माण-
सोने प्रिय खागे ते

३६ सुस्वर नामकर्म—जेना उदयथी कोयलना
जेवा मधुर स्वरनी प्राप्ति थाय ते.

३७ आदेय नामकर्म—जेना उदयथी सोकमां
पचन माननीय थाय ते

३८ चशो नामकर्म—जेना उदयथी सोकमा यग
कीर्ति फेजाय ते.

३९ सुरातु—जेना उदयथी देवनानु आउप्प
पासे ते.

४० मनुष्यायु—जेना उदयथी मनुष्यनुं आयु-
ष्य प्राप्त थाय ते.

४१ तिर्यचायु—जेना उदयथी तिर्यचनुं आयु-
ष्य प्राप्त थाय ते.

४२ तीर्थकर नामकर्म—जेना उदयथी त्रित्युव-
नना जीवोने पूजवा योग्य थाय ते.

पाप तत्त्व.

पाप अढार प्रकारे बंधाय ढे. अने व्याशी प्र-
कारे ज्ञोगवाय ढे.

पाप वांधवाना अढार प्रकार.

१ प्राणतिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४
मैशुन, ५ परिग्रह, ६ क्रोध, ७ मान, ८ माया, ९ लोभ,
१० राग, ११ छेष, १२ कलह, १३ अन्याख्यान, १४
घैशुन्य, १५ रतिअरति, १६ परपरिवाद, १७ मायामृ-
षावाद अने १८ मिथ्यात्वशब्द.

पाप ज्ञोगवाना व्याशी प्रकार.

१ मतिझानावरणीय—जेना उदयथी पांच इंडिय

तथा मनवके जे नियत वस्तुनु ज्ञाने थाय एवा म-
तिज्ञाननु आष्ट्रादन थाय ते

७ श्रुतज्ञानावरणीय—जेना उदयथी शास्त्रानुसारे
जे ज्ञान थाय एवा श्रुतज्ञाननु आष्ट्रादन थाय ते

४ अवधिज्ञानावरणीय—जेना उदयथी इडि-
यादिकनी अपेक्षा विना आत्मावके जे रूपी ऊर्ज्यनु
ज्ञान थाय एवा अवधिज्ञाननु आष्ट्रादन थाय ते.

५ मन पर्यवह्नानावरणीय—जेना उदयथी सन्नी
पचेन्द्रियना मनोगत ज्ञाव जाणी शकाय एवा मन
पर्यग्नाननु आष्ट्रादन थाय ते

६ केवलज्ञानावरणीय—जेना उदयथी सोकालो-
कमा रहेला रूपी अरूपी पदार्थोंनु ज्ञान थाय एवा
केवलज्ञाननु आष्ट्रादन थाय ते

७ दानानंतराय—जेना उदयथी पोताना घरमा
देवा योग्य वस्तु रतां, योग्य पात्रनो समागम रता
तथा दाननु फल जाएँवा रता पण दान आपी श-
काय नहि ते,

८ साज्जानंतराय—जेना उदयथी सामो दानार-

ठतां दातारना घरमां वस्तु ठतां, अने मागनार पोते
पात्र ठतां पोताने इडित वस्तु मली शके नहि ते.

७ ज्ञोगांतराय—जेना उदयथी पोते युवान
ठतां, सुरुप ठतां अने ज्ञोग्य वस्तुनीप्राप्तिठतां पण
ज्ञोगवी न शके ते.

८ उपज्ञोगांतराय—जेना उदयथी पोते युवान,
सुरुप ठतां अने आचूषणादि उपज्ञोग्य वस्तु प्राप्त
अथा ठतां पण ज्ञोगवी न शके ते.

९ वीर्यांतराय—जेना उदयथी पोते युवान,
निरोगी, अने बलवान ठतां पण पोतानुं बल फोरवी
न शके ते.

१० चक्षुदर्शनावरणीय—जेना उदयथी आंखे
करी रूपेनुं सामान्यपणे ज्ञान आय एवा चक्षुदर्शननुं
आहादन आय ते.

११ अचक्षुदर्शनावरणीय—जेना उदयथी चक्षु

१ एकवार भोगवाय एवा आहारादिकने भोग कहेवाय छे.

२ चारवार भोगवाय एवा स्त्री आभूषण आदिने उपभोग कहेवाय छे.

(३७)

विना वाकीनो इङ्गिये करी जे पोतपोताना विषयनु
सामान्यपणे झान थाय एवा अचक्षुदर्शननु आठा;
दन थाय ते

१३ अवधिर्दर्शनावरणीय—जेना उदयथी इ-
ङ्गियादिकनी अपेक्षा विना मर्यादा पूर्वक रूपी इच्छ
नु सामान्यपणे झान थाय एवा अवधिर्दर्शननु आ-
ठादन थाय ते

१४ केवलर्दर्शनावरणीय—जेना उदयथी सकल
वस्तुनु सामान्यपणे झान थाय एवा केवलर्दर्शननु
आठादन थाय ते

१५ निःङ्गा—जेना उदयथी निःङ्गावस्थामाथी
मुखे करीने प्रतिमोध थाय ते

१६ निःङ्गानिःङ्गा—जेना उदयथी निःङ्गावस्थामाथी
हु खे करीने जागृत अवस्थानी प्राप्ति थाय ते

१७ प्रचंडा—जेना उदयथी उज्जा अने वेरं
यका निःङ्गा आने ते

१८ प्रचंडा प्रचंडा—जेना उदयथी चाप्ततां च-
सता पण निःङ्गा आने ते.

१९ थिणद्वि—जेना उदयथी दिवसे चिंतवैद्यु
कार्य रात्रीए निदावस्थामां करे ते.

२० निचगोत्र—जेना उदयथी ऐश्वर्यादिकरहित
निच कुलमां जन्म आय ते.

२१ अशाता वेदनीय—जेना उदयथी डुःखनो
अनुज्ञव आय ते.

२२ मिथ्यात्व मोहनीय—जेना उदयथी वीतरा-
गना वचनथी विपरित श्रद्धा आय ते.

२३ स्थावर नामकर्म—जेना उदयथी स्थावर-
पणं प्राप्त आय ते.

२४ सूहम नामकर्म—जेना उदयथी चर्मचक्षु
ने अदृश्य एवा सुहम शरीरनी प्राप्ती आय ते.

२५ अपर्याप्त नामकर्म—जेना उदयथी पोताने
योग्य पर्याप्ति पूर्ण न करे ते.

१ वज्रकषभनाराच संघयष्ट्रवालाने थिणद्वी निदाना समये
वासुदेवथी अर्ध बळ होय छे, आ जीव नरकामी जाणबो. बीजा
यंक्षणेवालाने पेत्राभा सहज बळथी चमणु चमणु बळ होय छे.

३६ साधारण नामकर्म—जेना उदयथी अनंता
जीव वच्चे एक शरीरनी प्राप्ति थाय ते,

३७ अस्थिर नामकर्म—जेना उदयथी खोही
आदि अस्थिर पुज्जलनो वध होय ते.

३८ अशुज्ज नामकर्म—जेना उदयथी नाज्जिनी
निचेनु अग अशुज्ज होय ते

३९ दौर्जाग्य नामकर्म—जेना उदयथी सर्व
लोकने अप्रिय लागे ते

४० छुस्वर नामकर्म—जेना उदयथी कागमा
अने गधेमा पेरे खराव स्वरनी प्राप्ति थाय ते

४१ अनादेय नामकर्म—जेना उदयथी खोकर्मा
वचन मान्य न थाय ते

४२ अयशा नामकर्म—जेना उदयथी खोकमा
अपकीर्ति फेलाय ते

४३ नरकगति नामकर्म—जेना उदयथी नरक
माँ उत्पन्न थाय ते.

४४ नरकानुपूढ़ी नामकर्म—जेना उदयथी
अन्य गतिमाँ जता जीवने नरकान्निमुख करे ते.

३५ नरकायु—जेना उदयथी आयुष्यनीस्थि-
तिने अनुसारे नरकमां रहेहुं पडे ते.

३६ थी ३८—अनंतानुवंधी^१—क्रोध, मान,
माया ने लोन्न-जेना उदयथी सम्यकत्व प्राप्तनथाय,
उत्कृष्टपणे यावज्जीव^२ सुधी रहे ने नरकगति पामे.
तेमां क्रोध पर्वतनी रेखा समान ढे, मान पापाणना
स्तंन समान ढे, माया वंशना मूल समान ढे ने लोन्न
कीरमजना रंग समान ढे.

४० थी ४३ अप्रत्याख्यानीय^३—क्रोध, मान,
माया ने लोन्न-जेना उदयथी देशविरतिपणुं न पामे,
तिर्यंचनी गतिमां जाय, अने एक वर्ष सुधी रहे. तेमां
क्रोध सुकायेला तळावनी रेखा समान, मान हारु-
काना स्तंन समान, माया मेंढाना शींगका समान,
लोन्न गालूनी मल्ली समान ढे.

४४ थी ४७ प्रत्याख्यानीय—क्रोध, मान, माया

१ अनंतानुवंधी—अनंत संसारना हेतुभूत. २ यावज्जीव ए
प्रायिक वचन छे. ३ जेना उदयथी थोहुं पण प्रत्याख्यान न पामे.
४ जेना उदयथी सर्व विरतिरूप प्रत्याख्यान न पामे.

ने लोन्न-जेना उदयथी सर्वविरतिपणु न पामे, मनु-
प्येगतिमा जाय अने चार मास सुधी रहे तेमां क्रोध
रेतीनी रेखा सरखो, मान काष्ठना स्तन्न सरखो, माया
गोमुत्र सरखी, लोन्न काजलना रग सरखो जाणवो.

धृष्टि ५१ 'सज्जवलन क्रोध, मान, माया ने
लोभ, जेना उदयथी यथारथात चारित्र न पामे, तेनी
स्थिति एक पढ़ानी' थे, तेमा क्रोध जलरेखा समान
थे, मान नेत्रखता समान थे, माया वंशनी थोल स-
मान थे, ने लोन्न हृत्तदरना रग समान थे. तेवा क्रो-
धादिके मरीने प्राणी देवलोकमा जाय थे.

एवी रीते सोळ ^३कपाय थया हृवे नव ^४नोक-
पायनु वर्णन करे थे.

१ जेना उदयथी चारित्र धारण करनार पण थोडो कपाय
करे २ उपरोक्त कपायबत बहु तो पासिक चतुर्मासिक के सवत्स-
रिक प्रतिक्रमण समये पण कपाय न शमावे (वैर—विरोध अ-
धिकरण न टाळे पण धारी गावे) तो ते कपाय अननानुरप्ती
समजवो (संशोधक)

३ कष=मसार + आय=नाभ=मसारनी परपरा जेनाथी यज्ञे ते

४ कपायना सद्वारी कपायनी उत्पत्तिमा भट्टद करनार.

५८ श्ली ५९ हास्यपट्क—जेना उदयथी कोइ पण
निमित्ते अथवा तो निमित्त विना हास्य, रति, अरति,
शोक, ज्ञय अने जुगुप्सा थाय ते.

५८ पुरुषवेद—जेना उदयथी स्त्री न्नोगववानी
इहा थाय ते. आ वेदनो उदय तृणना अग्नि जेवो
जाणवो.

५९ स्त्रीवेद—जेना उदयथी पुरुष न्नोगववानी
इहा थाय ते. आ वेदनो उदय ठाणाना अग्नि स-
खो जाणवो.

६० नपुंसकवेद—जेना उदयथी स्त्री पुरुष वेन्नै
न्नोगववानी इहा थाय ते. आ वेदनो उदय नगरना
दाह समान जाणवो.

६१ तिर्यचगति नामकर्म—जेना उदयथी ति-
र्यचमां उत्पन्न थाय ते.

६२ तिर्यचानुपूर्वी नामकर्म—जेना उदयथी
अन्य गतिमां वांका जतां जीवने तिर्यच गतिमां खइ
जाय ते.

(२३३)

६३ एकेन्द्रियजाति नामकर्म-जेना उदयथी
एकेन्द्रियपणु प्राप्त थाय ते

६४ वेऽङ्गियजाति नामकर्म-जेना उदयथी वे
ङ्गियपणुं प्राप्त थाय ते

६५ तेऽङ्गियजाति नामकर्म-जेना उदयथी तेऽङ्गि-
यपणु प्राप्त थाय ते

६६ चउर्हियजाति नामकर्म-जेना उदयथी
चउर्हियपणु प्राप्त थाय ते

६७ अशुन्न विहायोगति नामकर्म-जेना उदय
थी ऊट तथा गधेमानी पेरे गमन करवानी अशुन्न
चाल (गति) प्राप्त थाय ते

६८ उपघात नामकर्म-जेना उदयथी पोताना
अवयवोवके पोते हणाय एवा जे रसोळी, पक्कीजी
आडि प्राप्त थाय ते

६९ अप्रशस्तवर्ण नामकर्म-जेना उदयथी नीङ्ग
तथा कृष्णरूप अशुन्नवर्णनी प्राप्ति थाय ते

७० अप्रशस्तगंध नामकर्म-जेना उदयथी छूर

(४३४)

निर्गंधरूप अशुन्न गंधनी प्राप्ति आय ते.

४१ अप्रशस्तरस नामकर्म-जेना उदयथी तिक्त तथा कटुकरूप अशुन्न रसनी प्राप्ति आय ते.

४२ अप्रशरतस्पर्शनामकर्म-जेना उदयथी नारे, लुखो, खडबचमो अने शीतस्पर्शरूप अशुन्न स्पर्शनी प्राप्ति आय ते.

४३ ऋषजनाराच संघयण नामकर्म-जेना उदयथी जेनां वे पासे मर्कटबंध होय अने तेनी उपर पाटो होय तेवो हारुकानो बंध प्राप्ति आय ते.

४४ नाराच संघयण नामकर्म-जेना उदयथी बन्ने पासे मर्कटबंध होय एवो हारुकानो बंध प्राप्ति आय ते.

४५ अर्धनाराच संघयण नामकर्म-जेना उदयथी एक पासे मर्कटबंध होय अनेबीजे पासे खीली होय एवो हाडकानो बंध प्राप्ति आय ते.

४६ किलिका संघयण नामकर्म-जेना उदयथी मांहोमांहे मलेला हारुकाने फक्त खीलीनो बंध होय ते.

७७ रेवहु नामकर्म—जेना उदयथी हाकरां पर-
स्पर, मलेखा होय ते.

७८ न्यग्रोघ परिमक्ष संस्थान नामकर्म—जेना
उदयथी वर्णनी पेरे उपरबु अग लक्षणोपेत होय ते

७९ सादि सस्थान नामकर्म—जेना उदयथी
नीचेनुं अग लक्षणगाळुं प्राप्त थाय अने उपरबु अंग
खराव होय ते.

८० वामन सस्थान नामकर्म—जेना उदयथी
उदर प्रमुख लक्षणोपेत होय अने हाथ पग माथुं प्र-
मुख प्रमाणहीन होय ते

८१ कुञ्ज सस्थान नामकर्म—जेना उदयथी हाथ
पग माथुं प्रमुख प्रमाणोपेत होय अने उठर प्रमुख
प्रमाण विनानु होय ते

८२ हुम्क सस्थान—जेना उदयथी सर्व अव-
यवो प्रमाण विनाना लक्षण रहित होय ते.

आश्रव तत्त्व.

कर्म आववाना हेतुज्ञूत जे मिथ्यात्वादिक तेने
आश्रवतत्त्व कहे दे; तेना धृ ज्ञेद दे.

५ स्पर्शनेंडिय, रसनेंडिय, ध्राणेंडिय, चक्षुर्ँ-
डिय, श्रोत्रेंडिय, ए पांच इंडियनी अविरति.

६ थीए क्रोध^१ मान^२ माया^३ खोन्न^४ ए चार क्याप.

१० थी १४ प्राणातिपात,^५ मृषावाद,^६ अदत्तादान,^७
मैथुन,^८ परिग्रह,^९ ए पांच अव्रत.

१५ थी १७ मनोयोग,^{१०} वचनयोग,^{११} काययोग,^{१२}
ए त्रण योग.

पचीश क्रियाऊँ.

२७ कायिकीक्रिया—कायाने अयतनाए प्रवर्ता-
वतां जे क्रिया लागे ते.

१ गुस्सो. २ अहंकार. ३ कपट. ४ वधारे मेळववानी इच्छा.
५ प्राणनो नाश. ६ जुहु. ७ चोरी. ८ कामभोग. ९ वस्त्रनो संग्रह.
ममल्ल भाव. १० शुभ अशुभमां मनने जोडवुं. ११ शुभ अशुभमां
वचनने जोडवुं. १२ शुभ अशुभमां कायाने जोडवी.

(१३७)

१८ अधिकरणकीक्रिया-घरनां उपकरणादि
अधिकरण घटी आदिए करो जीतोनु हनन करवु ते

१९ प्रादेशिकी क्रिया -जीव अजीव ऊपर ढेष
करवाथी जे क्रिया लागे ते

२० पारितापनीकीक्रिया पोताने अथवा पत्ने
परिताप ऊपजाववो ते

२१ प्राणातिपातिकीक्रिया एकेद्वियादिक जी-
वने हणवो हणाववो ते

२२ आरंजिकीक्रिया-खेती आदिक आरज्ज क-
रवो कराववो ते

२३ परिनहिकीक्रिया -धन धान्यादिक मेलवतां
अने ते ऊपर मूर्ठी राखता जे क्रिया लागे ते

२४ मायाप्रत्ययिकीक्रिया -कपट वके अन्यने
ठेतरवाथी जे क्रिया लागे ते

२५ मिद्धादर्शनप्रत्ययिकोक्रिया- जिन वचननी
अश्रवा करवाथी तथा विपरित प्रमुपणा करवाथी जे
क्रिया लागे ते.

२६ अप्रत्याख्यानिकीक्रिया-पञ्चमाण नहि क-

रवाथी जे क्रिया लागे ते.

२७ ऊष्टिकीक्रिया--कौतुके करीने अथवा प्रसुख जोवाथी जे क्रिया लागे ते.

२८ स्पृष्टिकी अथवा पृष्ठिकीक्रिया--रागादिक-
नावशे स्त्री पुरुष, सुकुमाळ वस्तु वगेरेने स्पर्श कर-
वाथी जे क्रिया लागे ते, स्पृष्टिकीक्रिया अथवा पूर-
वाथी जे क्रिया लागे ते पृष्ठिकीक्रिया.

३० प्रातित्यकीक्रिया--बीजाने घेर हस्ती घोका
वगेरे देखी इर्षा करवाथी जे क्रिया लागे ते.

३१ सामंतोपनीपातिकीक्रिया--पोताना घोमा
प्रसुख जोवा आवेदा लोकोनी प्रशंसा सांजळी हर्ष
धारण करवाथी जे क्रिया लागे ते, अथवा धी तेल
वगेरेना ज्ञाजन उघासां मुकवाथी जे क्रिया लागे ते.

३२ नैसृष्टिकी क्रिया—राजा आदिना आदेशे
यंत्र, शस्त्रादि घराववाथी जे क्रिया लागे ते.

३३ स्वहस्तिकी क्रिया—नोकरने करवा योग्य
कार्य पोताना हाथे करवाथी जे क्रिया लागे ते.

३४ आनयनिकी क्रिया—जीव पासे मंगाववाथी

क्रिया लागे ते अथवा जीव अजीवने आङ्गा करवाथी
जे क्रिया लागे ते आज्ञापनिकी क्रिया।

३५ विदारणिकी क्रिया जीव अजीवने विदारण
करवाथी जे क्रिया लागे ते अर्थवा तो कोङ्गा अ-
रता छुपण प्रकाश करी तेनी मान पूजानोनाश क-
रवाथी जे क्रिया लागे ते अने अन्यने उगवाथी जे
क्रिया लागे ते वैतारणिकी।

३६ अनाज्ञोगिकी क्रिया-उपयोगना शून्यपणाथी
जे क्रिया लागे ते.

३७ अनवकाक प्रत्ययिकी क्रिया-वीतरागे क-
हेली विधिमा अनादर करवाथी जे क्रिया लागे ते

३८ प्रायोगिकी भन, वचन अने कायाना अशुज्ज
व्यापारथी जे क्रिया लागे ते

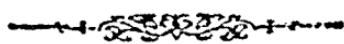
३९ समुदायिकी क्रिया-कोइ पण एवी पापरूप
क्रिया करे, के जेथी ओरे कर्मनुं समुदायपणे ग्रहण
थाय ते अथवा फासीना खाकरे चढावाता माणसने
जोवा जनारा तमामने जे क्रिया लागे ते

४० प्रेमप्रत्ययिकी क्रिया भाया तथा खोजवरे

परने प्रेम उपजाववाथी जे क्रिया खागे ते.

४१ द्वेषप्रत्ययिकी-जे क्रिया करवाथी अन्यने द्वेष उत्पन्न थाय ते.

४२ इर्यापथिकी क्रिया--केवलीने सात्र काययोगवरे एक समयनो बंध थाय ते.



संवर तत्त्व.

कर्मना हेतुज्ञूत मिध्यात्वादिने रोकवां तेने संवर तत्त्व कहे ठे तेवे प्रकारे ठे--ज्ञावसंवर अने ऊव्य संवर. तेमां ज्ञावसंवर--ते कर्मने रोकवा समर्थ जे आत्माना शुन्न परिणाम तेअनेतेनिमित्त कर्म दलनुं रोकावुं तेने ऊव्यसंवर कहे ठे. तेना सक्तावन प्रकार ठे.

१ इर्यासमिति--धूंसर प्रसाण चूमिका जोइने चालवुं ते.

२ ज्ञाषासमिति--हित मित असंदिग्ध अने दोष रहित नियम पूर्वक बोखवुं ते.

३ एषणासमिति—अन्न, पान्न, वस्त्र, पात्र, आदि

वेतालीश दोष टालीने ग्रहण करवा ते

४ आदान निक्षेपणसमिति—रजोहरण वस्त्र पात्र
वगेरे जोइ प्रमार्जने खेबुं तथा मुकबु ते

५ उत्सर्ग समिति^१—त्रस अनेखावर जीवोयी
रहित स्थंभिल जूमि जोडने तथा पूजने मळमृत्र
आदिकनो त्याग करवो ते.

६ मनोगुस्ति^२—अगुज्ज सकद्वपनो त्याग करवो
ने शुन्न सकद्वप करवा अथवा शुन्न के अगुज्ज वज्ञे
प्रकारन। सकद्वपनो त्याग करवो ते

७ वचन गुस्ति—याचना करवी, पूठबु अथवा
तो पूरेलानो उत्तर आपवो तेमा वाणीनो नियम क-
रवो-खप पुरतु निर्वद्य वचन वोलबु ते अथवा तो
सर्वथा मौन वारण करबु ते

८ काय गुस्ति—सूबु वेसबु जबु आवबु आडिकने
विषे कायाना व्यापारनो नियम करवो अथवा स-
र्वथा काययोगनो रोध करवो ते

१ तेने पारिष्टापनिजा समिति पण रहे ते

२ सम्यक द्वकारे योगनो निग्रह करवो तेने गुस्ति रहे ते.

सम्यग् दर्शनादि मार्गथकी ब्रह्म नहि थवा
 माटे तथा कर्मनी निर्जरा माटे जे समज्ञावे सहन
 करवा योग्य हे तेने परिसह कहे हे. ते वावीश वे.
 ए द्युधा परिसह—गमे तेवी ज्ञूख लागे तोपण
 दोषवाळा आहारनी इहा न करता ज्ञूखयी उत्पन्न
 थती वेदनाने समज्ञावे सहन करवी ते.

१० पीपासापरिसह—गमे तेवी तृपा लागे तो
 दण दोषवाळा अप्रासुक जलनी इहा न करता तृपा
 ने सहन करवी ते.

११ शीतपरिसह—टाढ्यी थती वेदनाने सम्यक्
 प्रकारे सहन करवी ते.

१२ उष्णपरिसह—तापथी थती वेदनाने सहन
 करवी ते.

१३ दंशपरिसह—जू मांकम आदिना रुखने
 समज्ञावे सहन करवो ते.

१४ अचेतपरिसह—नवां अने सारां वस्त्रने अ-
 ज्ञावे खेद न करता जुनां अने सेलां वस्त्रयी उद्देश
 न करवो ते.

१५ अरतिपरिसह—रोगादिकना सद्भावे मनमां अरति धारण न करतां ए पूर्वकृत कर्मनुं फल रे एम जाणी सम परिणाममा रहेबु ते

१६ स्त्रीपरिसह—स्त्रीना हावज्ञाव जोइने तेना उपर मोह न करता ते डुर्गतिनी देतु रे एम चितवी मनने स्थिर करबु ते

१७ चर्यापरिसह—गामोगाम अप्रतिवद विहार करवो ते

१८ निपद्यापरिसह—उमशान प्रमुखमा काउसग ध्याने रहेता व्याघ्रादिकना ज्यथी ढरबुं नहि ते

१९ शय्या परिसह—उची नीची जुमि उपर सथारो करवाथी उत्पन्न थता डु खने सम्यक् प्रकारे सहन करबु ते.

२० आकोश परिसह—कोइ आकोशना वचन कहेतो तेना उपर छेप न करता समपरिणाममा रहेबु ते.

२१ वध परिसह—कोइ वध करे तो वध करनार उपर छे दरता समपरिणाममा

(२४४)

२२ याचना परिसह—चक्रवर्त्यादि ने पण सं-
यम लङ्घने ज्ञिहा लेवा जतां लज्जा न आवे ते,

२३ अलाज्ज परिसह—गृहस्थ्यने त्यां कांश पण
चीज लेवा जतां मले नहि तो तेथी उद्देगन करे ते,

२४ रोग परिसह—रोग थकी उत्पन्न अयेळी
वेदनाने सम्यक् प्रकारे सहन करे ते,

२५ तृण स्पर्श परिसह—माज्जनी शर्याइ
सूतां तेना अग्र ज्ञाग लागवाथी उद्देग धारण न
करे ते.

२६ मल परिसह—शरीर उपर परशेवाथी मेष्ट
चूर्छवाथी गंधाय तेथी उद्देग धारण न करे ते.

२७ सत्कार परिसह—मान सत्कार थवाथी
मनमां अज्ञिमान न आणे ते.

२८ प्रज्ञा परिसह—विशेष श्रुतनो जाण होय
तेथी पुरेला प्रश्ननो जवाब देवानी शक्ति होवाथी
खोको वहु मान करे ते देखी गर्व धारण न करे ते
अने तेना अज्ञावे खेद न करे ते.

३४ अङ्गान परिसह—पेते अङ्गान होवाथी
मनमा दिनता धारण न करे पण एम विचारेजे मारे
ज्ञानावरणीय कर्मनो उदय ठे ते तप अनुष्ठानथी
झूर थशे अने ज्ञानी होय तो गर्व न करे ते।

३० सम्यक्त्व परिसह- शास्त्रनी सूदम वातनी
समज न पर्वाथी ए साचु हशे ? के जुलु हशे ?
एवी शका आणे नहि पण वीतरागे कहेल ते साचु
ज ठे ए प्रकारे अङ्गा राखे ते

३१ कमा धर्म-कोधनो अज्ञाव -कमा

३२ मार्दव धर्म-माननो अज्ञाव नमृता

३३ आर्यव धर्म-कपट रहितपणु- सरलता

३४ मुक्ति धर्म-निर्बोज्जता

३५ तप धर्म-इठानो रोध करवो

३६ संयम धर्म- मन, वचन अने कायाने योग्य
रीते वापरवा ते ३७ प्रकारे ठे प्राणातिपातादि पांचनुं
विरमण, पाच इडियोनो निग्रह, चार कपायनो जये,
ने त्रण ढमनी निवृत्ति, ए सत्तर प्रकारे संयम धर्म

जाणवो. अथवा पांच स्थावर, त्रण विगलेंड्रिय अने पंचेडियनो वध करवो नहि ए नवन्नेद १० प्रेद्यसंयम ११ उपेद्यसंयम १२ प्रमार्जनासंयम १३ अपहृत्य (अप्रमार्जना-पररुं)संयम १४ मनसंयम १५ वचनसंयम १६ कायसंयम १७ अजीवसंयम एम सत्तर न्नेद जाणवा.

३७ सत्य धर्म-साचुं बोलबुं.

३८ शौच धर्म-पादादि अवयव शुद्ध राखवा तथा वेंतालीश दोष रहित आहार पाणी लेवो-ते ऊद्य शौच अने आत्माना शुद्ध परिणाम राखवा ते नाव शौच.

३९ अकिञ्चनत्व धर्म-समग्र परिग्रह उपरथी मूर्ढनो त्याग करवो.

४० ब्रह्मचर्य धर्म-नव प्रकारे औदारिक ने नव प्रकारे वैक्रिय संबंधी मैथुननो त्याग करवो ते.

४१ अनित्य नावना-आ संसारमां शरीर, धन, धान्य, कुदुंब, आदि सर्व वस्तुरे अनित्य ऐ एबुं चिन्तववुं ते.

(४४)

४३ अशरण ज्ञावना—माणसोए करीने रहित
एवा अरएयमां कुधा पामेल बलवान् सिहना हा-
थमा पककायेल मृगखाने कोइनु शरण होतु नथी
तेवीज रीते जन्म, मरण आदि व्याधिए घस्त जी-
वने आ ससारमां धर्म शिवाय कोइनु शरण नथी
एवु चिन्तवतु ते

४४ ससार ज्ञावना—आ अनाडि अनंत ससा-
रमां स्वजन अने परजननी कोइ पण प्रकारनी व्य-
ववस्था नथी, माता मरीने स्त्री थाय, स्त्री मरीने माता
थाय, पिता मरीने पूत्र थाय, पूत्र मरीने पिता थाय,
एम संसारनी विचित्रता ज्ञावती ते

४५ एकत्व ज्ञावना—जीव एकलोज उत्पन्न धाय
रे ने एकलो ज मृत्यु पासे टे, एकलो ज कर्म वांधे
रे अने एकलोज कर्म जोगवे रे इत्यादि चिन्तवतु ते.

४६ अन्यत्व ज्ञावना—हु शरीर यकी ज्ञान तु,
शरीर अनित्य रे, हु नित्य तु, शरीर जरु रे, हु चे-
तन तु. ए प्रकारे चिन्तवतु ते

४६ अशुचि ज्ञावना—निश्चये करीने आं शरीर
अपवित्र रे, कारण के, आं शरीरनुं आदि कारण
शुक्र रे, ते पण घण्ठंज अशुचि रे; पर्वीनुं कारण आ-
हासादिकनो परिणाम ते पण अत्यंत अपवित्र रे;
लगरनी खाल पेरे पुरुषना नव धारमांथी ने ल्लीना
वार धारमांथी निरंतर अशुचि वह्या करे रे, एवुं
चिन्तवदुं ते.

४७ आश्रव ज्ञावना—मिथ्यात्वादिके करीने क-
र्मनुं आवदुं थाय रे, तेथी आत्मा मतिन थाय रे;
दया दानादिके शुभ कर्म वंधाय रे, विषय कषाया
दिके अशुन्न कर्म वंधाय रे, एवुं चिन्तवदुं ते.

४८ संवर ज्ञावना—समिति गुस्ति आदि पाळ-
वाष्ठी आश्रवनो रोध थाय रे, एवुं चिन्तवदुं ते.

४९ निर्जरा ज्ञावना—वार प्रकारना तपवडे
कर्मनो क्षय थाय रे, एवुं चिन्तवदुं ते.

५० लोक स्वज्ञाव ज्ञावना—केरु उपर हाथ
मुकी पग पहोळा करो उज्जा रहेल पुरुषना आकारे
धर्मस्तिकायादि षसु ऊव्यात्मक चौद राजलोक उ-

त्यक्ति स्थिति अने लयना स्वज्ञाववालु रे इत्यादि
स्वरूप विचारबु ते

५३ वोधि छुर्खेज्ज ज्ञावना-आ अनादि ससार
विषे नरकादिक गतिमां ब्रह्मण करता अकास निर्जरा
वर्के पुन्यना उदयथी मनुष्य जन्म, आर्य देश, उ-
त्तम कुल, निरोगीकाया, धर्म श्रवणनी सामग्री इत्यादि
पामी शकाय रे परंतु अनतानुपूर्धी कपाय अने मि-
श्यात्र मोहनीयना उदयथी अन्निज्ञूत जीपने स
स्यक् दर्गन पामबु अति छुर्खेज्ज रे, एबु चिन्तत्रबु ते.

५४ धर्मज्ञावना छुस्तर संसार समुद्भवाथी
तारवाने वहाण समान थ्री वीतराग प्रणीत शुद्धधर्म
पामबो अति छुर्खेज्ज रे तथा धर्मना साधक अरिहं-
ताडिनो पण योग पामबो अति छुर्खेज्ज रे एबु चि-
तवं ते.

५५ सामायिक चारित्र-सम रागद्वेष रहित
पण आय. लाज्ज जेमा रागद्वेषना रहितपणानो लाज्ज
याय ढे, तेने सामायिक चारित्र कहे ढे ते वे प्रकारे
रे, देशविरति अने सर्व विरति, सावद्य योगनी केट-

(२५०)

लेक अंशे विरति होय तेने देशविरति, अन सर्व प्रकारे विरति होय तेने सर्व विरति कहे रे.

५४ रेदोपस्थापनीय--पूर्वना सदोष के निर्दोष पर्यायने रेदोगणाधिपे आपेक्षुं पंचमहाव्रतरूप चारित्रते.

५५ परिहार^१ विशुद्धि-तप विशेषे करीने शुद्धि करवी ते.

५६ सूद्धम संपराय-ज्यां सूद्धम कषायनो उदय होय रे ते चारित्रने तथा दसमां गुणवाणाने सूद्धम संपराय कहे रे.

५७ यथास्यात-ज्यां सर्वथा कषायना उदयनो अन्नाव होय ते. औपशमिकने अग्न्यारमे गुणवाणे,

१ नव जनानो गच्छ निकले तेमांथी चार जण तपस्या करे अने चार जण वैआवच्च करे ने एकने आचार्य स्थापे ए प्रकारे छ मास सुधी तपस्या करे, पछीथी वैआवच्च करनार चार जण तपस्या करे ने तपस्या करनार वैआवच्च करे ते पण पूर्वोक्त छ मास सुधी, पछीथी आचार्य छ मास सुधी तपस्या करे सात जण वैआवच्च करे ने एकने आचार्य स्थापे. ए प्रकारे अढार मास सुधी तपस्या करे तेने परिहार विशुद्धि चारित्र जाणबुं.

(३५१)

क्षायिक रद्दस्थने वारमे गुणवाणे ने केवलीने तेरमे
चौदमे गुणवाणे यथाख्यात चारित्र होय ठे.

—+—+—+—+—

निर्जरा तत्त्व

ठ प्रकारना वाह्यने ठ प्रकारना अच्यतर तप
वके निर्जरा आय ठे.

ठ प्रकारना वाह्य तप.

१ अनशन तप—योमा कालने भाटे अथवा
यावज्जीव सुधी आहारदिकनो त्याग करवो ते

२ उणोदरिका तप—पांच सात कोलोआ उणुं
रहेबु ते

३ वृत्ति सक्षेप—इष्टानो सक्षेप करवो ते अन्नि-
ग्रह करवो, नियम धारवा ते

४ रस त्याग—विगय आदिनो त्याग करवो ते

५ काय क्लेश- लोच, काजसग्ग आदिए का-
याने कट आपबुं ते

६ संलिनता—अगोपांग सवरी राखवा, एक
आसने वेसबु ते, अथवा विपयादिने उदीरवां नहि ते.

ठ प्रकारे अन्यंतर तप.

१ प्रायश्चित्-करेला अपराधनी शुद्धिमाटे उसए
करवा कहेखुं तप प्रमुख करवुं ते.

२ विनय तप-ज्ञानी अने ज्ञानादिकलो विनय
करवो ते.

३ वैयाकृत्य तप-आचार्यादिकनुवेशावच करवुं ते.

४ स्वाध्याय तप-वाचना^१ पृष्ठना^२ परावर्तना^३
अनुप्रेक्षा^४ अने धर्मकथा^५ ए पांच प्रकारे जाणवो.

५ ध्यान-धर्मध्यान अने शुद्धध्यान ध्याववां ते,

६ कायोत्सर्ग-कर्मना हय निसित्ते काउस्सग
करवो ते,

बंध तत्व,

बंध तत्व चार प्रकारे रे.

१ प्रकृति बंध-कर्मनो स्वज्ञाव ते.

२ स्थिति बंध-कर्मने रहेवाना काळनुं परिमाण ते.

३ अनुज्ञाग बंध-कर्मना अणुदंमां रहेलो जे

१ भणवुं, २ संदेह दूर करवो, ३ भणेलुं संभारवुं ४ अर्थ

-चित्तवन करवुं, ५ धर्मोपदेश करवो.

तीव्र, तीव्रतर, मंड, मट्टतर, आदि रस ते
४ प्रदेश वध—कर्मना दलीयानुं परिमाण ते
मोक्ष तत्त्व

१ सत्पद प्रस्तुपणा छार०—मोक्षपद वलु ठे, वि-
यमान ठे, एवी प्रस्तुपणा करवी ते.

२ इव्य^१ प्रमाणछार—सिद्धना जीव इव्य के-
दला ठे एम विचारखु ते.

३ देव्राधार^२—सिद्धना जीव केटला द्वेषमा
रहेख ठे एम विचारखु ते.

४ स्पर्शना छार—सिद्धना जीवो केटला आ-
काश प्रदेशने स्पर्शी रहेखा ठे एवु विचारखु ते

५ कालछार^३—सिद्धना जीवोनी म्यनि केटला
काल सुधीनी ठे एम विचारखु ते

० मोक्षपद एव प्रस्तुपणा माटे छलु ठे,

१ मिठुनां जीव इव्य भनाए, २ मिठुना जीरो अमरायाना
आयाना हेशने आरार्द्धने रहेला छे, लोरमां असायानमा भागना
सेत्रने एव मिठु तेमन रार्द मिठु अरगार्दी रहेला छे ३ ऐस फरना
मार्क्कना अपिक्क ठे ४ एव मिठु आधर्यी गानि भनन, गर्द मिठु
आधर्यी भनाउ भनन छे

(४५४)

६ अंतरद्वार^१—सिद्धना जीवोने परस्पर केटलुं
अंतर ठे एम विचारवुं ते.

७ नागद्वार^२—सिद्धना जीवो संसारी जीवोना
केटलामे नागे ठे एम विचारवुं ते.

८ नावद्वार^३—सिद्धना जीवो पांच नावमांथी
कये नावे रहेला ठे एम विचारवुं ते.

९ अद्वय बहुत्वद्वार^४—पंदर ज्ञेदे सिद्धथयेल-
मांथीकोणवधारे अने कोण उंठा ठे एम विचारवुं ते.

सिद्ध जीवोना पंदर ज्ञेद.

१ जिनसिद्ध—तीर्थकर अइने मोक्षगयेला ते.

२ अजिनसिद्ध—सामान्य केवळी अइने मोक्ष
गया ते.

३ तीर्थसिद्ध—चतुर्विंध संघ रूप तीर्थ प्रवत्त्या
पडी जे मोक्ष गया ते गणधर प्रमुख.

१ सिद्धना जीवोने परस्पर अंतर नथी. २ सिद्धना जीवो
संसारी जीवोने अनंतमे भागे छे. ३ क्षायिक अने पारिणामिक ए वे
भावे रहेला छे. ४ सर्व करतां थोडां नयुंसक लिंगे सिद्ध जाणवा,
ते करतां खि अने पुरुष लिंगे अलुक्कमे संख्यातगजः जाणवा.

(२५५)

२ अर्तीर्थसिद्ध—तीर्थनी स्थापना यथा विना
जे मोक्षे गया ते मरुदेवी प्रमुख

५ गृहलिंगसिद्ध—गृहस्थनावेषे जे केवल ज्ञान
पासी मोक्षे गया ते भरत चक्रवर्ति प्रमुख

६ अन्यलिंगसिद्ध-तापस प्रमुखने वेशे जे मोक्षे
जाय ते वद्वक्तव्यचिरि प्रमुख

७ स्वलिंगसिद्ध साधुनावेशे जे मोक्षे जाय ते

८ स्त्रीलिंगसिद्ध-स्त्रीलिंगे मोक्षे जाय ते चंद-
नवाला प्रमुख

९ पुरुषलिंगसिद्ध-पुरुषलिंगे मोक्षे जाय ते गौ-
तम प्रमुख

१० नपुसकलिंगसिद्ध-नपुसकलिंगे मोक्षे जाय
ते गागेन प्रमुख

११ प्रत्येक वुच्चसिद्ध-कोइ पण पद्मार्थने देखी वेध
पासीने चारित्र लड मोक्षे जाय ते करकरु प्रमुख.

१२ न्यवुच्चसिद्ध-गुरुना उपदेश विना पीतानी
मेळे वोध पासी मोक्षे गया ते कर्योऽपि प्रमुख.

१३ बुद्ध्वोधितसिद्ध-गुरुना उपदेशथावोध पासी
मोहे गया ते.

१४ एकसिद्ध-एक समये एक मोहे जाय ते.

१५ अनेकसिद्ध-एक समयमां अनेक मोहे
जाय ते.

उपर कहेला नव तत्वो जाणीने अद्वा राखे तेने
अवश्य सम्यक्त्व होय, जो अज्ञान होय तो ज्ञा-
वशी श्रधा राखे तोपण तेने सम्यक्त्व जाणबुं.

अंतर मुहूर्त कालमात्र जेने सम्यक्त्व स्फुर्त्यु
होय, तेने निश्चये करी अर्धपुज्य परावर्त संसार वाकी
जाणबो. अत्यंत आशातनावंतने षट्ळो संसार उ-
त्कृष्टशी जाणबो पण शुद्ध समकिती तो कोइ तेज
भवे, कोइ त्रीजे नवे, अने कोइ सातमे नवे पण
मोह पासे ते.

कोइ बुद्धरामच्छ्रीय हानि न हो

सा. क्र.

जयपुर

